प्रकाशक
भिक्षु संघरत्न, मंत्री,
महाबोधि सोसाइटी
सारनाथ, बनारस

प्रथम संस्करण १०००
१९४९
१॥)

मुद्रक
दुर्गादत्त त्रिपाठी
सन्मार्ग प्रेस, टाउनहाल, बनारस ।

समर्पण

पालि - भाषा - प्रेमियों

को।

निवेदन

पालि भाषा भगवान् बुद्ध के समय में उत्तर भारत की जन-भाषा थी। भगवान् ने अपने उपदेश इसी भाषा में दिये थे। भगवान् के परिनिर्वाण के पश्चात् उन उपदेशों का संग्रह—जो कि त्रिपिटक के नाम से विख्यात है—इसी भाषा में किया गया था। कालान्तर में भारत से बौद्ध-धर्म का लोप सा हो गया। लेकिन बाहर के देशों में उसका प्रचार हुआ। अभी तक सिंहल, बर्मा तथा स्याम की धार्मिक भाषा पालि ही है। धर्म तथा दर्शन के अतिरिक्त इतिहास की दृष्टि से भी पालि का बड़ा महत्व है। यही कारण है कि बौद्ध देशों के अतिरिक्त यूरोप तथा अमेरिका के विश्वविद्यालयों में भी पालि का अध्ययन बहुत दिनों से हो रहा है। लेकिन यह खेद का विषय है कि अभी तक भारत में इसका महत्व पूर्णरूप से नहीं समझा गया है। स्वतन्त्र भारत इसके महत्व को धीरे धीरे समझने लगा है। इसके फलस्वरूप कई प्रान्तों में इसकी शिक्षा आरम्भ हुई है। आशा ही नहीं, हमें पूर्ण विश्वास भी है कि पालि को अपना उचित स्थान शीघ्र ही प्राप्त होगा।

हिन्दी में पालि के अध्ययनार्थ छोटी मोटी कई पुस्तकें हैं। इनमें पूज्य भिक्षु जगदीश काश्यप एम. ए. का 'पालि महा व्याकरण—जो कि मोग्गल्लान पर आश्रित है, सर्वोत्तम है। यह विशेष रूप से विद्वानों के लिए है। प्रस्तुत पुस्तक मैंने स्कूलों के विद्यार्थियों को ध्यान में रख कर लिखी है। इसमें प्रत्येक पाठ के साथ-साथ एक-एक अभ्यास भी दिया गया है। अभ्यासों में उपयुक्त पालि शब्दों के अर्थ भी दिये गये हैं, जिसमें कि विद्यार्थियों को

शब्दकोश की सहायता न लेनी पड़े । कारक, आख्यात क्रियायें तथा धातुगण पुस्तक के अन्त में दिये गये हैं ।

इस पुस्तिका के लेखन-कार्य में 'धर्मोदय' मासिक-पत्र के सम्पादक भाई भिक्षु महानाम 'कोविद' ने प्रारम्भ से अन्त तक मेरी बड़ी सहायता की है। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के पालि के अध्यापक पूज्य भिक्षु जगदीश काश्यप एम० ए० ने प्रस्तावना लिखकर तथा सम्मतियाँ देकर मेरा बड़ा उपकार किया है। भिक्षु धर्मरत्न एम० ए० ने मुझे इस कार्य के लिए प्रोत्साहन दिया है। भिक्षु धर्मरक्षित 'त्रिपिटकाचार्य' ने प्रूफ देखने और भाषा सम्बन्धी सुधार करने में सहायता दी हैं। मैं इन सभी सब्रह्मचारियों का कृतज्ञ हूँ !

सारनाथ, बनारस — सद्धातिस्स

१५-१२-४८

विषय-सूची

पाठ	विषय		पृष्ठ
१.	संख्या—अकारान्त पुल्लिङ्ग 'पुरिस' शब्द	...	२
२.	क्रिया—अकर्मक 'भू' धातु-वर्तमान काल	...	४
३.	अकारान्त—नपुंसक लिङ्ग 'कुल' शब्द	...	६
४.	आकारान्त—स्त्रीलिङ्ग 'लता' शब्द	...	९
५.	सर्वनाम—'अम्ह' शब्द, 'तुम्ह' शब्द	...	११
६.	इकारान्त—पुल्लिङ्ग 'मुनि' शब्द	...	१३
७.	इकारान्त—नपुंसक लिङ्ग 'अट्ठि' शब्द	...	१६
८.	इकारान्त—स्त्रीलिङ्ग 'रत्ति' शब्द, कुछ आवश्यक धातु		१८
९.	पूर्वकालिक क्रिया—कुछ आवश्यक शब्द	...	२१
१०	उकारान्त—पुलिङ्ग 'भिक्खु' शब्द, क्रिया-अनागत काल 'भू' धातु	...	२५
११.	उकारान्त—नपुंसक लिङ्ग 'आयु' शब्द, अव्यय-निपात	...	२९
१२.	उकारान्त—स्त्रीलिङ्ग 'धेनु' शब्द, 'भातु' शब्द, परिवार-सम्बन्ध वाचक शब्द, शरीरावयव वाचक शब्द	...	३२
१३.	उकारान्त—पुलिङ्ग 'पितु' शब्द, 'सत्थु' शब्द	...	३५
१४.	कुछ अन्य विशेष शब्द 'राज' शब्द, ओकारान्त पुलिङ्ग 'गो' शब्द	...	३९
१५.	कुछ आवश्यक द्रष्टव्य शब्द,	...	४१
१६.	सर्वनाम—'त' शब्द, निष्ठा (=कृदन्त)	...	४५
१७.	सर्वनाम—'य' शब्द, कृदन्त के कुछ और उदाहरण, कुछ अकारान्त पुलिङ्ग शब्द	...	४९
१८.	सर्वनाम—'इम' शब्द, कुछ धातु के द्रष्टव्य रूप, कुछ अन्य शब्द	...	५३

१९. 'वन्तु' और 'मन्तु' प्रत्ययान्त शब्द, 'न्त' प्रत्ययान्त शब्द, कुछ अन्य शब्द ... ५६
२०. सर्वनाम—'सब्ब' शब्द, 'क' शब्द ... ६४
२१. ईकारान्त पुलिंग 'दण्डी' शब्द ... ६८
२२. ईकारान्त स्त्रीलिंग 'इत्थी' शब्द, कुछ और पूर्वकालिक क्रिया ... ७०
२३. ऊकारान्त पुलिंग 'सब्बञ्ञू' शब्द ... ७३
२४. ऊकारान्त स्त्रीलिंग 'वधू' शब्द, स्थान वाचक निपात ... ७५
२५. अकारान्त नपुंसक लिंग 'मन' शब्द, 'तुं' प्रत्ययान्त शब्द ... ७८
२६. क्रिया—सप्तमी विभक्ति ... ८१
२७. सन्धि—(१) स्वर सन्धि, (१) व्यंजन सन्धि, (३) निग्गहीत सन्धि ... ८३
२८. संख्यावाचक शब्द—'एक', 'द्वि', 'ति,' 'चतु' 'पंच', 'एकूनवीसति" 'कति', शब्द ... ९०
२९. पूर्णार्थक शब्द ... ९८
३०. उपसर्ग, आत्मनेपद क्रिया, क्रिया के रूपों की तालिका, कुछ द्रष्टव्य शब्द, कुछ क्रिया पद ... १००
३१. गण-विचार, आठ गण ... १०६
३२. कर्मकारक क्रिया ... १११
३३. कर्मकारक कृदन्त ... ११४
३४. पञ्चमी विभक्ति के अर्थ में 'तो' प्रत्यय ... ११५
३५. प्रेरणार्थक क्रिया ... ११७
३६. समास-कर्मधारय, तत्पुरुष, द्वन्द्व, बहुब्रीहि, द्विगु, अव्ययीभाव ... ११८
३७. कुछ द्रष्टव्य संख्या और क्रिया ... १२८
३८. बिभक्तियों के भेद

आमुख

भाई सद्धातिस्स को लङ्का से आये केवल तीन-चार साल हुए। इतने ही में आपने हिन्दी सीख ली और प्रस्तुत पालि-व्याकरण जैसी उपादेय पुस्तक लिख ली, यह बड़ी बात है। इस सफलता के लिए हम उन्हें हिन्दी-पाठकों की ओर से हार्दिक बधाई देते हैं।

अब पालि की पढ़ाई की ओर लोगों की रुचि बढ़ती जा रही है और इसकी बड़ी आवश्यकता थी कि इस पुस्तक जैसी एक छोटी सुगम और सुलभ पुस्तक लिखी जाय। संयुक्तप्रान्त और बिहार की मैट्रिकुलेशन परीक्षा के लिए यह बड़ी सुन्दर पाठ्य पुस्तक हो सकती है। प्रत्येक पाठ के अन्त में जो अभ्यास दे दिए हैं वे अत्यन्त उपयोगी हैं।

आज से ढ़ाई हज़ार वर्ष पूर्व हमारे देश की राष्ट्रभाषा पालि ही थी, ठीक वैसे ही जैसे आज हिन्दी। बोलचाल की जीवित भाषा होने के कारण पालि में व्याकरण की वह जकड़ नहीं है जो संस्कृत में है। हिन्दी, अँग्रेजी आदि अन्य बोलचाल की भाषाओं के व्याकरण की तरह पालि का व्याकरण भी भाषा के संस्थान का सामान्य परिचय भर ही देता है। व्याकरण चाहे कोई कितना भी घोंट क्यों न ले वह उसके सहारे ही यदि पालि भाषा पर अधिकार प्राप्त करना चाहे तो यह सम्भव नहीं। पालि नये सीखने वाले के लिए व्याकरण अच्छा सहायक अवश्य है, किन्तु उसके बाद उसका पुछल्ला पकड़े रहने की आवश्यकता नहीं होगी। वह मजे में पालि ग्रन्थों को सरलता से समझने लगेगा, और अभ्यास से, उसकी शैली को अपना लेगा। हम लोगों के लिए पालि सीखना अत्यन्त आसान है। क्योंकि यह हिन्दी भाषा के ही २५०० वर्ष पूर्व का रूप है। थोड़े ही मनोयोग से कोई पालि सीख सकता है और भारतीय संस्कृति के एक विशाल विस्मृत साहित्य का अवलोकन कर अपने अतीत इतिहास को समझ सकता है। पालि साहित्य

पढ़ने में हमारे सामने सबसे जो बड़ी कठिनाई आती है वह है लिपि की। अभी तक किसी भारतीय लिपि में पालि साहित्य का सर्वांगीण संस्करण प्रकाशित नहीं हुआ है। पालि के ग्रन्थ सिंहल, बर्मी, स्यामी तथा रोमन अक्षरों में छपे मिलते हैं। नागरी अक्षरों में थोड़े ही ग्रन्थ छपे हैं। किन्तु इतने से निराश होने की कोई आवश्यकता नहीं। यह कोई बड़ी कठिनाई नहीं है। तनिक धैर्य से काम लेने से यह हल हो जायगी। पालि में केवल इकतालीस अक्षर हैं—अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ओ, क, ख, ग, घ, ङ, च, छ, ज, झ, ञ, ट, ठ, ड, ढ़, ण, त, थ, द, ध, न, प, फ, ब, भ, म, य, र, ल, व, स, ह, ळ, अं। किसी भी लिपि के इन इकतालीस अक्षरों के रूप सीख लेने में एक सप्ताह से अधिक समय नहीं लगता है और थोड़े अभ्यास से ही उसके पढ़ने में गति और पटुता आ जाती है।

मैंने श्रीभिक्षु संघरत्नजी, मन्त्री, महाबोधि सभा, सारनाथ से निवेदन किया है कि वे सिंहली, बर्मी तथा सभी लिपियों के अभ्यास के लिए एक पुस्तिका छपायें जो पालि के विद्यार्थियों के उपयोग की हो।

भारतीय संस्कृति तथा इतिहास के विद्यार्थी को पालि-भाषा सीखना अत्यन्त आवश्यक है। पालि-भाषा के ज्ञान के बिना देश के पुराने शिला-लेखों के पढ़ने और समझने में बड़ी गलती हो सकती है। बुद्धकालीन भारत को समझने के लिए पालि का विशाल साहित्य सर्वप्रामाणिक साधन है। भारतीय भाषा-शास्त्र के विद्यार्थी के लिए भी पालि का ज्ञान अनिवार्य है। भारतीय भाषा के विकास में पालि का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण स्तर है।

यह समझना भारी भूल है कि पालि भाषा संस्कृत भाषा का अपभ्रंश है। हां, यदि संस्कृत भाषा से उस भाषा को भी समझें जो वैदिक काल में बोली जाती थी, तो अलबत्ता कहा जा सकता है कि पालि भाषा उस भाषा के बाद की भाषा है। वही भाषा अनेक

प्राकृत-भाषाओं के रूप ग्रहण करती हुई आज हिंदी भाषा के रूप में जीवित है। किंतु, यह ख्याल रखना होगा कि वैदिक भाषा उस संस्कृत भाषा से भिन्न है जिसमें रामायण-महाभारत तथा बाद के काव्य लिखे गए हैं। वैदिक भाषा जीवित भाषा थी, उसने व्याकरण की बेड़ी नहीं पहनी थी। यही कारण है कि वेदों में एक ही अर्थ प्रगट करने के लिए अनेक प्रत्ययों के प्रयोग मिलते हैं। जब व्याकरण-बद्ध संस्कृत भाषा रची गई तब उनके रूप एक-दो ही में सीमित कर शेष को रद्द कर दिया गया। यह ध्यान देने लायक बात है कि पालि-भाषा में वैदिक भाषा के अनेक रूपों का प्रयोग मिलता है जो व्याकरणबद्ध संस्कृत भाषा में लुप्त हो गए। देश में जो भाषा की धारा चली आ रही थी उसमें वैदिक भाषा के बाद ही अवस्था पालि भाषा थी।

पालि भाषा उस समय देश की जन-भाषा थी। बुद्ध ने इसी भाषा में अपने सारे उपदेश दिए, क्योंकि वे चाहते थे कि उनके धर्म का प्रचार जनसाधारण में हो। बुद्ध के परिनिर्वाण के बाद उनके उपदेश उन्हीं के शब्दों में संगृहीत कर लिए गए। इसी संग्रह को पालि-त्रिपिटक कहते हैं पालि-त्रिपिटक के ग्रन्थों का विस्तार निम्न प्रकार है—

त्रिपिटक

(१) **विनय पिटक**—१. महावग्ग, २. चुल्लवग्ग, ३. पाचित्तिय, ४. पाराजिका, ५. परिवार।

(२) **सूत्र पिटक**—१. दीघनिकाय, २. मज्झिमनिकाय, ३. संयुत्त-निकाय, ४. अगुत्तरनिकाय और ५. खुद्दकनिकाय। खुद्दकनिकाय में १५ ग्रन्थ हैं—खुद्दकपाठ, धम्मपद, उदान, इतिवुत्तक, सुत्त-निपात, विमानवत्थु, पेतवत्थु, थेरगाथा, थेरीगाथा, जातक, निद्देस, पटिसम्भिदामग्ग, अपदान, बुद्धवंस, चरियापिटक।

(३) अभिधम्म पिटक—१. धम्मसंगिणि, २. विभंग, ३. धातुकथा, ४. पुग्गलपञ्ञत्ति, ५. यमक, ६. पट्ठान, ७. कथावत्थु।

इन ग्रन्थों पर अनेकानेक भाषा और टीकायें लिखी गईं। पालि-साहित्य का बड़ा विकास हुआ। व्याकरण, कोश, इतिहास आदि के भी ग्रन्थ लिखे गए। यह विशाल साहित्य भारतीय संस्कृति की अमूल्य निधि है।

यूरोप-अमेरिका के भी उन विश्वविद्यालयों में जिनमें भारतीय-विद्या का अध्ययन होता है, पालि की पढ़ाई का पूरा प्रबन्ध है। लन्दन के पालि-टेक्स्ट-सोसाइटी ने पालि-पाण्डित्य का उत्कर्ष प्रकट कर विद्वत्समाज को एक नये क्षेत्र का प्रदर्शन किया। यह कौन नहीं जानता कि रायस डेविडस की खोजों ने भारतीय इतिहास पर कितना प्रकाश डाला।

भारतवर्ष में कलकत्ता तथा बम्बई के विश्वविद्यालयों ने पालि के अध्ययन को अच्छा प्रोत्साहित किया। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में भी पालिभाषा की पढ़ाई की बड़ी व्यवस्था की गई है। किंतु अब धीरे धीरे लोग पालि के महत्व को समझने लग गए हैं और आशा की जाती है कि शीघ्र ही दूसरे विश्वविद्यालय भी अपनी संस्कृति के इस विस्मृत पाण्डित्य को पुनर्जीवित करेंगे।

बिहार और संयुक्त प्रान्त में मैट्रिकुलेशन के पाठ्यक्रम में पालि को स्थान मिल जाने के बाद पूरी आशा है कि धीरे-धीरे स्कूलों में पालि पढ़नेवाले विद्यार्थियों की संख्या अधिक होती जायगी, और भाई सद्धातिस्सजी की इस किताब की मांग होगी। मैं इस उपयोगी पुस्तक की हृदय से सफलता चाहता हूँ।

बुद्धकुटी,
हिन्दू विश्वविद्यालय,
६. ५, ४६,

भिक्षु जगदीश काश्यप

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स

सरल-पालि-शिक्षा

वर्ण-विचार

पालि-भाषा में इकतालीस वर्ण होते हैं। कुछ आचार्य उनकी संख्या तैंतालीस भी बताते हैं। वह "ए—ओ" दोनों के ह्रस्व—दीर्घ भेद के विचार से होता है।* परन्तु, इकतालीस की वर्णमाला ही बहुधा मानी गई है। इनमें से आठ स्वर हैं और ३३ व्यञ्जन।

स्वर—अ आ इ ई उ ऊ ए ओ

व्यञ्जन—	क ख ग घ ङ	'क' वर्ग
	च छ ज झ ञ	'च' वर्ग
	ट ठ ड ढ ण	'ट' वर्ग
	त थ द ध न	'त' वर्ग
	प फ ब भ म	'प' वर्ग
	य र ल व स ह ळ अं	

'अं' (अनुस्वार) को निग्गहीत कहते हैं।

---

* संयुक्त अक्षरों के पूर्व प्रयुक्त 'ए' तथा 'ओ' ह्रस्व होते हैं। जैसे—एत्थ, सेय्यो, ओट्ठो, सोत्थि।

पाठ—१

संज्ञा

अकारान्त पुल्लिङ्ग

'पुरिस' शब्द

	एकवचन	बहुवचन
१.	पठमा—पुरिसो	पुरिसा
२.	दुतिया—पुरिसं	पुरिसे
३.	ततिया—पुरिसेन	पुरिसेभि पुरिसेहि
४.	चतुत्थी—पुरिसाय, पुरिसस्स	पुरिसानं
५.	पञ्चमी—पुरिसा, पुरिसम्हा, पुरिसस्मा	पुरिसेभि, पुरिसेहि
६.	छट्ठी—पुरिसस्स	पुरिसानं
७.	सत्तमी—पुरिसे, पुरिसम्हि, पुरिसस्मिं	पुरिसेसु
८.	आलपन—(हे) पुरिस, पुरिसा	(हे) पुरिसा

उपर्युक्त पदों के अर्थ निम्न प्रकार हैं—

	एकवचन	बहुवचन
१.	प्रथमा—पुरुष ने	पुरुषों ने
२.	द्वितीया—पुरुष को	पुरुषों को
३.	तृतीया—पुरुष से	पुरुषों से
४.	चतुर्थी—पुरुष के लिए	पुरुषों के लिए
५.	पंचमी—पुरुष से	पुरुषों से
६.	षष्ठी—पुरुष का, के, की	पुरुषों का, के, की
७.	सप्तमी—पुरुष में, पै, पर	पुरुषों में, पै, पर
८.	सम्बोधन—हे पुरुष	हे पुरुषो

अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द जिनके रूप 'पुरुष' शब्द के समान होंगे –

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
बुद्ध	भगवान् बुद्ध	सुरिय	सूरज
नर	मनुष्य	अज	बकरा
देव	देव	भूपाल	राजा
याचक	भिखारी	मिग	मृग (हिरण)
सीह	सिंह	उरग	साँप
पुत्त	पुत्र	मनुस्स	आदमी
दास	दास	दारक	लड़का
अस्स	घोड़ा	कस्सक	किसान
सुनख	कुत्ता	गद्रभ	गधा
वाणिज	बनिया	भमर	भौंरा
कुमार	कुमार	धम्म	धर्म

१. अभ्यास

(क) हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

१. पुरिमस्स अस्सो। २. मनुस्सानं दासा। ३. बुद्धस्स धम्मो। ४. भूपालेसु कुमारा। ५. कस्सकानं पुत्ता। ६. सीहस्मा मिगो। ७. वाणिजेसु दारका। ८. भूपालस्स पुरिसा। ९. याचकस्स गद्रभो। १०. देवानं दासा।

(ख) पालि में अनुवाद कीजिए—

१. दास का घोड़ा। २. साँप से मनुष्य। ३. कुमारों पर राजा। ४. बनियों के लड़के। ५. किसान का बकरा। ६. आदमी से कुत्ता। ७. बुद्ध के धर्म में ८. हिरण का बच्चा ९. पुरुष का दास। १०. भिखारियों पर आदमी।

पाठ २

क्रिया

अकर्मक 'भू' धातु

वर्तमान काल

	एकवचन	बहुवचन
१. पठम पुरिस—	(सो) **भवति**	(ते) **भवन्ति**
२. मज्झिम पुरिस—	(त्वं) **भवसि**	(तुम्हे) **भवथ**
३. उत्तम पुरिस—	(अहं) **भवामि**	(मयं) **भवाम**

इन पदों के अर्थ निम्न प्रकार होंगे—

	एकवचन	बहुवचन
१. प्रथम पुरुष –	(वह) होता है	(वे) होते हैं
२. मध्यम पुरुष—	(तू) होता है	(तुम) होते हो
३. उत्तम पुरुष –	(मैं) होता हूँ	(हम) होते हैं

इन धातुओं के रूप भी ऊपर के समान ही होंगे—

धातु	प्रथम पुरुष एकवचनमें	अर्थ
कील	कीलति	खेलता है
खी	खीयति	क्षीण होता है
खुभ	खोभति	व्याकुल होता है
जागर	जागरति	जागता है
जीव	जीवति	जीता है
ठा	तिट्ठति	खड़ा होता है
दीप	दिप्पति	चमकता है
मर	मरति	मरता है
लज्ज	लज्जति	लज्जित होता है
वड्ढ	वड्ढति	बढ़ता है
सि	सयति	सोता है

२—अभ्यास

(क) हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

१. उरगो मरति । २. कस्सको जीवति । ३. गद्रभो कीलति । ४. दासा लज्जन्ति । ५. रुक्खो वड्ढति । ६. सुरियो दिप्पति । ७. कुमारा कीलन्ति । ८. मिगा जीवन्ति । ९. मनुस्सो जागरति । १०. सीहो सयति । ११. आलोको खीयति । १२. याचको तिट्ठति । १३. मिगा कीलन्ति । १४. नगा लज्जन्ति । १५. सुनखा जीवन्ति । १६. भूपाला जागरन्ति । १७. पुत्ता सयन्ति ।

(ख) पालि में अनुवाद कीजिए—

१. बैल मरता है । २. देव जीता है । ३. मृग बढ़ते हैं । ४. किसान जागते हैं । ५. आदमी लज्जित होता है । ६. मृग खेलते हैं । ७. दास सोते हैं । ८. बकरे मरते हैं । ९. देव हैं । १०. दास बढ़ता है । ११. किसान सोता है । १२. सिंह घबराता है । १३. पुत्र खेलता है । १४. भिखारी सोता है । १५. सूरज चमकता है ।

———

पाठ—३

अकारान्त नपुंसकलिङ्ग

'कुल' शब्द

	एकवचन	बहुवचन
१.	पठमा—कुलं	कुला, कुलानि
२.	दुतिया— कुलं	कुले, कुलानि

शेष रूप 'पुरिस' शब्द के समान होंगे—

कुछ अकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द जिनके रूप 'कुल' शब्द के रूप के समान होंगे—

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
गेह	घर	पुञ्ञ	पुण्य
घाण	नाक	फल	फल
चित्त	मन	मुख	मुँह
जल	पानी	मूल	जड़
छत्त	छाता	दान	दान
वत्थ	कपड़ा	दुक्ख	दुःख
पोत्थक	पुस्तक	पुप्फ	फूल
धन	धन	रूप	रूप, आकार
पाप	पाप	उय्यान	बाग
लोचन	आँख	सोत	कान
सील	उत्तम आचरण	सरीर	बदन
सुख	सुख	नगर	नगर

इन धातुओं के रूप भी ऊपर के रूप के समान ही होंगे—

धातु	प्रथमपुरुष एकवचन में	अर्थ
कम्प	कम्पति	काँपता है
कन्द	कन्दति	रोता है
कुप	कुप्पति	क्रुद्ध होता है
गज्ज	गज्जति	गर्जता है
घुस	घोसति	हल्ला करता है
चल	चलति	चंचल होता है
जर	जीरति	पुराना होता है
जल	जलति	जलता है
तुस	तुस्सति	खुश होता है
दुस	दुस्सति	द्वेष करता है
नट	नटति	नाचता है

३—अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

१. उरगो कुप्पति। २. चित्तं चलति। ३. कस्सका नटन्ति ४. गद्रभा गच्छन्ति। ५. जलं घोसति। ६. सप्पो दुस्सति। ७. पुप्फं कम्पति। ८. दासो कन्दति। ९. दुक्खं भवति। १०. मिगो तिट्ठति। ११. धनं वड्ढति। १२. नरा घोसन्ति। १३. वत्थानि जीरन्ति। १४. सीहो दुस्सति। १५. पापं खीयति। १६. कुमारा तुस्सन्ति। १७. मुखं दिप्पति। १८. पुप्फानि कम्पन्ति। १९. फलानि वड्ढन्ति। २०. गेहानि जलन्ति। २१. मूलं जीरति। २२. रूपानि चलन्ति २३. लोचनं नटति। २४. पुत्ता कन्दन्ति। २५. सुखं भवति।

(ख) पालि में अनुवाद कीजिए—

१. सिंह क्रुद्ध होता है। २. पाप बढ़ता है। ३. फल हिलता है। ४. गदहा हल्ला करता है। ५. जल चंचल होता है। ६. आदमी खुश होते हैं। ७. आँख चमकती है। ८. दुःख क्षीण होता है। ९. फूल काँपता है। १०. भिखारी रोता है। ११. धन बढ़ता है। १२. पाप क्षीण होता है। १३. किसान खुश होते हैं। १४. फल हैं। १५. जड़ जलता है। १६. उत्तमाचरण बढ़ता है।

(ग) ऊपर के एकवचनान्त वाक्यों के बहुवचनान्त और बहुवचनान्त वाक्यों के एकवचनान्त रूप लिखिए।

———

पाठ - ४

आकारान्त स्त्रीलिङ्ग

'लता' शब्द

	एकवचन	बहुवचन
१. पठमा—	लता	लता, लतायो
२. दुतिया—	लतं	लता, लतायो
३. ततिया—	लताय	लताभि, लताहि
४. चतुत्थी—	लताय	लतानं
५. पंचमी—	लताय	लताभि, लताहि
६. छट्ठी—	लताय	लतानं
७. सत्तमी—	लतायं, लताय	लतासु
८. आलपन—	(हे) लते	(हे)लता, लतायो

कुछ आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द जिनके रूप 'लता' शब्द के रूप के समान होंगे –

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
साला	शाला (घर)	गीवा	गला
भरिया	पत्नी	छाया	छाया
साखा	शाखा	जिव्हा	जीभ
माला	माला	तण्हा	तृष्णा
तारका	तारा	वालुका	बालू
देवता	देवता	विज्जा	विद्या
नावा	नाव	वीणा	वीणा
कञ्ञा	कन्या	सद्धा	श्रद्धा
पञ्ञा	प्रज्ञा	कङ्खा	शक
माया	माया	सुरा	शराब
मेत्ता	मैत्री	सेना	सेना
वनिता	स्त्री	दिसा	दिशा
भिक्खा	भिक्षा		

इन धातुओं के रूप भी ऊपर के ही समान होंगे—

धातु	प्रथम पुरुष एक वचन में	अर्थ
पत	पतति	गिरता है
पुप्फ	पुप्फति	खिलता है
रुच	रोचति	रुचता है
रुज	रुजति	दर्द करता है
रुदि	रोदति	रोता है
लबि	लम्बति	लटकता है
वस	वसति	रहता है
विद	विज्जति	विद्यमान है
वतु	वत्तति	मौजूद है
रम	रमति	रमता है

४—अभ्यास

(क) हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

१. सेनायो मरन्ति। २. माला विज्जन्ति। ३. छायायो वड्ढन्ति। ४. जिव्हा रुजति। ५. तण्हायो वत्तन्ति। ६. देवता वसति। ७. तारकायो दिप्पन्ति। ८. पञ्ञा खीयति। ९. वनिता रोदति। १०. मेत्ता भवति। ११. लतायो लम्बन्ति। १२. वालुका पतति। १३. सद्धा वड्ढति। १४. कङ्खा वत्तति। १५. साला कम्पति। १६. सेना जागरति। १७. पुप्फानि पुप्फन्ति। १८. मरियायो वसन्ति। १९. विज्जा विज्जति। २०. वीणा वत्तति। २१. कञ्ञायो रोचन्ति। २२. साखायो पतन्ति।

(ख) पालि में अनुवाद कीजिए—

१. श्रद्धा है। २. सेना मरती है। ३. शाला चमकती है। ४. शक विद्यमान है। ५. बेल बढ़ती है। ६. स्त्री लज्जित होती है। ७. बेल हिलती है। ८. माया मौजूद है। ९. मैत्री क्षीण होती है। १०. प्रज्ञा बढ़तीहै। ११. नाव चंचल होती है। १२. देवता खुश होते हैं। १३. पत्नी रोती है। १४. छाया बढ़ती है। १५. गला दर्द करता है।

———

पाठ – ५

सर्वनाम

(क) 'अम्ह' शब्द (= मैं)

	एकवचन	बहुवचन
१. पठमा—	अहं	मयं, अम्हे, नो
२. दुतिया—	मं, ममं	अम्हाकं, अम्हे, नो
३. ततिया—	मया, मे	अम्हेभि, अम्हेहि, नो
४. चतुत्थी—	मम, ममं, मय्हं अम्हं, मे	अम्हाकं, अस्माकं, नो
५. पंचमी—	मया	अम्हेभि, अम्हेहि
६. छट्ठी—	मम, ममं, मय्हं अम्हं, मे	अम्हाकं, अस्माकं, नो
७. सत्तमी—	मयि	अम्हेसु

(ख) 'तुम्ह' शब्द (= तू)

	एकवचन	बहुवचन
१. पठमा—	त्वं, तुवं	तुम्हे, वो
२. दुतिया—	त्वं, तुवं, तवं, तं	तुम्हे, तुम्हाकं, वो
३. ततिया—	त्वया, तया, ते	तुम्हेभि, तुम्हेहि, वो
४. चतुत्थी—	तव, तुय्हं, तुम्हं, ते	तुम्हाकं, वो
५. पंचमी—	त्वया, तया	तुम्हेभि, तुम्हेहि, वो
६. छट्ठी—	तव, तुय्हं, तुम्हं, ते	तुम्हाकं, वो
७. सत्तमी—	त्वयि, तयि	तुम्हेसु

नोट—सर्वनाम 'अम्ह' तथा 'तुम्ह' के रूप तीनों लिङ्गों में समान होंगे।

५—अभ्यास

(क) हिन्दी में अनुवाद कीजिए —

१. त्वं छायायं कीलसि। २. तुम्हे गेहे जागरथ। ३. अहं नावायं जीवामि। ४. मयं वालुकायं तिट्ठाम। ५. त्वं नगरे वससि। ६. तुम्हे सालायं जीवथ। ७. अह पुप्फेसु सयामि। ८. मयं उय्यानेसु तुस्साम। ९. त्वं जले वससि। १०. तुम्हे दासेसु कुप्पथ। ११. अहं साखायं कन्दामि १२. मयं छायायं पताम। १३. त्वं दाने तुस्ससि १४. तुम्हे दुक्खे कुप्पथ। १५. अहं जले कीलामि। १६. मयं सेनायं वसाम। १७. त्वं वत्थे सयसि। १८. तुम्हे नावायं गज्जथ। १९. अहं पुञ्ञे तुस्सामि। २०. मयं मायायं दुस्साम।

(ख) पालि में अनुवाद कीजिए—

१. तुम शाला में नाचते हो। २. तुम लोग पानी में रहते हो। ३. मैं फूलों में रहता हूँ। ४. हम लोग नाव में सोते हैं। ५. तुम घर में रहते हो। ६. मैं छाया में सोता हूँ। ७. हम लोग शास्त्र पढ़ते हैं। ८. तुम सेना में मौजूद हो। ९. तुम लोग मुझ पर क्रुद्ध होते हो। १०. मैं जल में नाचता हूँ। ११. हम लोग पुण्य में रमते हैं। १२. तुम बेलों में लटकते हो। १३. वह पेड़ पर लटकता है। १४. हम लोग नगरों में रहते हैं।

पाठः— ६

इकारान्त पुल्लिङ्ग

'मुनि' शब्द

	एकवचन	बहुवचन
१.	पठमा – मुनि	मुनी, मुनयो
२.	दुतिया – मुनिं	मुनी, मुनयो
३.	ततिया – मुनिना	मुनीभि, मुनीहि
४.	चतुत्थी – मुनिनो, मुनिस्स	मुनीनं
५.	पंचमी – मुनिना, मुनिम्हा, मुनिस्मा	मुनीभि, मुनीहि
६.	छट्ठी – मुनिनो, मुनिस्स	मुनीनं
७.	सत्तमी – मुनिम्हि, मुनिस्मिं	मुनिसु, मुनीसु
८.	आलपन— (हे) मुनि	(हे) मुनी, मुनयो

कुछ इकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द जिसके रूप 'मुनि' शब्द के रूप के समान होंगे –

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
अरि	दुश्मन	मणि	माणिक्य
असि	तलवार	गण्ठि	गाँठ
अहि	साँप	गिरि	पहाड़
कपि	बन्दर	जलधि	समुद्र
कवि	विद्वान्	ञाति	रिस्तेदार
नरपति	राजा	रवि	सूरज
निधि	निधि	ब्याधि	रोग
पति	पति	वीहि	धान
सारथि	कोचवान	अग्गि	आग

इन सकर्मक धातुओं के रूप भी 'भू' धातु के रूप के समान होंगे—

धातु	प्रथम पुरुष एकवचन में	अर्थ
इसु	इच्छति	चाहता है
खाद्	खादति	खाता है
गमु	गच्छति	जाता है
गिल	गिलति	निगलता है
चज	चजति	छोड़ता है
छिदि्	छिन्दति	काटता है
तर	तरति	पार करता है
पा	पिबति	पीता है
भुज	भुञ्जति	भोजन करता है
मुच	मुञ्चति	छोड़ता है
रक्ख	रक्खति	रक्षा करता है
लभ	लभति	पाता है
लिख	लिखति	लिखता है
वप	वपति	बोता है
विद्	विन्दति	भोगता है
सिच	सिञ्चति	सींचता है
हिंस	हिंसति	हिंसा करता है

६—अभ्यास

(क) हिन्दी में अनुवाद कीजिए –

१. अरयो धनानि इच्छन्ति। २. अरि गीवं छिन्दति। ३. अहि गेहं गच्छति। ४. कपयो फलानि खादन्ति। ५. कवि धनं चजति। ६. दासो गरिठं मुञ्चति। ७. गिरयो जलानि लभन्ति। ८. नावा

जलविं तरति । ९. जातयो वीहयो वपन्ति । १०. नरो मणिं इच्छति । ११. नरपतयो धनानि चजन्ति । १२. अहि निधिं रक्खति । १३. पति जलं पिवति । १४. याचको दुक्खं विन्दति । १५. मणि छायायं दिप्पति । १६. मुनयो सीलानि रक्खन्ति । १७. व्याधि सरीरं हिंसति । १८. सारथि गिरिं गच्छति । १९. कस्सको जलं सिञ्चति । २०. कवि पोत्थकं लिखति ।

(ख) पालि में अनुवाद कीजिए—

१. कोचवान घोड़ा चाहता है । २. किसान धान काटते हैं । ३. रोग दासों को सताता है ४. आदमी नगर की रक्षा करता है । ५. मुनि दान पाते हैं । ६. साँप माणिक्य की रक्षा करता है । ७. पति पत्नी पर क्रुद्ध होता है । ८. दुश्मन तलवार चाहते हैं । ९. राजा घर की रक्षा करता है । १०. किसान धान पाते हैं । ११. आदमी साँपों की हिंसा करते हैं । १२. दुश्मन तलवार की रक्षा करता है । १३. विद्वान् सुख भोगता है । १४. बन्दर फल खाते हैं । १५. मैं बालू पर सोता हूँ । १६. दास तलवार से गला काटता है ।

———

पाठ—७

इकारान्त नपुंसक लिङ्ग

'अट्ठि' शब्द (=हड्डी)

	एकवचन	बहुवचन
१. पठमा—	अट्ठि	अट्ठी, अट्ठीनि
२. दुतिया—	अट्ठिं	अट्ठी, अट्ठीनि

शेष रूप मुनि शब्द के समान होंगे—

इकारान्त नपुंसक लिङ्ग शब्द जिनके रूप 'अट्ठि' शब्द के रूप के समान होंगे—

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
अक्खि	आँख	वारि	पानी
अच्चि	लपट	सप्पि	घी
दधि	दही	सत्थि	जाँघ

इन सकर्मक धातुओं के रूप भी 'भू' धातु के समान होंगे—

धातु	प्रथम पुरुष एकवचन में	अर्थ
इस	एसति	खोजता है
कति	कन्तति	काटता है
खनु	खननि	खनता है
गरह	गरहति	निन्दा करता है
गुप	गोपति	रक्षा करता है
चुम्ब	चुम्बति	चूमता है
तच्छ	तच्छति	छीलता है
दंस	डसति	डँसता है
पच	पचति	पकाता है

दिस	पस्सति	देखता है
नम	नमति	नमस्कार करताहै
बुध	बुज्झति	समझता है
मन	मञ्ञति	समझता है
सिवु	सिब्बति	सिलाई करता है

७—अभ्यास

(क) हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

१. नरो अक्खिना रूपं पस्सति। २. दासो सालायं सप्पिं गोपति। ३. नरपतयो दधीनि भुञ्जन्ति। ४. मिगो वारिं पिवति। ५. जलनिधिम्हि वारि चलति। ६. अरि कस्सकस्स वीहयो कन्तति। ७. नरा जलनिधिम्हि मणयो एसन्ति। ८. गद्रभो वीहिं खादति। ९. मुनयो पापं गरहन्ति। १०. जाति नगरे रुक्खं तच्छति। ११. अहयो वनितायो डसन्ति। १२. वनिता मूलं छिन्दति। १३. मुनयो विज्जं बुज्झन्ति। १४. कवि पुञ्ञं पस्सति। १५. नरा पुप्फानि चुम्बन्ति। १६. देवता मुनिं नमति।

(ख) पालि में अनुवाद कीजिए—

१. औरत देवता को नमस्कार करती है। २. पत्नी कपड़ों की सिलाई करती है। ३. बन्दर पेड़ों में फल देखते हैं। ४. विद्वान् शास्त्र समझते हैं। ५. आदमी आंखों से सूरज देखता है। ६. दास घर में पकाता है। ७. साँप पति के गले को डँसता है। ८. साँप मणि को चूमता है। ९. राजा किसान की निन्दा करता है। १०. पत्नियाँ नदी में क्रीड़ा करती हैं। ११. बन्दर बेलों के फल खाते हैं। १२. सेना नावों को खोजती हैं। १३. बन्धु लोग दही खाते हैं। १४. मैं सत्कर्म जानता हूँ। १५. तापस पाप की निन्दा करता है।

पाठ—८

इकारान्त स्त्रीलिङ्ग

'रत्ति' शब्द (=रात)

	एकवचन	बहुवचन
१.	पठमा – **रत्ति**	**रत्ती, रत्तियो**
२.	दुतिया – **रत्तिं**	**रत्ती, रत्तियो**
३.	ततिया – **रत्या, रत्तिया**	**रत्तीभि, रत्तीहि**
४.	चतुत्थी – **रत्या, रत्तिया**	**रत्तीनं**
५.	पंचमी – **रत्या, रत्तिया**	**रत्तीभि, रत्तीहि**
६.	छट्ठी – **रत्या, रत्तिया**	**रत्तीनं**
७.	सत्तमी – **रत्तियं, रत्तिया**	**रत्तीसु**
८.	आलपन – (हे) **रत्ति**	(हे) **रत्ती, रत्तियो**

इकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द जिनके रूप 'रत्ति' शब्द के रूप के समान होंगे—

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
अंगुलि	अंगुलि	**पत्ति**	पैदल सेना
अटवि	बन	**युत्ति**	युक्ति (न्याय)
असनि	बिजली	**वुत्ति**	जीवन-वृत्ति
आलि	सखी	**मुत्ति**	मुक्ति
कित्ति	यश	**तित्ति**	तृप्ति
खन्ति	क्षान्ति (सहनशीलता)	**कन्ति**	शोभा
चुति	मृत्यु	**सुद्धि**	शुद्धि
जाति	जन्म	**वुद्धि**	वृद्धि
दिट्ठि	दृष्टि	**भूमि**	जमीन
दुंदुभि	बाजा	**पीति**	प्रसन्नता

दोनि	छोटी नाव, डोंगी	तुट्ठि	संतोष
धूलि	धूल	केलि	क्रीड़ा (खेल)
नाभि	नाभि	सति	स्मृति
पन्ति	पाँति, कतार	गति	गमन
बुद्धि	बुद्धि	धिति	धीरज
यट्ठि	लाठी	युवति	तरुणी
रंसि	रश्मि	रुचि	रुचि
वुट्ठि	बारिस	सुगति	सुगति

कुछ आवश्यक धातु

धातु	प्रथम पुरुष एक वचन में	अर्थ
कर	करोति	करता है
गह	गण्हाति	लेता है
गंथ	गंथेति	गूंथता है
चिंति	चिन्तेति	सोचता है
चुण्ण	चुण्णेति	पीसता है
चुर	चोरेति	चोरी करता है
जि	जिनाति	जीतता है
तनु	तनोति	फैलाता है
थक	थकेति	ढाँकता है
दा	देति	देता है
दिस	देसेति	उपदेश देता है
धर	धारेति	धारण करता है
पुस	पोसेति	पालन करता है
लु	लुनाति	काटता है
सु	सुणाति	सुनता है

८—अभ्यास

(क) हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

१. अरि इत्थिया अङ्गुलिं लुनाति। २. अटवियो नरानं रुक्खे देन्ति। ३. नरपति वने मिगं हिंसति। ४. कस्सका यट्ठियो छिन्दन्ति। ५. कविनो सारथि नगरं गच्छति। ६. खन्ति नरस्स कित्तिं तनोति। ७. मुनयो नरानं विज्जा देन्ति। ८. इत्थि गेहे पुत्तं पोसेति। ९. जातयो अटवीसु फलानि एसन्ति। १०. नरो दुन्दुभिं दासस्स देति। ११. कवयो नावाय जलधिं तरन्ति। १२. कपि फलस्स छविं छिन्दति। १३. अरीनं पन्तियो नगरं गण्हन्ति। १४. अटवी मुनीन फलानि देन्ति। १५. दासो कस्सकस्स यट्ठिं चोरेति। १६. मुनि अरिं जिनाति। १७. अरि नरस्स कित्तिं थकेति। १८. पति भरियं पोसेति। १९. देवतायो बुद्धस्स धम्मं सुणन्ति। २०. कस्सको मुनिनो छत्तं धारेति।

(ख) पालि में अनुवाद कीजिए—

१. कोचवान किसान की लाठी लेता है। २. हरिण जंगल में रहते हैं। ३. पेड़ में फूल खिलते हैं। ४. समुद्र पानी की रक्षा करता है। ५. शांति दुःख दूर करती है। ६. तापस का शरीर चमकता है। ७. दुश्मन किसानों का बाजा चोरी करते हैं। ८. बन्दर पेड़ से जमीन पर गिरता है। ९. कोचवान धूल फैलाता है। १०. गधा किसान का धान खाता है। ११. सूरज आसमान में रश्मि फैलाता है। १२. आदमी पेड़ काटते हैं। १३. दुश्मन आदमी का धन लेता है। १४. औरत कपड़ा सिलाई करती है। १६. दास किसान को छाता देता है। १७. तापस आदमियों को उपदेश देता है। १८. दुश्मन कोचवान की लाठी काटता है।

पाठ - ६

पूर्वकालिक क्रिया

धातु के परे त्वा, त्वान, तथा तून प्रत्यय जोड़कर पूर्वकालिक क्रिया बनाई जाती हैं, किन्तु 'त्वा' प्रत्यय का ही बहुधा प्रयोग होता है।

धातु	पूर्वकालिक क्रिया	अर्थ
इसु	इच्छित्वा	इच्छा कर
कर	कत्वा	करके
कुट्ट	कोट्टेत्वा	कूटकर
कील	कीलित्वा	खेलकर
गमु	गन्त्वा	जाकर
गह	गहेत्वा	लेकर
चल	चलित्वा	चलकर
चिन्त	चिन्तेत्वा	सोचकर
छिंदि	छिन्दित्वा	काट, तोड़कर
जन	जनेत्वा	पैदाकर
जागर	जागरित्वा	जागकर
जी	जेत्वा	जीतकर
ठा	ठत्वा	खड़ा होकर
तर	तरित्वा	पारकर
दंस	डसित्वा	डँसकर
पच	पचित्वा	पकाकर
पत	पतित्वा	गिरकर
दिस	पस्सित्वा	देखकर
दिस	दिस्वा	देखकर

भुज	**भुञ्जित्वा**	खाकर
मर	**मरित्वा**	मरकर
युज	**योजेत्वा**	नियुक्तकर
रक्ख	**रक्खित्वा**	रक्षाकर
लज्ज	**लज्जित्वा**	लज्जित होकर
सि	**सयित्वा**	सोकर
सु	**सुत्वा**	सुनकर
पा	**पिवित्वा**	पीकर

वैकल्पिक रूप से उपसर्ग पूर्वक धातु के परे **'त्वा'** प्रत्यय होने पर **'य'** आदेश होता है।

उपसर्ग	धातु	पूर्वकालिक क्रिया	अर्थ
अभि	वन्द	**अभिवन्दिय**	अभिवादन कर
आ	दा	**आदाय**	लेकर
प	हा	**पहाय**	छोड़कर
वि	धा	**विधाय**	करके

कुछ आवश्यक शब्द—

पुल्लिङ्ग

शब्द	अर्थ
आवाट	गड्ढा
कुञ्जर	हाथी
गन्थ	किताब
जनक	पिता
तच्छक	बढ़ई
तापस	तपस्वी
पल्लव	कोंपल
ओदन	भात
कुक्कुट	मुर्गा

मार	कामदेव
वम्मिक	वल्मीक (दीमक का घर)
विहार	विहार (मठ)
चोर	चोर
पदीप	दीपक, बत्ती
आहार	भोजन
वेज्ज	वैद्य
सिगाल	सिआर
सुनख	कुत्ता
सूद	रसोइया
गाम	गाँव
लेखक	लेखक
मञ्च	खाट

नपुंसक लिङ्ग

शब्द	अर्थ
खेत्त	खेत
तिण	घास
पीठ	चौकी, कुर्सी
मरण	मृत्यु
पदुम	कमल
वन	वन
सीस	सिर

स्त्रीलिङ्ग

अजा	बकरी
मञ्जूसा	सन्दूक
तुला	तराजू
जुण्हा	चाँदनी

६—अभ्यास

(क) हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

१. कुमारो फलं इच्छित्वा उय्यानं गच्छति। २. वाणिजो धनं रक्खित्वा दानं देति। ३. मिगा वनं गन्त्वा कीलन्ति। ४. वनिता पुत्तं गहेत्वा नगरं चजति। ५. कपि रुक्खम्हा पतित्वा भूमिं ठत्वा फलं भुञ्जति। ६. तापसो विहारं गन्त्वा धम्मं सुणाति। ७. तच्छको वनं गन्त्वा रुक्खं छिन्दित्वा पीठं करोति। ८. सुनखो ओदनं भुञ्जित्वा गेहं गच्छति। ९. वनिता जागरित्वा ओदनं पचति। १०. अहि वम्मिकं गन्त्वा सयति। ११. अजा अटविं गन्त्वा आवाटे पतित्वा मरति। १२. सूदो ओदनं पचित्वा दानं देति। १३. कुक्कुटो रुक्खं गन्त्वा साखायं ठत्वा नादं करोति। १४. वेज्जो विहारं गन्त्वा मुनिं पस्सित्वा नमति। १५. मिगो गिरिं गन्त्वा पल्लवे खादति। १६. मिगा अटविया गन्त्वा खेत्ते तिणानि खादन्ति।

(ख) पालि में अनुवाद कीजिए—

१. साँप वल्मीक से जाकर डँसता है। २. किसान खेत में जाकर उसे सींचता है। ३. दास जाग कर धन की रक्षा करता है। ४. बन्दर फल खाकर बन में रहते हैं ५. आदमी घास काटकर बैलों को देते हैं। ६. चोर रात गाँव में जाकर चोरी करते हैं। ७. बढ़ई पेड़ काटकर खाट बनाता है। ८. बकरी बगीचे में जाकर कोंपल खाती है। ९. तपस्वी उपदेश सुन बन में जाकर रहता है। १०. विद्वान् किताब लिख राजा को देकर धन पाता है। ११. शेर हरिण मार उसे खाकर बन में रहता है। १२. सिआर मुर्गे को ले बन में जाकर खाता है। १३. हिरण खेत में जा धान खाकर पहाड़ पर रहता है। १४. साँप मुर्गे को डँस वल्मीक में जाता है। १५. कुमार एक किताब ले नगर में जाकर बनिये को देता है।

पाठ १०

(क) उकारान्त पुल्लिङ्ग

'भिक्खु' शब्द (=भिक्षु)

	एकवचन	बहुवचन
१. पठमा —	भिक्खु	भिक्खवो, भिक्खू
२. दुतिया —	भिक्खुं	भिक्खवो, भिक्खू
३. ततिया —	भिक्खुना	भिक्खूभि, भिक्खूहि
४. चतुत्थी —	भिक्खुनो, भिक्खुस्स	भिक्खूनं
५. पंचमी —	भिक्खुना, भिक्खुम्हा, भिक्खुस्मा	भिक्खूभि, भिक्खूहि
६. छट्ठी —	भिक्खुनो, भिक्खुस्स	भिक्खूनं
७. सत्तमी —	भिक्खुम्हि, भिक्खुस्मिं	भिक्खुसु, भिक्खूसु
आलपन —	(हे) भिक्खु	(हे) भिक्खवे, भिक्खवो भिक्खू

उकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द जिनके रूप 'भिक्खु' शब्द के रूप के समान होंगे। —

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
उच्छु	ऊख	भानु	सूरज
वेलु	बांस	रेणु	पराग
केतु	झंडा	सत्तु	शत्रु, दुश्मन
जन्तु	जानवर	सिन्धु	सागर
पटु	चतुर	सेतु	पुल
बन्धु	बन्धु	हेतु	कारण
संकु	कील	गरु	गुरु
फरसु	कुल्हाड़ी	बाहु	हाथ

(ख) क्रिया

❀अनागत काल

'भू' धातु

		एकवचन		बहुवचन
१. पठम पुरिस-	(सो)	**भविस्सति**	(ते)	**भविस्सन्ति**
२. मज्झिम पुरिस-	(त्वं)	**भविस्ससि**	(तुम्हे)	**भविस्सथ**
३. उत्तम पुरिस-	(अहं)	**भविस्सामि**	(मयं)	**भविस्साम**

इन पदों के अर्थ निम्न प्रकार होंगे—

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष –	(वह) होगा	(वे) होंगे
मध्यम पुरुष –	(तू) होगा	(तुमलोग) होंगे
उत्तम पुरुष –	(मैं) हूंगा	(हम) होंगे

अनागत काल के कुछ उदाहरण –

धातु	प्रथम पुरुष एक वचन में	अर्थ
कति	**कन्तिस्सति**	काटेगा
कम्प	**कम्पिस्सति**	कांपेगा
कर	**करिस्सति**	करेगा
कील	**कीलिस्सति**	खेलेगा
खनु	**खनिस्सति**	खनेगा
खाद	**खादिस्सति**	खायेगा
गमु	**गच्छिस्सति**	जायेगा
,,	**गमिस्सति**	,,
गह	**गण्हिस्सति**	लेगा
चर	**चरिस्सति**	बिचरेगा

❀ पालि में भविष्यत् काल को 'अनागत' कहते हैं ।

चल	चलस्सति	हिलेगा
चुण्ण	चुण्णेस्सति	पीसेगा
चुर	चोरेस्सति	चुरायेगा
छिदि	छिन्दिस्सति	तोड़ेगा
जल	जलिस्सति	जलेगा
जि	जिनिस्सति	जीतेगा
तच्छ	तच्छिस्सति	छीलेगा
तर	तरिस्सति	पारकरेगा
दा	दस्सति	देगा
दंस	डसिस्सति	डँसेगा
पत	पतिस्सति	गिरेगा
दिस	पस्सिस्सति	देखेगा
पा	पिविस्सति	पीयेगा
पुस	पोसेस्सति	पालेगा
भुज	भुञ्जिस्सति	भोजन करेगा
लिख	लिखिस्सति	लिखेगा
वस	वसिस्सति	रहेगा
सि	सयिस्सति	सोयेगा
सु	सुणिस्सति	सुनेगा
हिंस	हिंसिस्सति	हिंसा करेगा

१०—अभ्यास

(क) हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

१. सिगाला खेत्तं गन्त्वा उच्छवो खादिस्सन्ति। २. तच्छको वनं गन्त्वा रुक्खं कन्तिस्सति। ३. त्वं उच्छुं छिन्दित्वा गेहं गमिस्ससि। ४. जन्तवो वने वसित्वा फलानि खादिस्सन्ति। ५. पटू रूक्खं छिन्दित्वा

दोणि कत्वा गङ्गायं कीलिस्सन्ति । ६. भानु रंसियो नरानं दस्सति । ७. सुनखो कुमारं हिंसित्वा कीलिस्सति । ८. भमरो रेणुं गहेत्वा अटविं गमिस्सति । ९. अग्गिनो अच्चि गेहे जलिस्सति । १०. मिगो गङ्गायं जलं पिवित्वा वनं गमिस्सति । ११. अहि जन्तुं डसित्वा वम्मिकं गच्छिस्सति । १२. कस्सको भूमिं खनिस्सति । १३. मनुस्सा नावाय सिन्धुं तरिस्सन्ति । १४. तापसो रुक्खं छिन्दित्वा सेतुं करिस्सति । १५. असनि गेहं चुण्णेस्सति । १६. सीहो मिगं हिंसिस्सति । १७. नरपति पुत्तं पोसेस्सति । १८. जन्तवो सीहं दिस्वा कम्पिस्सन्ति । १९. कस्सका संकूहि खेत्तानि खनिस्सन्ति । २०. कपयो फलानि चोरेस्सन्ति ।

(ख) पालि में अनुवाद कीजिए—

१. किसान लोग ऊख लेकर घर आयेंगे । २. लड़के बन में जाकर फूल देखेंगे । ३. मैं नगर में जाकर झड़ा लूँगा । ४. लोग भोजन करके सोयेंगे । ५. लड़का घर में जाकर किताब लिखेगा । ६. बन्दर फल खाकर बिचरेगा । ७. शेर हरिण को खायेगा । ८. लड़के पानी पीकर खेलेंगे । ९. बनिया बिहार में जाकर मुनि को नमस्कार करेगा । १०. तुम साँप की हिंसा करोगे । ११. हम लोग दुश्मन को फूल देंगे । १२. दास कील से पहाड़ को खनेगा । १३. सागर में जहाज जायेगा । २४. साँप पुल से जल में गिरेगा । १५. तपस्वी क्षमाके कारण दुश्मन को जीतेगा । १६. हाथी किसान का घर तोड़ेगा । १७. कुत्ता दही खाकर पेड़ की छाया में सोयेगा । १८. बढ़ई बन में पेड़ काट कर छीलेगा । १९. कुमार बालू में गड्ढा खनेगा । २० हरिण खेत में घास खाकर बन में जायगा ।

———

पाठ—११

उकारान्त नपुंसकलिङ्ग

'आयु' शब्द

	एकवचन	बहुवचन
१. पठमा-	**आयु**	**आयू, आयूनि**
२. दुतिया-	**आयुं**	**आयू, आयूनि**
३. आलपन-	**(हे) आयु**	**(हे) आयू, आयूनि**

शेष रूप "भिक्खु" शब्द के समान होंगे।

उकारान्त नपुंसक लिङ्ग शब्द जिनके रूप 'आयु' शब्द के रूप के समान होंगे —

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
अम्बु	पानी	**चक्खु**	आँख
अस्सु	आँसू	**जतु**	लाह
तिपु	राँगा	**जानु**	घुटना
दारु	लकड़ी	**वसु**	धन
धनु	धनुष	**सिग्गु**	सहजन
मधु	मधु	**हिङ्गु**	हींग
वत्थु	वस्तु	**वपु**	शरीर

(ख) अव्यय

जिन शब्दों के रूप में लिङ्ग, विभक्ति और वचन के कारण कुछ भी परिवर्तन नहीं होता, उन्हें अव्यय कहते हैं। अव्यय दो प्रकार के होते हैं—(१) उपसर्ग और (२) निपात। कुछ निपात शब्दों के उदाहरण दिये जा रहे हैं—

निपात

निपात	अर्थ	निपात	अर्थ
इत्थं	ऐसा	एवं	एवं (=ऐसा)
इति	इति	कथं	कैसा
इव	तरह	यस्मा	जिस कारण से
एकक्खत्तुं	एकबार	वत	निश्चय से
एकधा	एक प्रकार से	वा	या
एव	ही	विय	भाँति
सद्धिं	साथ	तस्मा	इसलिए
खलु	निश्चय से	न	नहीं
खिप्पं	जल्दी	मा	मत
च	और	सनिकं	धीरे-धीरे

निम्नलिखित निपात काल वाचक हैं—

तदा	तब	एकदा	एकबार
सदा	हमेशा	सब्बदा	हमेशा
इदानि	अब	पच्छा	पीछे
अज्ज	आज	पुरा	पहले
सुवे	(आगामी) कल	सायं	शाम
हीयो	(बीता हुआ) कल	पातो	सबेरे
यदा	जब	परसुवे	(आगामी) परसों
कदा	कब	परहीयो	(बीता हुआ) परसों

११—अभ्यास

(क) हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

१. कथं अहि वम्मिकम्हि सयिस्सति ? २. सब्बदा कुमारस्स चक्खूहि अस्सूनि पतिस्सन्ति । ३. नरा च वनितायो च दारूनि कन्तिस्सन्ति ।

४. सुनखेन सद्धिं मनुस्सो वसुं रक्खिस्सति । ५. वनितायो दासेन सद्धिं एव वने गन्त्वा दारूनि छिन्दिस्सन्ति । ६. इत्थं अरि धनुना मिगं हिंसिस्सति । ७. भमरो पुप्फानं मधूनि च रेणुं च गण्हिस्सति । ८. नरपति कुमारेन सद्धिं यदा धनानि दस्सति तदा नरा सुखं जीविस्सन्ति । ९. कदा तुम्हे नगरं गमिस्सथ ? १०. गोणो मनुस्सो विय गामे चरिस्सति । ११. सूदा गेहं गन्त्वा सनिकं ओदनं पचिस्सन्ति । १२. तदा वेज्जो खलु हिङ्गुं एव गहेत्वा गङ्गं तरिस्सति । १३. मुनि यदा धम्मं देसिस्सति तदा अहं धम्मं बुज्झिस्सामि ।

(ख) पालि में अनुवाद कीजिए—

१. राजा निश्चय ही कुमार को धन देना । २. वृष्टि खेतों को पानी कैसे देगी ? ३. जब तुम रोओगे तब तुम्हारी आंखों से आंसू गिरेंगे । ४. बढ़ई तथा किसान बगीचे की लकड़ी ले जायेंगे । ५. बाप बेटे के साथ भोजन करेगा । ६. किसान धनुष तथा तलवार ले जंगल में जायगा । ७. औरत मेरा मधु वैद्य को देगी । ८. जब बनिया आवेगा तब हम लोग धन पायेंगे । ९. मैं एकबार पिता के साथ नाव से गङ्गा को पार करूँगा । १०. इस तरह तपस्वी लोग उपदेश दे नगर में विचरेंगे । ११. सिआर कुत्ते के साथ मुर्गा खायेगा । १२. हमेशा हाथी खेत में जा धान खायेगा । १३. वह आज पाठशाले से घर नहीं जायेगा ।

पाठ - १२

उकारान्त स्त्रीलिङ्ग

'धेनु' शब्द

	एकवचन	बहुवचन
१. पठमा—	धेनु	धेनू, धेनूयो
२. दुतिया—	धेनुं	धेनू, धेनुयो
३. तितिया—	धेनुया	धेनूभि, धेनूहि
४. चतुत्थी—	धेनुया	धेनूनं
५. पंचमी—	धेनुया	धेनूभि, धेनूहि
६. छट्ठी—	धेनुया	धेनूनं
७. सत्तमी—	धेनुयं, धेनुया	धेनूसु
८. आलपन—	(हे) धेनु	(हे) धेनू, धेनुयो

उकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द जिनके रूप 'धेनु' शब्द के रूप के समान होंगे—

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
कण्डु	खुजलाहट	रज्जु	रस्सी
कणेरू	हथिनी	विज्जु	बिजली
कासु	गड्ढा	सस्सु	सास
दद्दु	दाद	कच्छु	खुजली

उकारान्त स्त्रीलिङ्ग 'मातु' (=माँ) शब्द के रूप 'धेनु' शब्द से भिन्न निम्न प्रकार होते हैं—

'मातु' शब्द (=माँ)

	एकवचन	बहुवचन
१. पठमा-	माता	मातरो
२. दुतिया-	मातरं	मातरे, मातरो

३. ततिया—	मातुया, मातरा	मातरेभि, मातरेहि, मातूभि, मातूहि
४. चतुत्थी—	मातु, मातुया	मातरानं, मातानं, मातूनं
५. पंचमी—	मातुया, मातरा	मातरेभि, मातरेहि, मातूभि, मातूहि
६. छट्ठी—	मातु, मातुया	मातरानं, मातानं, मातूनं
७. सत्तमी—	मातुया, मातरि	मातरेसु, मातुसु
८. आलपन—	(हे) मात, माता	(हे) मातरो

परिवार-सम्बन्ध वाचक शब्द

(यहाँ शब्दों के बाद कोष्ठों में जो 'पु, इ, न' अक्षर हैं वे क्रमशः पुल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग सूचित करते हैं—)

शब्द		अर्थ	शब्द		अर्थ
पितामह	(पु०)	दादा	सहज	(पु०)	भाई
मातामही	(इ०)	दादी	मातुल	(पु०)	मामा
अम्मा	(इ०)	माँ	मातुलानि	(इ०)	मामी
धाति	(इ०)	धाई (दाई)	ससुर	(पु०)	श्वसुर

शरीरावयव वाचक शब्द

सरीर	(न०)	शरीर	ऊरु	(च०)	जंघा
सवण	(न०)	कान	थन	(न०)	स्तन
नासिका	(इ०)	नाक	उदर	(न०)	पेट
मुख	(न०)	मुख	जघन	(न०)	पेडू
खेल	(पु०)	थूक	पाद	(न०)	पैर
हदय	(न०)	हृदय	पिट्ठि	(इ०)	पीठ
हत्थ	(पु०)	हाथ	खीर	(न०)	दूध
करपुट	(पु०)	हथेली	उच्चार	(न०)	पाखाना
नख	(पु०)	नाखून	पस्साव	(पु०)	पेशाब

१२—अभ्यास

(क) हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

१. अम्मा पुत्तस्स मुखं पस्सिस्सति । २. धाति कुमारस्स दधिं दस्सति । ३. मातामही करपुटेन जलं पिविस्सति । ३. सहजस्स हत्थो कण्डुया रुजिस्सति । ५. ससुरस्स सुनखो भत्तं खादिस्सति । ६. कणेरु मय्हं एव गेहं चुण्णेस्सति । ७. उरगो अटविं गन्त्वा धेनुया पादं डंसिस्सति । ८. दासो पितामहस्स यट्ठिं रज्जुया कासुया गण्हिस्सति । ९. नरपति अरिस्स एव नासिकं सवणं च कन्तिस्सति । १०. सूदस्स नखा न जलिस्सति । ११. मिगस्स लोहितानि सिगाला खिप्पं पिविस्सन्ति । १२. सुनखो रुक्खस्स मूले पस्सावं करिस्सति । १३. जघनं यदा रुजति तदा पितामहो जागरिस्सति । १४. भमरा पुप्फेसु मधूनि गण्हित्वा अटविं गमिस्सन्ति । १५. यस्मा जनको धनं न दस्सति, तस्मा दासो नगरं गमिस्सति । १६. दारको मातुया खीरं पिविस्सति ।

(ख) पालि में अनुवाद कीजिए—

१. माताएँ बनिया से हिंग लेंगीं । २. दादा भाई के पीठ पर खून देखकर तुरन्त काँपेगा । ३. बेटा राजा के पैर पर सिर रखकर सोयेगा । ४. वैद्य दादी के कान में दाद देखेगा । ५. तापस लोग गाँव से बन में जायेंगे । ६. किसान घर से रस्सी लेकर खेत जायगा । ७. हाथी हथिनी के साथ गंगा में जाकर पानी गदला करेगा । ८. मामा की बकरी गड्ढे में गिर के मर जायगी । ९. बच्चे माताओं का दूध पीयेंगे । १०. किसान लोग बकरी का दूध बच्चों को देंगे । ११. दादी मेरे घर की रक्षा करेंगी । १२. एक बार मैं अपनी किताब दादी को दूँगा । १३. तुम भाई के साथ बन जाके फल खाओगे । १४. तुम लोग किसानों के साथ खेत में जाकर धान काटोगे । १५. हमलोग दास के साथ भोजन कर नगर में तुरन्त जायेंगे । १६. सदा किसान लोग खेत की रक्षा करेंगे ।

पाठ १३

(क) कुछ अन्य उकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द जिनके रूप ऊपर दिखाए गये 'भिक्खु' शब्द के रूप से भिन्न होते हैं।

'पितु' शब्द (=पिता)

	एकवचन	बहुवचन
१.	पठमा—पिता	पितरो
२.	दुतिया—पितरं	पितरे, पितरो
३.	ततिया—पितरा	पितरेभि, पितरेहि, पितूभि, पितूहि
४.	चतुत्थी—पितु, पितुनो,	पितुस्स पितरानं, पितानं, पितूनं
५.	पंचमी—पितरा	पितरेभि, पितरेहि, पितूभि, पितूहि
६.	छट्ठी—पितु, पितुनो, पितुस्स	पितरानं, पितानं, पितूनं
७.	सत्तमी—पितरि	पितरेसु, पितुसु, पितूसु
८.	आलपन—(हे) पित, पिता	(हे) पितरो

'सत्थु' शब्द (=शास्ता)

	एकवचन	बहुवचन
१.	पठमा—सत्था	सत्थारो
२.	दुतिया—सत्थारं	सत्थारे, सत्थारो
३.	ततिया—सत्थारा	सत्थारेभि, सत्थारेहि, सत्थूभि, सत्थूहि
४.	चतुत्थी—सत्थु, सत्थुनो, सत्थुस्स	सत्थारानं, सत्थानं

५. पंचमी— सत्थारा	सत्थारेभि, सत्थारेहि, सत्थूभि, सत्थूहि
६. छट्ठी—सत्थु, सत्थुनो, सत्थुस्स	सत्थारानं सत्थानं
७. सत्तमी— सत्थरि	सत्थारेसु
८. आलपन—(हे) सत्थ, सत्था	(हे) सत्थारो

उकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द जिनके रूप 'सत्थु' शब्द के रूप के समान होंगे—

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
कत्तु	करने वाला	नत्तु	नाती
गन्तु	जाने वाला	नेतु	नेता
जेतु	जीतने वाला	भत्तु	रक्षा करने वाला
ञातु	जानने वाला	महामन्धातु	एक राजा
दातु	देनेवाला	विञ्ञापेतु	सूचित करनेवाला
विनेतु	विनय करनेवाला	सोतु	सुननेवाला
वत्त	बोलने वाला		

(ख) क्रिया

पञ्चमी (=अनुज्ञा)

आज्ञा, निमन्त्रण, अनुरोध, प्रार्थना, जिज्ञासा इत्यादि में पञ्चमी विभक्ति होती है।

पञ्चमी विभक्ति में क्रिया के रूप निम्न प्रकार होते हैं—

'भू' धातु

	एक वचन	बहुवचन
१. पठम पुरिस—	(सो) भवतु	(ते) भवन्तु
२. मज्झिम पुरिस –	(त्वं) भव, भवाहि	(तुम्हे) भवथ
३. उत्तम पुरिस—	(अहं) भवामि	(मयं) भवाम

इन पदों के अर्थ निम्न प्रकार होंगे—

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष—	(वह) हो	(वे) होवें
मध्यम पुरुष—	(तू) हो	(तुम) होवो
उत्तम पुरुष—	(मैं) हूँ	(हम) रहें

इन धातुओं के रूप भी 'भू' धातु के रूप के समान होंगे—

धातु	प्रथम पुरुष एक वचन में	अर्थ
इसु	इच्छतु	इच्छा करे
कर	करोतु	करे
कुप	कुप्पतु	क्रोध करे
खाद	खादतु	खाये
गमु	गच्छतु	जाये
गह	गण्हातु	ले
छिदि	छिन्दतु	काटे
जीव	जीवतु	जीये
तर	तरतु	पार करे
ठा	तिट्ठतु	खड़े रहे
दिस	देसेतु	उपदेश दे
नम	नमतु	नमस्कार करे
दा	ददातु	दे
पत	पततु	गिरे
दिस	पस्सतु	देखे
रक्ख	रक्खतु	रक्षा करे
लभ	लभतु	पाये
सि	सयतु	सोये
हिंस	हिंसतु	हिंसा करे

—१३ अभ्यास

(क) हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

१. गन्थस्स कत्ता नावा जलधिं तरतु। २. कवि जेतुनो मुखं पस्सतु। ३. त्वं असिं गहेत्वा नगरं गन्त्वा नरपतिं रक्खाहि। ४. अहं पितामहस्स धनं लभामि। ५. पुञ्ञस्स विपाकस्स आता विहारं करोतु। ६. त्वं दातारानं कुञ्जरं इच्छ। ७. गङ्गा जलं अम्हाकं ददातु। ८. वाणिजस्स नत्ता नगरे सुखं जीवतु। ९. तुम्हे पुञ्ञानि कत्वा सुगतिं गच्छथ। १०. नेता मनुस्सानं चित्तं गण्हतु। ११. पिता तापसस्स दानं दत्वा साखाय छायायं तिट्ठतु। १२. कपयो मुनिनो फलानि च जलानि च देन्तु। १३. कुमारो अरिनो सीसं असिना मा छिन्दतु। १४. सिगाला कुक्कुटे मा गण्हन्तु। १५. सत्था विहारे धम्मं देसेतु। १६. तुम्हे विहारं गन्त्वा सत्थारं नमथ। १७. मुनि गन्थं सोतुनो देतु। १८. भत्ता भरियं मा हिंसतु। १९. त्वं फलानि च पल्लवे च महा-मन्धातुनो देतु। २०. विञ्ञापेता पीठे तिट्ठतु। २१. धम्मस्स सोता जलधिं तरित्वा गिरिं गच्छतु।

(ख) पालि में अनुवाद कीजिए—

१. नेता सागर में जहाज से न गिरे २. जीतने वाला दुश्मन का सिर काट कर मदिरा न पिये। ३. दास! तुम गङ्गा से पानी लेकर नाव से पार हो जाओ। ४. दान देने वाले की देवता रक्षा करें। ५. बकरियाँ खेत में धान न खावें। ६. साँप! तुम राजा को माणिक्य दो। ७. लड़का पहाड़ से न गिरे। ८. दादा भतीजे को फल दे। ९. नेता दास को तलवार न दे। १० बेटा बाप पर क्रोध न करे। ११. हाथी तापस को नमस्कार करे। १२. पत्नी पति को भोजन पका कर दे। १३. आदमी प्राणियों की हिंसा न करें।

पाठ—१४

कुछ अन्य विशेष शब्द

'राज' शब्द (=राजा)

	एकवचन	बहुवचन
१. पठमा—	राजा	राजानो
२. दुतिया—	राजानं, राजं	राजानो
३. ततिया—	रञ्ञा, राजेन	राजूभि, राजूहि, राजेभि, राजेहि
४. चतुत्थी—	रञ्ञो, राजिनो	रञ्ञं राजूनं, राजानं
५. पंचमी—	रञ्ञा, राजम्हा, राजस्मा	राजूभि, राजूहि, राजेभि, राजेहि
६. छट्ठी—	रञ्ञो, राजिनो	रञ्ञं, राजूनं, राजानं
७. सत्तमी—	रञ्ञे, राजिनि, राजम्हि, राजस्मिं	राजुसु, राजेसु
८. आलपन—	(हे) राज, राजा	(हे) राजानो

जब किसी शब्द के साथ **'राज'** शब्द का समास होता है तब उसके रूप अकारान्त पुल्लिङ्ग **'मनुस्स'** शब्द के समान होते हैं— जैसे—**महाराजो, महाराजा, महाराजं, महाराजे** इत्यादि।

ओकारान्त पुल्लिङ्ग

'गो' शब्द (=बैल)

	एकवचन	बहुवचन
१. पठमा—	गो	गावो
२. दुतिया—	गावुं, गावं, गवं	गावो
३. ततिया—	गावेन, गवेन	गोभि, गोहि
४. चतुत्थी—	गावस्स, गवस्स	गवं, गुन्नं, गोनं

५. पंचमी— गावा, गावम्हा, गावस्मा गोभि, गोहि
६. छट्ठी— गावस्स, गवस्स गवं, गुन्नं, गोनं
७. सत्तमी— गावे, गवम्हि, गवस्मिं गावेसु, गवेसु, गोसु
८. आलपन— (हे) गो (हे) गावो

१४—अभ्यास

(क) हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

१. राजा कुमारेन सद्धिं गङ्गायं कीलतु। २. त्वं राजानं वन्दित्वा गेहं गच्छ। ३. अहं रञ्ञा किर्त्तिं लभामि। ४. तुम्हे रञ्ञो असिं मा चोरेथ। ५. हे राजानो! तुम्हे मय्हं खमथ। ६. सूदो राजानं आहारं पचतु। ७. त्वं पुञ्ञं कत्वा सग्गं गच्छ। ८. गावो वने चरित्वा तिणं खादित्वा मय्हं पितुनो खेत्तं गच्छन्तु। १०. पितामहस्स गावं मय्हं देतु।

(ख) शुद्ध कीजिए

१. गावस्स पिट्ठिया कुमारो तिट्ठथ। २. राजा गावस्स सीसं मा छिन्दामि। ३. मुनि रञ्ञो गेहं गन्त्वा धम्मं देसेम। ४. रञ्ञो कणेरु कुञ्जरेन सद्धिं गङ्गं मा गच्छन्ति। ५. चोरो गेहं गन्त्वा असिं मा गण्हाहि। ६. रविस्स रसिं राजानं च महेसिं (=रानी) च मा हिंसथ। ७. धेनु खलु खीरं दत्वा पुत्तं रक्खामि।

(ग) पालि में अनुवाद कीजिए—

१. दुश्मन औरत का सिर वन में न काटे। २. बेटा! तुम फूल और फल से तापस की पूजा करो। ३. दास! तुम आदमियों को पानी तथा बैलों को घास दो। ४. तापस राजा तथा कुमार को उपदेश दें। ५. गाय घास खाकर पानी पीये। ६. कुत्ता खाना खाकर विना सोये घर की रक्षा करे। ७. हे दास! तुम विद्वान को किताब देकर जल्दी खेत में आओ। ८. लड़का पाठशाला जाकर फिर घर आवे। ९. कोचवान बैल को चुरा बनिये को न दे। १०. आदमी पाप से लज्जित हो पुण्य से लज्जित न हो।

पाठ १५

(क)कुछ आवश्यक द्रष्टव्य शब्द

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
अदिन्न पुब्बक*	(पु०) एक नाम	कुम्भकारसाला	(इ०) कुम्हार का घर
अन्तोगाम	(पु०) गाँव में	कुमारिका	(इ०) कुमारी
आणा	(इ०) आज्ञा	चक्खुपाल	(पु०) एक नाम
आलाहन	(न०) मरघट	थेर	(पु०) वृद्ध भिक्षु
उण्ह	(पु०) गर्म, उष्ण	दक्खिण	(पु०) दक्षिण
कम्म	(न०) कर्म	देवपुत्त	(पु०) देवपुत्र
कुण्डलाभरण	(न०) कुंड़ल	देवल	(पु०) एक नाम
देवलोक	(पु०) दिव्य लोक	द्वार	(पु०) दरवाजा
धीतु	(इ०) पुत्री	नारद	(पु०) एक नाम
पण्डुकम्बल-सिलासन	(न०) इन्द्र की गद्दी	सक्क	(पु०) इन्द्र
सन्तिक	(नि०) निकट	सप्प	(पु०) सर्प
सावत्थि	(इ०) श्रावस्ति	पत्थना	(इ०) प्रार्थना
पमाद	(पु०) देर	पवत्ति	(इ०) समाचार
पाटलीपुत्त-नगर	(न०) पाटलीपुत्र (पटना)	पिण्ड	(पु०) पिण्ड
पुप्फपूजा	(इ०) पुष्प पूजा	पुरिस	(पु०) पुरुष
बाराणसी	(इ०) बनारस	भेसज्ज	(न०) दवा

* एक आदमी का नाम जिसने कभी भी पहले कोई दान न दिया था।

महासत्त	(पु०)	बोधिसत्व	निग्रोध	(पु०)	बरगद
महासुवण्ण	(पु०)	एक नाम	माणव	(पु०)	माणवक
मुत्ताहार	(पु)	मोती की हार	वापि	(इ०)	जलाशय
वासट्ठान	(न)	निवास स्थान	वीतराग	(पु०)	वैरागी
वेग	(पु०)	तेज	सेट्ठि	(पु०)	सेठ
सुव	(पु०)	तोता	हिमालय	(पु०)	हिमालय-पहाड़

(ख) क्रिया

अज्जतनी विभक्ति (=भूतकाल)

'भू' धातु

	एकवचन		बहुवचन	
१. पठम पुरिस—(सो)	अभवी, भवी	(ते)	अभविंसु, भविंसु, अभवि, भवि	अभवुं, भवुं
२. मज्झिम पुरिस—(त्वं)	अभवो, भवो	(तुम्हे)	अभवित्थ, भवित्थ	
३. उत्तम पुरिस – (अहं)	अभविं, भविं	(मयं)	अभविम्ह, भविम्ह अभविम्हा, भविम्हा	

इन पदों के अर्थ निम्न प्रकार होंगे—

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष—	(वह) हुआ	(वे) हुवे
मध्यम पुरुष—	(तू) हुआ	(तुम) हुवे
उत्तम पुरुष—	(मैं) हुआ	(हम) हुवे

इन धातुओं के रूप भी 'भू' धातु के रूप के समान होंगे—

धातु	प्रथमपुरुष एक वचन में	अर्थ
गमु	अगमासि	गया
चुर	अचोरयि	चुराया

ठा	अट्ठासि	रहा
दा	अदासि	दिया
वद	अवदि	कहा
हु	अहोसि	हुआ
उ + पद	उप्पज्जि	पैदा हुआ
अव + लोक	ओलोकेसि	देखा
कर	अकरि	किया
नि + वतु	निवत्ति	रुका
प + विस	पाविसि	गया
लभ	लभि	पाया
रुदि	रोदि	रोया
वस	वसि	रहा

१५ अभ्यास

(क) हिन्दी में अनुवाद कीजिए -

१. महासत्तो यदा वनं पाविसि, तदा सक्कस्स पण्डुकम्बलसिला-सनं उण्हं अहोसि । २. अथ सक्को भयानकं रक्खसवेसं गहेत्वा रञ्ञो सन्तिकं अगमासि । ३. महासत्तो रक्खसेन सद्धिं सल्लपि । ४. रक्खसो धम्मं देसेत्वा देवलोकं अगमासि । ५. सुवपोतको आवाटे पतित्वा अट्ठासि । ६. सप्पो च मनुस्सो च आवाटे एव वसिंसु । ७. बाराणसियं दक्खिणे द्वारे महानिग्रोधो अभवि । ८. बाराणसीराजो नगरम्हा निक्खमित्वा उय्यानं पाविसि । ९. सुवपोतको पुरिसानं पमादं दिस्वा रञ्ञो मुत्ताहारं अचोरयि । १०. राजपुरिसा मित्तद्रुभिनो वचनेन मुत्ताहारं रञ्ञो दस्सेसुं ।

नीचे लिखे वाक्यों में कर्ता पद लगाइए—

१.……………रञ्ञो आणं कारेसु। २. पाटलीपुत्त नगरे सेट्ठिनो ……………अहोसि। ३.……………आगन्त्वा सिन्धवपोतकं इत्थियो अदासि। ४.……………बोधिमण्डं गन्त्वा वीतरागेहि सद्धिं पुप्फपूजं कत्वा निवत्तिंसु। ५.……………वेगं जनेत्वा आकासं अगमासि। ६. सावत्थियं……………पुत्तं लभि। ७. अथ……………भरिया एवं अवदि।

(ग) पालि में अनुवाद कीजिए—

१. महासुवर्ण प्रार्थना (करके चला गया। २. लोगों ने एक विहार बनवाकर बुद्ध को दिया। ३. चक्खुपाल भिक्षुओं के साथ गाँव में गया। ४. वृद्ध भिक्षु की आँखों में एक रोग पैदा हुआ। ५. भिक्षुओं ने वैद्य के यहां जाकर कहा। ६. वैद्य ने विहार में जाकर वृद्ध भिक्षु की रहने की जगह देखी। ७. वैद्य ने एक दवा बनाकर औरत को दिया। ८. अदिन्नपुब्बक ब्राह्मण ने सोना पीट कुण्डल बनाकर दिये। ९. ब्राह्मण मरघट जाकर सोया। १०. देवपुत्र ने कहा ब्राह्मण! तुम दान दो, शील का पालन करो। ११. शास्ता घर जाकर आसन पर बैठ गये। १२. नारद ने राजा को समाचार कहा।

————

पाठ १६

(क) सर्वनाम

'त' शब्द (=वह)

पुल्लिङ्ग

	एकवचन	बहुवचन
१.	पठमा—सो	ने, ते
२.	दुतिया—नं, तं	ने, ते
३.	ततिया—नेन, तेन	नेभि, नेहि, तेभि, तेहि
४.	चतुत्थी—नस्स, तस्स	नेसं नेसानं, तेसं, तेसानं
५.	पंचमी—नम्हा, तम्हा, नस्मा, तस्मा	नेभि, नेहि, तेभि, तेहि
६.	छट्ठी—नस्स, तस्स	नेसं, नेसानं, तेसं, तेसानं
७.	सत्तमी—नम्हि, तम्हि, नस्मिं, तस्मिं	नेसु, तेसु

नपुंसक लिङ्ग

	एकवचन	बहुवचन
१.	पठमा—नं, तं	ने, नानि, ते, तानि
२.	दुतिया—नं, तं,	ने, नानि, ते, तानि

शेष पुल्लिङ्ग के समान होंगे—

स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	बहुवचन
१.	पठमा—सा	ना, नायो, ता, तायो
२.	दुतिया—नं, तं	ना, नायो, ता, तायो
३.	ततिया—नाय, ताय	नाभि, नाहि, ताभि, ताहि

४. चतुर्थी—तिस्साय, तिस्सा, तस्साय, तस्सा तासं तासानं
५. पंचमी—नाय, ताय नाभि, नाहि, ताभि, ताहि
६. छट्ठी – तिस्साय, तिस्सा, तस्साय, तस्सा तासं, तासानं
८. सत्तमी—तिस्सं, तस्मं, तायं तासु

(ख) निष्ठा (=कृदन्त)

निष्ठा के अर्थ में धातु के परे 'त' प्रत्यय लगाया जाता है। उससे बना शब्द विशेषण के साथ प्रयुक्त होता है। उसके रूप पुल्लिङ्ग में 'पुरिस' शब्द के समान, नपुंसक लिङ्ग में 'कुल' शब्द के समान तथा स्त्रीलिङ्ग में 'लता' शब्द के समान होते हैं—

धातु	कृदन्त पुल्लिङ्ग	अर्थ
कुध	कुद्धो	क्रुद्ध हुआ
गमु	गतो	गया हुआ
खमु	खन्तो	क्षमा किया हुआ
गुह	गूळ्हो	छिपा हुआ
जन	जातो	पैदा हुआ
जर	जिण्णो	बूढ़ा हुआ
ठा	ठितो	खड़ा हुआ
तर	तिण्णो	पार किया हुआ
तुस	तुट्ठो	संतुष्ट हुआ
दम	दन्तो	दमन किया हुआ
पा	पीतो	पिया हुआ
भी	भीतो	डरा हुआ

भुज	भुत्तो	खाया हुआ
भू	भूतो	हो चुका हुआ
मुच	मुत्तो	छूटा हुआ
मुह	मूल्हो	भूला हुआ
नी+युज	नियुत्तो	नियुक्त हुआ
रञ्ज	रत्तो	रक्त हुआ
वड्ढ	वुड्ढो	बढ़ा हुआ
वस	वुसितो, वुत्थो	रहा हुआ
सं+पूर	सम्पुण्णो	भरा हुआ
सिध	सिद्धो	सिद्ध हुआ
सुस	सुक्खो	सूखाहुआ

१६—अभ्यास

(क) हिन्दी में अनुवाद कीजिए

१. सावत्थियं तस्सं सालायं मनुस्सा ठिता। २. नरपति तस्मिं मनुस्से अतिमयेन तुट्ठो होति। ३. देवलो नाम तापसो कुद्धो कुम्भकार-साालायं अट्ठासि! ४. नारदो देवलस्स खन्तो गामं गतो होति। ५. राजपुरिसो आवाटे गूल्हो मिगस्स सीसं छिन्दि। ६. महासुवण्णस्स गेहे कुमारिका जाता। ७. एकदा जिण्णो ब्राह्मणो विहारं गन्त्वा सम्बुद्धस्स धम्मं सुणि। ८. चक्खुपालत्थेरो विहारे ठितो धम्मं देसेसि। ९. महासत्तो जलधिं तिण्णो बोधिमण्डं गतो। १०. कस्सका जलं पीता खेत्तं कसिसु। ११. मुनि पिण्डाय गामं पविसित्वा विहारं आगन्त्वा भुत्तो गूल्हे ठाने सयि। १२. अथ तस्स वाणिजस्स पुत्तभूतो, सो रञ्ञो सन्तिकं अगमासि। २३. सो मिगो बन्धनस्मा मुत्तो भीतो वनं पाविसि। १४. सा मूल्हा इत्थि धम्मं सुत्वित्वा रुक्खस्स मूले अट्ठासि। १५. तस्मिं रथे नियुत्तो पुरिसो पाटलीपुत्त नगरं अगमासि।

(ख) पालि में अनुवाद कीजिए—

१. पिता के साथ रहा हुआ बनिया शहर गया। २. भरी हुई वह गङ्गा सागर की ओर गई। ३. पिता को बेटे पर संतोष हुआ। ४. बूढ़ा हाथी बन में गया। ५. खाई हुई रानी आसन पर सो गई। ६. गङ्गा पार किया हुआ बनिया गाँव में आया। ७. डरा हुआ लड़का रोया। ८. सूखा हुआ पेड़ जमीन पर गिरा। ९. खाया हुआ सेवक स्वामी के साथ खेत में गया। १०. तापस गांव से बन में गया।

पाठ —१७

(क) सर्वनाम

'य' शब्द (=जो)

पुल्लिङ्ग

	एकवचन	बहुवचन
१. पठमा—	यो	ये
२. दुतिया—	यं	ये
३. ततिया—	येन	येभि, येहि
४. चतुत्थी—	यस्स	येसं, येसानं
५. पंचमी—	यम्हा, यस्मा	येभि, येहि
६. छट्ठी—	यस्स	येसं, येसानं
७. सत्तमी—	यम्हि, यस्मिं	येसु

नपुंसक लिङ्ग

	एकवचन	बहुवचन
१. पठमा—	यं	ये, यानि
२. दुतिया—	यं	ये, यानि

शेष पुल्लिङ्ग के समान होंगे।

स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	बहुवचन
१. पठमा—	या	या, यायो
२. दुतिया—	यं	या, यायो
३. ततिया—	याय	याभि, याहि

४. चतुत्थी—	यस्सा, याय	यासं, यासानं
५. पंचमी—	याय	याभि, याहि
६. छट्ठी—	यस्सा, याय	यासं, यासानं
७. सत्तमी—	यस्सं, यायं	यासु

'य' शब्द विशेषण होनेपर निम्न प्रकार से प्रयुक्त होगा—

पुल्लिङ्ग

यो पुरिसो, ये पुरिसा, यं पुरिसं, ये पुरिसे, येन पुरिसेन, येहि पुरिसेहि इत्यादि।

नपुंसक लिङ्ग

यं कुलं, यानि कुलानि इत्यादि।

स्त्रीलिङ्ग

या लता, यायो लतायो, यं लतं, यायो लतायो, याय लताय, याहि लताहि इत्यादि।

(ख)* कृदन्त के कुछ और उदाहरण—

धातु	कृदन्त	अर्थ
अनु + सास	अनुसिट्ठो	अनुशासन किया गया
अभि + भू	अभिभूतो	हराया गया
आ + मस	आमट्ठो	छुआ गया
इसु	इट्ठो	इच्छा किया गया
छिदि	छिन्नो	तोड़ा गया
जि	जितो	जीता गया
ञा	ञातो	जाना गया
दंस	दट्ठो	डँसा गया

*ये अतीत कालिक कृदन्त कर्म के अनुसार लिङ्ग और वचन ग्रहण करते हैं।

दिस	देसितो	उपदेश दिया गया
नस	नासितो	नष्ट किया गया
नि + वस	निवत्थो	पहना गया
परि + वु	परिवुतो	घेरा गया
प + संस	पसत्थो	प्रशंसा किया गया
पा	पीतो	पिया गया
फुस	फुट्ठो	स्पर्श किया गया
बध	बद्धो	बाँधा गया
भज्ज	भट्ठो	भूना गया
भिद	भिन्नो	फोड़ा गया
भुज	भुत्तो	खाया गया
रक्ख	रक्खितो	रक्षा किया गया
लभ	लद्धो	पाया गया

(ग) कुछ अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द –

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
अजगर	अजगर	**तिस्स**	एक नाम
ओरोध	अन्तःपुर	**निलय**	घर
कट	चटाई	**पथिक**	पथिक
कम्मकार	मजदूर	**पाद**	पैर
घट	घड़ा	**मञ्च**	खाट
जातवेद	आग	**मोह**	मूर्खता
पयागतित्थं	प्रयागतीर्थ	**सिद्धत्थ**	सरसों

१७ –अभ्यास

(क) हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

१. कदा तिस्सेन रञ्ञा गामो लद्धो ? २. कुमारेन बाराणसियं तस्स मनुस्सस्स रूपं दिट्ठं ३. तेन तापसेन कोधो अभिभूतो । ४. साव-

त्थियं बुद्धेन धम्मो देसितो। ५. तेन समणेन वनं गन्त्वा तत्थ वसित्वा मोहो जितो। ६. अजगरेन दट्ठो पथिको तस्मिं निलये मतो। ७. ब्राह्मणेहि परिवुतो सो राजा पयागतित्थं अगमासि। ८. कविना इट्ठो कटो चोरेन नासितो। ९. कम्मकारेन सो घटो भिन्नो। १०. जातवेदेन निलयो फुट्ठो। ११. तिस्सेन तस्सा या नासिका छिन्ना, सा जाता। १२. यो सिगालो कुक्कुटं खादि, सो तस्स ब्राह्मणस्स पुत्तेन नासितो। १३. वानताय यं वत्थ निवत्थं, तं अग्गिना आमट्ठं। १४. तच्छकेन यो मञ्चो पसत्थो सो पितरा छिन्नो। १५. गावेन खेत्ते जलं पीतं। १६. सारथिना रथे गावो बद्धा। १७. दासेन सिद्धत्थो भट्ठो। १८. अहिना यो मणि रक्खितो सो रञ्ञा लद्धो।

(ख) पालि में अनुवाद कीजिए—

१. दास द्वारा पानी पिया गया। २. लड़के द्वारा दास जीता गया। ३. कर्मचारी द्वारा घड़ा फोड़ा गया। ४. आरी द्वारा पेड़ काटा गया। ५. आचार्य द्वारा जो अजगर देखा गया, उस अजगर द्वारा हिरण खाया गया। ६. राजा द्वारा एक स्कूल शुरू किया गया। ७. तापस द्वारा एक फल खाया गया। ८. आदमी द्वारा वह दुश्मन हराया गया। ९. किसान द्वारा जो बैल बाँधा गया सो बैल मरगया। १०. पथिक ने जिस ब्राह्मण की प्रशंसा की उस ब्राह्मण द्वारा मेरा वस्त्र लिया गया। ११. तरुण द्वारा भोजन की इच्छा की गई। १२. रसोइया द्वारा सब्जी भूने गये। १३. साँप द्वारा जो आदमी डँसा गया वैद्य द्वारा वह आदमी बचाया गया। १४. तापस द्वारा उपदेश दिया गया। १५. पुत्र द्वारा घर की रक्षा की गई। १६. पण्डित द्वारा पुस्तक की प्रशंसा की गई। १७. मित्र द्वारा दुश्मन हराया गया। १८. शेर द्वारा हरिण खाया गया।

———

पाठ—१८

(क) सर्वनाम

'इम' शब्द (=यह)

पुल्लिङ्ग

	एकवचन	बहुवचन
१. पठमा—	अयं	इमे
२. दुतिया—	इमं	इमे
३. ततिया—	अनेन, इमिना	एभि, एहि, इमेभि, इमेहि
४. चतुत्थी—	अस्स, इमस्स	एसं, एसानं, इमेसं, इमेसानं
५. पंचमी—	अस्मा, इमम्हा, इमस्मा	एभि, एहि, इमेभि, इमेहि
६. छट्ठी—	अस्स, इमस्स	एसं, एसानं, इमेसं, इमेसानं
७. सत्तमी—	अस्मिं, इमम्हि, इमस्मिं	एसु, इमेसु

नपुंसक लिङ्ग

	एकवचन	बहुवचन
१. पठमा—	इदं, इमं	इमे, इमानि
२. दुतिया—	इदं, इमं	इमे, इमानि

शेष पुल्लिङ्ग के समान होंगे।

स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	बहुवचन
१. पठमा—	अयं,	इमा, इमायो
२. दुतिया—	इमं	इमा, इमायो
३. ततिया—	इमाय	इमाभि, इमाहि
४. चतुत्थी—	अस्साय, अस्सा, इमिस्साय, इमिस्सा, इमाय	इमासं, इमासानं

५. पंचमी—	इमाय	इमाभि, इमाहि
६. छट्ठी—	अस्साय, अस्सा, इमिस्साय, इमिस्सा, इमाय	इमासं, इमासानं
७. सत्तमी—	अस्सं, इमिस्सं, इमायं	इमासु

(स) कुछ धातुओं के द्रष्टव्य रूप—

दुहादि धातु	वत्तमान	अज्जतनो	अनागत	कमकारक कृदन्तनाम❀
दुह	दोहति	दोहि, अदोहि	दोहिस्सति	दुद्धो
याच	याचति	याचि, अयाचि	याचिस्सति	याचितो
रुधि (रुन्ध)	रुन्धति	रुन्धि, अरुन्धि	रुन्धिस्सति	रुद्धो
पुच्छ	पुच्छति	पुच्छि, अपुच्छि	पुच्छिस्सति	पुट्ठो
भिक्ख	भिक्खति	भिक्खि, अभिक्खि	भिक्खिस्सति	भिक्खितो
सास	सासति	सासि, असासि	सासिस्सति	सिट्ठो
वच	वचति	वचि, अवचि	वक्खिस्सति	वुत्तो
दण्ड	दण्डेति	दण्डि, अदण्डि	दण्डिस्सति	दण्डितो

❀ अर्थ

दुहता है।	दुहा।	दुहेगा।	दुहा गया।
माँगता है।	माँगा।	माँगेगा।	मँगाया गया।
घेरता है।	घेरा।	घेरेगा।	घेराया गया।
पूछता है।	पूछा।	पूछेगा।	पूछा गया।
माँगता है।	माँगा।	माँगेगा।	मँगाया गया।
अनुशासन करता है।	अनुशासन किया।	अनुशासन करेगा।	अनुशासन किया गया।
बोलता है।	बोला।	बोलेगा।	बोला गया।
सजा देता है।	सजा दिया।	सजा देगा।	सजा दिया गया।

न्यादिधातु	वत्तमान	अज्जतनी	अनागत	कर्मकारक कृदन्तनाम❀
नी	नयति,	नेति नयि,	अनयि, नेसि नयिस्सति,	नेस्सति नीतो
वह	वहति	वहि,	अवहि वहिस्सति	वुल्हो
हर	हरति	हरि,	अहरि हरिस्सति	हटो
आकड्ढ	आकड्ढति	आकड्ढि	आकड्ढिस्सति	आकड्ढितो

नोट—उपरोक्त दुहादि और न्यादि धातुओं की क्रिया वाक्यों के प्रयोग में दो कर्म ग्रहण करती हैं।

(ग) कुछ अन्य शब्द—

शब्द		अर्थ	शब्द		अर्थ
अक्खदस्स	(पु०)	न्यायाधीश	वज	(पु०)	गोशाला
तण्डुल	(न०)	चावल	व्याध	(पु०)	बहेलिया
धनी	(पु०)	धनी	विप्प	(पु०)	ब्राह्मण
भत्त	(न०)	भात	सतसहस्स	(न०)	एक लाख
भार	(पु०)	बोझ	सहस्स	(न०)	एक हजार

१८—अभ्यास

(क) हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

१. तेन रञ्ञा अयं गामो सहस्सं दण्डितो। २. अनेन गोपालेन धेनु खीरं दुद्धा। ३. इमिना सिस्सेन गरु धम्मं पुट्ठो। ४. येन विप्पेन अयं जनो तण्डुलं भिक्खितो, तेन भत्तं पचितं। ५. यदा याचकेन

❀ अर्थ

ले जाता है। ले गया। ले जायेगा। ले जाया गया।
ढोता है। ढोया। ढोयेगा। ढोया गया।
ले जाता है। ले गया। ले जायेगा। ले जाया गया।
खींचता है। खींचा। खींचेगा। खींचा गया।

धनी धनं याचितो, तदाहं गामं अगमिं। ६. गोपालेन बजो गावं रुद्धो। ७. वनिताय दासो कत्तब्बं वुत्तो। ८. आचरियेन सिस्सो धम्मं अनुसिट्ठो। ९. व्याधेन मिगो गामं आकड्ढितो। १०. दासेन भारो गामं वुल्हो। ११. नरेन गद्रभो नगरं नीतो। १२. कस्सकेन वीहयो खेत्तं हटा। १३. तस्सा वनिताय पति दासेन सद्धिं बाराणसिं गन्त्वा आगतो। १४. इमस्मिं कुले दारका रक्खसेन खादिता। १५. अस्स पिता बोधिमण्डं गन्त्वा पुप्फानि पूजेत्वा वीतरागेन सद्धिं पाटलिपुत्त नगरं अगमासि। १६. अनेन छिन्दितो रुक्खो तच्छकेन तच्छितो।

(ख) पालि में अनुवाद कीजिए—

१. न्यायाधीश ने बनियापर एक लाख का जुर्माना किया। २. उस औरत ने बकरी से दूध दुह लिया। ३. पथिक द्वारा वैद्य से रास्ता पूछा गया। ४. दास द्वारा रानी से एक कपड़ा मँगाया गया। ५. ब्राह्मण द्वारा किसान से भोजन मँगाया गया। ६. किसान द्वारा बैल खेत में बाँधे गये। ७. राजा द्वारा मंत्री को कर्तव्य बताया गया। ८. भिक्षु द्वारा चेले को उपदेश दिया गया। ९. हाथी द्वारा पेड़ गाँव में खींचा गया। १०. वैद्य द्वारा कपड़ा गाँव में भेजा गया। ११. अधिपति द्वारा राजा को हाथी लाया गया। १२. पिता द्वारा बेटे केलिए किताब लायी गई। १३. उस धाई का भतीजा कुमार के साथ तुरन्त बगीचे में जाता है।

पाठ—१९

(क) 'वन्तु' और 'मन्तु' प्रत्ययान्त शब्द

'वाला' के अर्थ में नाम के आगे 'वन्तु' तथा **'मन्तु'** प्रत्यय लगते हैं। अकारान्त या आकारान्त शब्दों के आगे **'वन्तु'** तथा भिन्न स्वरान्त शब्दों के आगे **'मन्तु'** प्रत्यय लगते हैं। जैसे—**गुणवन्तु**—गुणवाला। **गतिमन्तु**=गतिवाला।

'वन्तु' और **'मन्तु'** प्रत्ययान्त शब्द के रूप नपुंसक लिङ्ग में भी वैसे ही होते हैं, जैसे पुल्लिङ्ग में। केवल पठमा एकवचन में **'गुणवं'** तथा **'गुणवन्तं'** रूप होते हैं एवं पठमा और दुतिया के बहुवचन में **'गुणवन्तानि'**।

स्त्रीलिङ्ग में **'वन्तु'** का **'वती'** तथा **'वन्ती'**, और **'मन्तु'** का **'मती'** तथा **'मन्ती'** हो जाता है। जैसे—**'गुणवती—गुणवन्ती'**, **'सिरिमती—सिरिमन्ती'**। इसके रूप ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग **'इत्थी'** शब्द के समान होते हैं।

'गुणवन्तु' शब्द (=गुणवाला)

पुल्लिङ्ग

	एकवचन	बहुवचन
१. पठमा—	गुणवा	गुणवन्तो, गुणवन्ता
२. दुतिया—	गुणवन्तं	गुणवन्ते
३. तितिया—	गुणवता, गुणवन्तेन	गुणवन्तेभि, गुणवन्तेहि
४. चतुत्थी—	गुणवतो, गुणवन्तस्स	गुणवतं गुणवन्तानं
५. पञ्चमी—	गुणवता, गुणवन्तम्हा गुणवन्तस्मा	गुणवन्तेभि, गुणवन्तेहि
६. छट्ठी—	गुणवतो, गुणवन्तस्स	गुणवतं, गुणवन्तानं

७. सत्तमी —	गुणवति, गुणवन्ते गुणवन्तम्हि, गुणवन्तस्मिं	गुणवन्तेसु
८. आलपन—	(हे) गुणवं, गुणव, गुणवा	(हे) गुणवन्तो, गुणवन्ता

नपुंसकलिङ्ग

	एकवचन	बहुवचन
१. पठमा —	गुणवं, गुणवन्तं	गुणवन्ता, गुणवन्तानि
२. दुतिया—	गुणवं, गुणवन्तं	गुणवन्ता, गुणवन्तानि

शेष पुल्लिङ्ग के समान होंगे।

'गुणवती' शब्द

स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	बहुवचन
१. पठमा—	गुणवन्ती	गुणवन्ती, गुणवन्तियो
२. दुतिया—	गुणवन्तिं	गुणवन्ती, गुणवन्तियो
३. तितिया—	गुणवन्तिया	गुणवन्तीभि, गुणवन्तीहि
४. चतुत्थी—	गुणवन्तिया	गुणवन्तीनं
५. पंचमी—	गुणवन्तिया	गुणवन्तीभि, गुणवन्तीहि
६. छट्ठी—	गुणवन्तिया	गुणवन्तीनं
७. सत्तमी—	गुणवन्तिया, गुणवन्तियं	गुणवन्तीसु
८. आलपन—	(हे) गुणवन्ती	(हे) गुणवन्ती गुणवन्तियो

'वन्तु'-'मन्तु' प्रत्ययान्त इन शब्दों के रूप भी 'गुणवन्तु' शब्द के रूप के समान होंगे—

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
कसिमन्तु	कृषिवाला	धनवन्तु	धनवाला
कुलवन्तु	कुलवाला,	धितिमन्तु	धीरजवाला

चक्खुमन्तु	आँखवाला	यसवन्तु	यशवाला
जुतिमन्तु	चमकवाला	रुचिमन्तु	रुचिवाला
सतिमन्तु	स्मृतिवाला	भानुमन्तु	प्रकाशवाला
पञ्ञावन्तु	प्रज्ञावाला	मघवन्तु	यज्ञवाला (=इन्द्र)
बलवन्तु	बलवाला	सीलवन्तु	शीलवाला
बुद्धिमन्तु	बुद्धिवाला	हिमवन्तु	हिमवाला
भगवन्तु	भाग्यवाला	फलवन्तु	फलवाला

(ख) 'न्त' प्रत्ययान्त शब्द

जाते हुए, करते हुए आदि के अर्थ में धातु के परे **'न्त'** प्रत्यय लगता है। ऐसे प्रत्ययान्त शब्द विशेषण होते हैं। इसके रूप पुल्लिङ्ग में **'पुरिस'** शब्द के समान, नपुंसक लिङ्ग में **'कुल'** शब्द के समान तथा स्त्रीलिङ्ग में **'लता'** शब्द के समान होंगे।

'गच्छन्त' शब्द (=जाता हुआ)

पुल्लिंग

	एकवचन	बहुवचन
१. पठमा—	गच्छं, गच्छन्तो	गच्छन्तो, गच्छन्ता
२. दुतिया—	गच्छन्तं	गच्छन्ते
३. ततिया—	गच्छता, गच्छन्तेन	गच्छन्तेभि, गच्छन्तेहि
४. चतुत्थी—	गच्छतो, गच्छन्तस्स	गच्छतं, गच्छन्तानं
५. पचमी—	गच्छता, गच्छन्तम्हा गच्छन्तस्मा	गच्छन्तेभि, गच्छन्तेहि
६. छट्ठी—	गच्छतो, गच्छन्तस्स	गच्छतं, गच्छन्तानं
७. सत्तमी—	गच्छति, गच्छन्ते गच्छन्तम्हि, गच्छन्तस्मिं	गच्छन्तेसु
८. आलपन—	(हे) गच्छं, गच्छ, गच्छा	(हे) गच्छन्तो, गच्छन्ता

'गच्छन्त' शब्द
नपुंसक लिङ्ग

	एकवचन	बहुवचन
१. पठमा—	गच्छं, गच्छन्तं	गच्छन्ता, गच्छन्तानि
२. दुतिया—	गच्छन्तं	गच्छन्ते, गच्छन्तानि

शेष पुल्लिङ्ग के समान होंगे।

'गच्छन्ती' शब्द
स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	बहुवचन
१. पठमा—	गच्छ ती	गच्छन्ती, गच्छन्तियो
२. दुतिया—	गच्छन्तिं	गच्छन्ती, गच्छन्तियो
३. ततिया—	गच्छन्तिया	गच्छन्तीभि, गच्छन्तीहि
४. चतुत्थी—	गच्छन्तिया	गच्छ तीनं
५. पंचमी—	गच्छन्तिया	गच्छ तीभि, गच्छन्तीहि
६. छट्ठी —	गच्छन्तिया	गच्छन्तीनं
७. सत्तमी—	गच्छन्तिया, गच्छन्तियं	गच्छन्तीसु
८. आलपन—	(हे) गच्छन्ति	(हे) गच्छन्ती, गच्छन्तियो

'न्त' प्रत्ययान्त शब्द के उदाहरण—

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
गच्छन्त	जाता हुआ	विहरन्त	रहता हुआ
चरन्त	विचरता हुआ	ददन्त	देता हुआ
मीयन्त	मरता हुआ	भुञ्जन्त	खाता हुआ
सुणन्त	सुनता हुआ	पचन्त	पकाता हुआ
जयन्त	जीतता हुआ	कुब्बन्त	करता हुआ

नोट—गुणवन्तु, गच्छन्त आदि शब्द बहुधा भाषा में अन्य शब्दों के साथ विशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं। कोई कोई शब्द अकेला प्रयुक्त होकर अर्थ प्रकाश करते हैं। विशेष्य विशेषण के ही लिङ्ग विभक्ति तथा वचन ग्रहण करते हैं। "**धनवन्ता (चरन्ता) पुरिसा धम्मं सुणन्ति**" धनवाले (विचरते हुए) आदमी उपदेश सुनते हैं।' यहाँ '**पुरिसा**' विशेष्य पद तथा पुल्लिङ्ग प्रथमा विभक्ति बहुवचन है। इसलिए '**धनवन्ता, चरन्ता**' ये दोनों विशेषण पद इसी विशेष्य की तरह लिङ्ग विभक्ति तथा वचन ग्रहण करते हैं।

'**धनवन्ती (चरन्ती) वनिता धम्मं सुणाति**' यहाँ '**वनिता**' प्रधान पद अर्थात् विशेष्य स्त्रीलिङ्ग प्रथमा एक वचनान्त होने के कारण '**धनवन्ती, चरन्ती**' ये दोनों विशेषण पद भी स्त्रीलिङ्ग प्रथमा एक वचन हो गये हैं। (उपरोक्त गुणवाचक शब्द के आगे स्वर लोप करके 'इ' प्रत्यय करने से स्त्रीलिङ्गिक गुणवाचक शब्द बन जाता है।)

'**धनवन्तं (चरन्त) कुलं धम्मं सुणाति,** यहाँ '**कुलं**' विशेष्य पद नपुंसक लिङ्गिक एक वचन होने के कारण '**धनवन्तं, चरन्तं** ये दोनों विशेषण पद भी नपुंसक लिङ्गिक प्रथमा एक वचन हो गये हैं।

'**ब्राह्मणो धनवन्तं (चरन्तं) पुरिसं वत्थं याचति**' यहाँ '**पुरिसं**' 'याचति' क्रिया का अनुक्त कर्म होने के कारण 'दुतिया' एक वचन हो गया है। इसके साथ विशेषण होनेवाला **धनवन्तं चरन्तं**" ये दोनों पद दुतिया विभक्ति एक वचन हो गये हैं।

उपरोक्त '**गच्छन्त**' आदि शब्दों का क्रिया की तरह भी भाषा में प्रयोग होता है। '**पुरिसो गामं गच्छन्तो फलं खादति**' पुरुष गाँव जाता हुआ फल खाता है। यहाँ '**गच्छन्तो**' पद जाता हुआ क्रिया के अर्थ का भी द्योतक है।

(ग) कुछ अन्य शब्द—

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
अनाथपिण्डिक	(पु०) एक सेठ	नन्दनवन	(न) एकउद्यान
आकास	(पु०) आसमान	नील	(पु०) एकयोधा
आभरण	(न०) गहना	पञ्ह	(पु०) प्रश्न
उपासक	(पु०) उपासक	पत्त	(पु०) पात्र
चक्खुपाल	(पु०) एक स्थविर	महोसध	(पु०) एकपण्डित
देवपुत्त	(पु०) देवपुत्र	विसाखा	(इ० एकउपासिका
देवानम्पियतिस्स	(पु०) एक राजा	सीह	(पु०) शेर
नन्दकुमार	(पु०) एक कुमार	सुमेध	(पु०) एक तापस
सेनक	(पु०) एक पण्डित		

१९—अभ्यास

(क) हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

१. कसिमा पुरिसो खेत्तं गच्छन्तो फलं खादति। २. कुलवती कञ्ञा मुनिनो दान अददि। ३. चक्खुमन्तो पुरिसा धम्मं सुणन्ति। ४. जुतिमन्तियो तारकायो आकासे चरन्ति। ५. धनवता अनाथपिण्डिकेन सावत्थियं विहारो कतो। ६. धितिमा तापसो सीलं रक्खति। ७. पञ्ञवा सुमेधता सो आकासेन गच्छं मनुस्से ओलोकेसि। ८. बलवा योधो अरिनो सीसं छिन्दि। ९. बुद्धिमा महोसधो कुम्भकारस्स कम्मं अकासि। १०. भगवा सावत्थियं वसन्तो धम्मं देसेसि। ११. भानुमा आकासे चरन्तो आलोकं ददाति। १२. मघवा चक्खुपालस्स सन्तिकं अगमासि। १३. यसवती विसाखा भिक्खुनो दानं ददाति। १४. सतिमा उपासको विहारं गच्छन्तो भूमियं पति १५. सीलवा भिक्खु वनं गन्त्वा फलानि एव भुञ्जन्तो सील रक्खति। १६. भगवा बाराणसियं धम्मं देसेसि।

(ख) पालि में अनुवाद कीजिए—

१. अधिपति नगर जाता हुआ किसान के घर में आया। २. अनाथपिण्डिक सेठ ने जेतवनाराम में आकर बुद्ध से उपदेश सुना। ३. महिन्द स्थविर ने देवानम्पियतिस्स राजा से प्रश्न पूछा। ४. किसान ने मरनेवाले बैल को गोशाला से मुक्त किया। ५. बुद्धिमान सेनक ने दुश्मन से धन लेकर ब्राह्मण को दिया। ६. भगवान बुद्ध ने विहार में जाते हुए नन्द को पात्र दिया। ७. इन्द्र देवताओं के साथ नन्दनवन जाते हुए एक देवपुत्र को देखा। ८. उस औरत ने तापस को भोजन दिया। ९. स्मृतिमान वैद्य लड़के को दवा देकर घर गया। १०. शीलवान् उपासक मरकर देवलोक में पैदा हुआ। ११. हिमालय में हाथी, शेर तथा तापस रहते हैं।

———

पाठ— ०

सर्वनाम

(क) 'सब्ब' शब्द (=सब)

पुल्लिंग

	एकवचन	बहुवचन
१. पठमा—	सब्बो	सब्बे
२. दुतिया—	सब्बं	सब्बे
३. तत्तिया—	सब्बेन	सब्बेभि, सब्बेहि
४. चतुत्थी—	सब्बस्स	सब्बेसं, सब्बेसानं
५. पंचमी—	सब्बम्हा, सब्बस्मा	सब्बेभि, सब्बेहि
६. छट्ठी—	सब्बस्स	सब्बेसं, सब्बेसानं
७. सत्तमी—	सब्बम्हि सब्बस्मिं	सब्बेसु

नपुंसक लिङ्ग

	एकवचन	बहुवचन
१. पठमा—	सब्बं	सब्बानि
२. दुतिया—	सब्बं	सब्बानि

शेष पुल्लिङ्ग के समान होंगे।

'सब्बा' शब्द

'स्त्रीलिंग'

	एकवचन	बहुवचन
१. पठमा—	सब्बा	सब्बा, सब्बायो
२. दुतिया—	सब्बं	सब्बा, सब्बायो
३. तितिया—	सब्बाय	सब्बाभि, सब्बाहि
४. चतुत्थी—	सब्बस्सा, सब्बाय	सब्बासं, सब्बासानं

५. पंचमी –	सब्बाय	सब्बाभि, सब्बाहि
६. छट्ठी—	सब्बस्सा, सब्बाय	सब्बासं, सब्बासानं
७. सत्तमी –	सब्बस्सं, सब्बायं	सब्बासु

इन सर्वनाम शब्दों के रूप भी 'सब्ब' शब्द के रूप के समान होंगे –

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
अञ्ञ	अन्य	कतम	कौन सा
अञ्ञतम	अन्यतम	कतर	कौन
अञ्ञतर	कोई	इतर	दूसरा, अन्य

(ख) 'क' शब्द (=कौन)

पुल्लिङ्ग

	एकवचन	बहुवचन
१. पठमा –	को	के
२. दुतिया –	कं	के
३. ततिया –	केन	केभि, केहि
४. चतुत्थी –	कस्स, किस्स	केसं, केसानं
५. पंचमी –	कस्मा, कस्मा, किस्मा	केभि, केहि
६. छट्ठी –	कस्स, किस्स	केसं, केसानं
७. सत्तमी –	कस्मि, कस्सिं, किस्मि, किस्सिं	केसु

नपुंसक लिङ्ग

	एकवचन	बहुवचन
१. पठमा –	किं, कं	के, कानि
२. दुतिया—	किं, कं	के, कानि

शेष पुल्लिङ्ग के समान होंगे।

'का' शब्द

स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	बहुवचन
१. पठमा –	का	का, कायो
२. दुतिया –	कं	का, कायो
३, ततिया –	काय	काभि, काहि
४. चतुत्थी –	कस्सा, काय	कासं, कासानं
५. पंचमी –	काय	काभि, काहि
६. छट्ठी –	कस्सा, काय	कासं, कासानं
७. सत्तमी –	कस्सं, कायं	कासु

२०—अभ्यास

(क) हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

१. सब्बे नरा विहारं गन्त्वा पुप्फेहि बुद्धं पूजेत्वा गामं गच्छन्ति। २. सब्बायो इत्थियो नदिं गन्त्वा नहात्वा अञ्ञतरं नावं पस्सन्तियो च तिट्ठन्ति। ३. सब्बानि पुप्फानि रुक्खम्हा पतिंसु। ४. ससुरस्स माता तस्सा पुत्तं आचरियस्स अदासि। ५. सब्बेसं कुमारानं पितरो वीथिं गन्त्वा सालायं ठत्वा धम्मं सुणिंसु। ६. सुवो पञ्जरम्हा वनं गच्छति। ७. सब्बेहि ब्राह्मणेहि धनवन्तो भिक्खं याचता। ८. को इध रोदन्तो भत्तं भुञ्जति? ९. का वनिता रञ्ञो सन्तिकं अगमासि? १०. इतरो सग्गे उप्पज्जित्वा सुखं लभति। ११. दासो अञ्ञानि फलानि अपि कुमारानं ददाति। १२. त्वं कस्सकस्स पुत्तो भवसि। १३. कतमस्मिं वनस्मिं अरयो गेहं कत्वा भरियाय सद्धिं वसन्ति? १४. इतरेसु रुक्खेसु ठत्वा सब्बे कपयो फलानि खादन्ति। १५. तुम्हेहि गामं गन्त्वा किं कुसलं कतं? १६. राजा सब्बासं इत्थीनं आभरणानि अदासि।

(ख) पालि में अनुवाद कीजिए –

१. सभी बकरियों ने खेत में जाकर घास खायी। २. बन के सभी दीमक के घरों में साँप रहते हैं। ३. नदी में गये हुए कुत्ते को किसान ने मारा ४. सभी मुर्गे पेड़पर जाकर शब्द करते हैं। ५. पिता ने दूसरे पेड़ की टहनियाँ काटीं। ६. किस आदमी ने दुश्मन को तलवार दी ? ७. उसने पण्डित की कौन कौन किताबें चोरी की ? ८. किसान दूसरे बैल को पेड़ में बाँध कर गंगा में गया। ९. साँप ने तुमको दूसरा माणिक्य दिया। १०. किस वन से हाथियों ने टहनी तोड़कर खायी ? ११. हम नगर जाकर कि आदमी के घर जायें ? १२. तुम सब लोग दूकान में जाकर सामान ले रात में मेरे घर में आओगे। १३. हम लोग मामा के घर में जायेंगे। १४. आपके मामा कौन हैं ? मैं उसे नहीं जानता। १५. उस नगर में एक वैद्य है, वह हमारा मामा है। १६. वह मामा हम लोगों को भोजन और कपड़ा देता है।

पाठ—२१

ईकारान्त पुल्लिङ्ग

'दण्डी' शब्द (= लाठीवाला)

	एकवचन	बहुवचन
१. पठमा –	दण्डी	दण्डी, दण्डिनो
२. दुतिया –	दण्डिनं, दण्डिं	दण्डी, दण्डिनो
३. ततिया—	दण्डिना	दण्डीभि, दण्डीहि
४. चतुत्थी—	दण्डिनो, दण्डिस्स	दण्डीनं
५. पंचमी —	दण्डिना, दण्डिम्हा, दण्डिस्मा	दण्डीभि दण्डीहि
६. छट्ठी—	दण्डिनो, दण्डिस्स	दण्डीनं
७. सत्तमी—	दण्डिनि, दण्डिम्हि, दण्डिस्मिं	दण्डिसु, दण्डीसु
८. आलपन—	(हे) दण्डि	(हे) दण्डी, दण्डिनो

इन ईकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के रूप भी 'दण्डी' शब्द के रूप के समान होंगे—

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
पक्खी	पंखवाला	करो	हाथी
दाठी	बाघ	बली	बलवान्
सामो	स्वामी	धजो	ध्वजवाला
कुट्ठी	कुष्ठरोगी	पापकारी	पापी
सिखी	मोर	धम्मवादी	धर्मवादी
दन्ती	हाथी	दीघजीवी	दीर्घजीवी
मन्ती	मंत्री	सीघयायी	शीघ्रगामी

छत्ती	छत्र धारणकरनेवाला	धम्मी	धर्मी
माली	माली	चागी	त्यागी
गणी	गणवाला	ञानी	ज्ञानी

२१—अभ्यास

(क) हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

१. बली फरसुना तरुं छिन्दिस्सति। २. बलिनो फरसूहि अम्हं तरवो छिन्दिस्सन्ति। ३. दण्डिनो दण्डेहि पक्खी मारेस्सन्ति। ४. भिक्खवो कस्सकानं धम्मं देसेस्सन्ति। ५. तुम्हाकं रुक्खेसु पक्खिनो भवन्ति। ६. गामे दारका हत्थिम्हा भायिस्सन्ति। ७. पापकारिनो वेलूहि दाठिनो पहरिस्सन्ति। ८. सामिनो ससिनं ओलोकेस्सति। ९. मयं सामिनो उच्छुवो खादिस्साम। १० गरुनो सिखी दण्डिम्हा भायिस्सति। ११. भोगिनो सीघयायिनो होन्ति। १२. धम्मवादिनो दीघजीविनो भविस्सन्ति। १३. पापकारी दीघजीवी न भविस्सति। १४. मयं धम्मवादिनो भविस्साम।

(ख) पालि में अनुवाद कीजिए—

१. गणवाला बलवान् होगा। २ बलवाले लाठियों से दुश्मनों को मारेंगे। ३. बढ़ई कुल्हाड़ी से पेड़ों को काटेगा। ४. लड़के लाठियों से चिड़ियों को मारेंगे। ५. लोग राजा के हाथियों को देखेंगे। ६. लाठीवाला लाठी से कुष्टरोगी को मारेगा। ७. तुम दुश्मनों को मत मारो। ८. मैं कुल्हाड़ी से बाँसों को काटूँगा। ९. हम अपने हाथी की पीठपर चढ़ेंगे। १०. धर्मवादी बहुत दिन जीयेगा। ११. बलवाला तुम्हारी कुल्हाड़ी मुझे देगा। १२. धर्मवादी हमलोगों के गाँव में रहेंगे। १३. मेरी ऊख तुम लोग खाओगे। १४. तुम लोगों के दुश्मन गाँव से जायेंगे।

पाठ—२२

(क) ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग

'इत्थी' शब्द (=स्त्री)

	एकवचन	बहुवचन
१. पठमा—	इत्थी	इत्थी, इत्थियो
२. दुतिया—	इत्थियं, इत्थिं	इत्थी, इत्थियो
३. तिया—	इत्थिया	इत्थीभि, इत्थीहि
४. चतुत्थी—	इत्थिया	इत्थीनं
५. पंचमी—	इत्थिया	इत्थीभि, इत्थीहि
६. छट्ठी—	इत्थिया	इत्थीनं
७. सत्तमी—	इत्थियं, इत्थिया	इत्थीसु
८. आलपन—	(हे) इत्थि	(हे) इत्थी, इत्थियो

ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द जिनके रूप भी 'इत्थी' शब्द के समान होंगे—

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
मही	पृथ्वी	गन्धब्बी	गान्धर्व स्त्री
वापी	जलाशय	किन्नरी	किन्नरी
पाटली	पाण्डुफली	नागी	नागिन
कदली	केला	देवी	देवी
घटी	गगरी	यक्खी	यक्षी
नारी	नारी	अजी	बकरी
कुमारी	कुमारी	मिगी	मृगी
तरुणी	तरुणी	हत्थिनी	हथिनी
भगिनी	बहिन	वानरी	बानरी

ब्राह्मणी	ब्राह्मणी	सूकरी	सूकरी
सखी	सखी	सीही	सिंही
दासी	दासी	हंसी	हंसी
कुक्कुटी	मुर्गी	काकी	कौवी
गावी	गाय	राजिणी	रानी

(ख) पूर्वकालिक क्रिया 'त्वा' प्रत्ययान्त

पूर्वक्रिया	अर्थ	पूर्वक्रिया	अर्थ
धावित्वा	दौड़कर	खादित्वा	खाकर
आगन्त्वा	आकर	नहात्वा	नहाकर
निसीदित्वा	बैठकर	उट्ठहित्वा	उठकर
लभित्वा	पाकर	विक्किनित्वा	बेचकर

कुछ और भिन्न पूर्वकालिक क्रिया

पूर्वक्रिया	अर्थ	पूर्वक्रिया	अर्थ
आगम्म	आकर	निक्खम्म	निकल कर
ओरुह्य	उतरकर	लद्धान	पाकर
आरुह्य	चढ़कर	कातून	करके
		लद्धा	पाकर

२२—अभ्यास

(क) हिन्दी में अनुवाद कोजिए—

१. ब्राह्मणी नदियं नहात्वा गेहं अगमासि । २. नागियो ओदनं पचित्वा भुञ्जित्वा कुक्कुटीनं अदंसु । ३. सीहि मिगिं मारेत्वा खादि । ४. तरुणी गेहं गन्त्वा भुञ्जित्वा सयि । ५. कुमारियो वापिं गन्त्वा कीलिंसु । ६. राजिणी दीपा निक्खम्म नावाय गमिस्सति । ७. काकी साखाय निसीदित्वा रवि । ८. वानरी इत्थियो पस्सित्वा तरुं आरुह्य निसीदि । ९. कुक्कुटा रत्तियं सयित्वा उट्ठहित्वा रवन्ति । १०. तरुणियो

वापियं नहात्वा गेहं गन्त्वा भुञ्जिसु । ११. त्वं गामं गन्त्वा दुन्दुभिं आनेहि । १२. तुम्हे दोणिया नदिं तरथ । १३. किन्नरियो अटवीसु वसन्ति । १४. वानरी तरुं आरुह्य अङ्गुलीहि साखं गण्हि । १५. तुम्हे वापिं तरित्वा अटविं गच्छथ । १६. मिगी भूमियं सयित्वा उट्ठहित्वा धावि । १७. ब्राह्मणिया असनि पति । १८. व्यग्घा अटवियं ठत्वा मनुस्से मारेत्वा खादन्ति । १९. युवतीनं पितरो गेहं गन्त्वा भुञ्जित्वा सयिंसु । २० वाणिजस्स पुत्तो कीलित्वा नहात्वा भुञ्जि । २१. हत्थिनो अटविया गामं आगन्त्वा गच्छन्ति । २२. भगिनी हत्थेहि साखं आदाय आकड्ढि ।

(ख) पालि में अनुवाद कीजिए—

१. तुम लोग नाव से नदी पार करोगे । २. शेरनियों ने बन में हरिणियों को मार कर खाया । ३. ब्राह्मणी ने जंगल से एक किन्नरी को लाया । ४. तरुणी का भाई गाँव में जा खाना खाकर सो गया । ५. मैं जलाशय में नहा घर जाकर आऊँगा । ६. बकरी पेड़ की एक टहनी पर चढ़कर रहती है । ७. तुम गाँव में जाकर एक केला का पेड़ ले आओ । ८. स्त्रियों के पतियों ने जंगल में एक शेर को मारा । ९. कुमारी के भाई ने खेल कर भात खाया । १०. ब्राह्मणी की सखियों ने गंगा में नहा भात पकाकर खाया । ११. शेर जंगल में रह हाथियों को मारकर खाते हैं । १२. कुमारी का पिता भोजन कर सोयेगा । १३. ब्राह्मणी ने रात में भोजन पकाकर खाया । १४. हम लोग गाँव में जा एक बाजा लाये हैं । १५. हमारे भाइयों ने जंगल में जाकर एक हरिण को मारा । १६. तरुणियों का पिता जमीनपर गिरा (=पति) । १७. रानी नाव से आकर गाँव में जायेगी । १८. स्त्री का भतीजा मदिरा पीकर सोता है । १९. बिजली पेड़ पर गिरी । २०. हम लोग जलाशय में जा नहाकर गाँव में आ पका-खाकर सोयेंगे ।

पाठ –२३

ऊकारान्त पुल्लिङ्ग

'सब्बञ्ञू' शब्द (=सर्वज्ञ)

	एकवचन	बहुवचन
१. पठमा—	सब्बञ्ञू	सब्बञ्ञुनो, सब्बञ्ञू
२. दुतिया—	सब्बञ्ञुं	सब्बञ्ञुनो, सब्बञ्ञू
३. ततिया—	सब्बञ्ञुना	सब्बञ्ञूभि, सब्बञ्ञूहि
४. चतुत्थी—	सब्बञ्ञुनो, सब्बञ्ञुस्स	सब्बञ्ञूनं
५. पञ्चमी—	सब्बञ्ञुना, सब्बञ्ञुम्हा, सब्बञ्ञुमा,	सब्बञ्ञूभि सब्बञ्ञूहि
६. छट्ठी—	सब्बञ्ञुनो, सब्बञ्ञुस्स	सब्बञ्ञूनं
७. सत्तमी—	सब्बञ्ञुम्हि, सब्बञ्ञुस्मिं	सब्बञ्ञूसु
८. आलपन—	(हे) सब्बञ्ञु	(हे) सब्बञ्ञुनो, सब्बञ्ञू

ऊकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द जिनके रूप भी 'सब्बञ्ञू' शब्द के रूप के समान होंगे —

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
प्रभू	प्रभु	मग्गञ्ञू	मार्गज्ञ
विदू	विद्वान	धम्मञ्ञू	धर्मज्ञ
विञ्ञू	विज्ञ	कालञ्ञू	कालज्ञ
मत्तञ्ञू	मात्रज्ञ	रत्तञ्ञू	पुराना परिचित
कतञ्ञू	कृतज्ञ	तत्तञ्ञू	तत्वज्ञ
पारगू	पार जानेवाला		

२३ अभ्यास

(क) हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

१. सब्बञ्ञू सुवे धम्मं देसिस्सति । २. भिक्खवो सब्बञ्ञूं वन्दिसु । ३. चक्खुमन्तो सदा भानुमन्तं पस्सन्ति । ४. तदा बलवतो अरि वेलूहि पहरिंसु । ५. कदा तुम्हे धनवन्तं पस्सिस्सथ ? ६. सुवे मयं सीलवन्तं वन्दिस्साम । ७. भगवन्तो सब्बञ्ञुनो भवन्ति । ८. विदुनो कुलवतो गेहं गच्छिसु । ९. हिमवति कपयो च पक्खिनो च इसयो च वसिंसु । १०. पुञ्ञवतो नत्ता बुद्धिमा भवि । ११. कुलवतं भातरो धनवन्तो न भविंसु । १२. अहं हिमवन्तम्हि रुक्खे पस्सि । १३. पुरा मयं हिमवन्तं गच्छिम्ह । १४. हीयो सयं बन्धुमन्तो यसवन्तं गामं गच्छिसु । १५. विञ्ञू पच्छा पभुनो गेहे वसिस्सन्ति ।

(ख) पालि में अनुवाद कीजिए—

१. धनवानों के लड़के सदा ज्ञानी नहीं होते । २. बलवाला दुश्मनों से नहीं डरता । ३. कुलवाले धर्मज्ञ को नमस्कार करते हैं । ४. उसके लड़के बुद्धिवाले नहीं होते । ५. कल बुद्धिमान लोग आदमियों को उपदेश देंगे । ६. आज धनवान नगर को जायेगा । ७. धनवान के बाग में हिरण तथा चिड़ियाँ हैं । ८. यशवाले लोग हमारे गाँव में कब आयेंगे ? ९. बलवान का लड़का सदा मशहूर होगा । १०. एक बार जंगल में जानेवाला हिमालय में गया । ११. पुराने जमाने में लोग जंगल में रहते थे । १२. कल बाग में एक घोड़ा तथा एक हाथी रहे । १३. मेरे पिता यशवाले तत्वज्ञ हैं । १४. अभी धनवाले शेरों को खरीदते हैं । १५. एक बार हम लोगों ने धनवान् के बाग में एक मोर देखा है ।

पाठ – २४

ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग

'वधू' शब्द (=बहू)

	एकवचन	बहुवचन
१. पठमा—	वधू	वधू, वधुयो
२. दुतिय—	वधुं	वधू, वधुयो
३. ततिया—	वधुया	वधूभि, वधूहि
४. चतुत्थी—	वधुया	वधूनं
५. पंचमी—	वधुया	वधूभि, वधूहि
६. छट्ठी—	वधुया	वधूनं
७. सत्तमी—	वधुयं, वधुया	वधूसु
८. आलपन—	(हे) वधू	(हे) वधू, वधुयो

ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द जिनके रूप भी 'वधू' शब्द के रूप के समान होंगे—

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
जम्बू	जामुन	चमू	सेना
सरभू	नदी का नाम	वामोरू	स्त्री
सुतनू	सुन्दरी	सरबू	छिपकली

स्थान वाचक निपात

निपात	अर्थ	निपात	अर्थ
तत्थ	वहाँ	तिरियं	तिरछे
एत्थ	यहाँ	कत्थ	कहाँ
इध	यहाँ	तत्र	वहाँ
उपरि	ऊपर	कुहिं	कहाँ

अन्तो	अन्दर	एकत्थ	एक जगह
अन्तरा	बीच	कुतो	कहाँ से ?
सब्बत्थ	सभी जगह	ततो	वहाँ से

२४—अभ्यास

(क) हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

१. वधुया माता धेनुं रज्जुया बंधित्वा आनेसि २. वामोरू ओदनं पचित्वा पुत्तानं ददिस्सति। ३. कनेरुयो अटवियं चरित्वा तत्थ आवाटेसु पतिंसु। ४. धनवतिया सस्सु इध आगम्म भिक्खू वन्दिस्सति। ५. सुतनुया धीतरो आरामं गन्त्वा सत्थारं मालाहि पूजेसुं। ६. वधूनं पितरो धीतरानं वुद्धिं इच्छन्ति। ७. कुतो त्वं जम्बुयो किनिस्ससि ? ८. कत्थ चमूयो नहायित्वा पचित्वा भुञ्जिसु ? ९. दारका गेहस्स च रुक्खस्स च अन्तरा कीलिंसु। १०. वधुया धीतरो गेहस्स च अन्तो मञ्चेसु सयिस्सन्ति। ११. युवती माला पिलंधित्वा[1] सस्सुया गेहं गमिस्सति। १२. अम्हाकं मातरानं गावियो सब्बत्थ चरित्वा खादित्वा सायं एकत्थ सन्निपतन्ति[2]। १३. दारका मग्गे तिरियं धावित्वा अटवियं पविसित्वा निलीयिंसु[3]। १४. असनि रुक्खस्स उपरि पतित्वा साखा छिन्दित्वा मारेसि।

(ख) पालि में अनुवाद कीजिए—

१. कुमारियों ने विहार में जाकर बुद्ध को नमस्कार किया। २. कन्या की माता ने वधू को एक माला दी। ३. सेना घोड़ों को रस्सी से बाँधकर ले जाती हैं। ४. पिता ने गाँव में जा आकर वहाँ बैठ पानी पीया। ५. लड़के खेलकर एक जगह बैठ गये।

---

१. पिलंधित्वा=पहन कर। २. सन्निपतन्ति=इकट्ठी होती हैं।
३. निलीयिंसु=छिप गये।

६. गुणवालों के बेटे सदा पिता को नमस्कार करते हैं। ७. पिता गाँव में सभी जगह घूमकर घर में आ खाना खाता है। ८. माता की बहिन कहाँ रहती है ? ९. मेरी बहिन एक जगह रहती है। १०. वे गाँव में कब आयेंगे ? ११. रानी आज यहाँ आकर आज चली गई। १२. धनवान् की लड़की जलाशय में नहाकर बगीचे के बीच में से गई। १३. तुम्हारी माता बगीचे मे जाकर कब वापस आयेगी ? १४. तुमने हाथी कहाँ से लाया ? १५. जंगल में गये हुए लोग वहाँ गड्ढों में गिर गये।

पाठ—२५

(क) अकारान्त नपुंसक लिङ्ग

'मन' शब्द

	एकवचन	बहुवचन
१. पठमा—	मनं	मना, मनानि
२. दुतिया—	मनं	मने, मनानि
३. ततिया—	मनसा, मनेन	मनेभि, मनेहि
४. चतुत्थी—	मनसो, मनस्स	मनानं
५. पंचमी —	मनसा, मना, मनम्हा, मनस्मा	मनेभि, मनेहि
६. छट्ठी—	मनसो मनस्स	मनानं
७. सत्तमी —	मनसि, मने, मनम्हि, मनस्मिं	मनेसु
८. आलपन—	(हे) मन, मना	(हे) मनानि

अकारान्त नपुंसक लिङ्ग शब्द जिनके रूप भी 'मन' शब्द के रूप के समान होंगे -

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
सिर	सिर	वय	उम्र
उर	उर	पय	पानी, दूध
तेज	तेजस्	यस	यश
रज	धूली	तप	तप
वच	वचन	सर	तालाब
चेत	चित्त	वास	वस्त्र
तम	अंधकार	अय	लोहा
ओज	ओज		

(ख) 'तुं' प्रत्यान्त शब्द

"तुं" प्रत्यान्त शब्द निपात होते हैं। किसी किसी धातु और प्रत्यय के बीच में 'इ' कारागम होता है। जैसे—

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
पचितुं	पकाने के लिए	गन्तुं	जाने के लिए
पिवितुं	पीने के लिए	कातुं	करने के लिए
दातुं	देने के लिए	हरितुं	ले जाने के लिए
पातुं	पीने के लिए	आहरितुं	लाने के लिए
दातुं	देने के लिए	कत्तुं / कातुं	करने के लिए
भोत्तुं / तुञ्जतुं	खाने के लिए	लद्धुं / लभितुं	लिए

२५—अभ्यास

(क) हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

१. मनुस्सा मनसा चिन्तेत्वा पुञ्ञानि करोन्ति। २. धनवन्तो धनं दातुं च पुञ्ञं कातु च न इच्छन्ति। ३. मिगो पयं पिवितुं सरं धावति। ४. दानं दत्वा सीलं रक्खित्वा सग्गे[1] निब्बत्तितुं[2] सक्का। ५. वधू भत्तं पचितुं अग्गिं जालेस्सति। ६. वाणिजा वामोरूनं वासे विक्किणन्ति। ७. सीलवा मुनि धम्मं देसेतुं पीठे निसीदि। ८. चोरो अयसा पहरित्वा मम पितुनो अंगुलिं छिन्दि। ९. सुतनुयो पदुमानि ओचिनितुं[4] सरानि गच्छिंसु। १०. कञ्ञा वत्थं आनेतुं आपणे[5] गच्छिस्सति। ११. मयं वनं गन्त्वा गाविनं दातुं पन्नानि आहराम। १२.

---

१. **सग्गे**=स्वर्ग में। २. **निब्बत्तितुं**=पैदा होने के लिए। ३. **सक्कोन्ति**=पकते हैं। ४. **ओचिनितुं**=चुनने के लिए। ५. **आपणं**=दूकान।

त्वं धम्मं सोतुं विहारं गन्त्वा भूमियं निसीदतु। १३. धनं दत्वा जन लद्धुं न सक्कोन्ति। १४. मम भगिनी पुञ्ञं लभितुं सीलं रक्खति। १५. वधूयो सरम्हा पदुमानि आदाय विहारं गन्त्वा बुद्धं पूजेसुं।

(ख) पालि में अनुवाद कीजिए—

१. हरिन पानी पीने के लिए तालाब में गया। २. लड़का फल खाने के लिए बाग में जायेगा। ३. औरत तालाब में नहा कर घर जायेगी। ४. धनवान लोग दूध पीने के लिए गाय खरीदते हैं। ५. तुम लोग उपदेश सुनने के लिए शहर के मन्दिर में जाओ। ६. विद्या से मन का अन्धकार दूर होता है। ७. पापी लोग धनुष से शेर मारते हैं। ८. तुम जलाशय से नहा कर आओ। ९. भिक्षु कुर्सी पर बैठकर उपदेश देगा। १०. वह मन से, वचन से, तप से तथा उम्र से मुनि है। ११. पिता मधु लाने के लिए वन में गया। १२. ब्राह्मणी अँधेरे में घर जाकर सो गई। १३. किसान का लड़का एक कपड़ा लाने के लिए दूकान में गया। १४. तुम लोग तालाब में जाते हो या गंगा में।

पाठ—२६

क्रिया

सप्तमी विभक्ति (=विधि लिङ्ग)

'भू' धातु

	एकवचन	बहुवचन
१. पठम पुरिस—	(सो) **भवे, भवेय्य**	(ते) **भवुं, भवेय्युं**
२. मज्झिम पुरिस—	(त्वं) **भवे, भवेय्यासि**	(तुम्हे) **भवेय्याथ**
३. उत्तम पुरिस—	(अहं) **भवे, भवेय्यामि**	(मयं) **भवेमु, भवेय्यामु, भवेम, भवेय्याम**

परिकल्पना, विधि, अनुज्ञा आदि में सप्तमी विभक्ति होती है।

उदाहरण—

परिकल्पना—सचे संखारा निच्चा भवेय्युं न निरुज्झेय्युं यदि संस्कार नित्य हों, तो निरुद्ध न हों। (यहाँ नित्य होना परिकल्पना है)

विधि—भवं पुञ्ञं करेय्य—आप पुण्य करें। **इह भवं भुञ्जेय्य**—यहाँ आप खायें। **माणवकं भवं अज्झापेय्य**—युवक को आप पढ़ायें।

अनुज्ञा—एवं करेय्यासि—ऐसा करो। **गामं त्वं भणे! गच्छेय्यासि**—हे! तुम गाँव जाओ।

२६—अभ्यास

(क) हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

१. अहं सचे गेहं गच्छेय्यामि तत्थ ओदनं पचेय्यामि। २. सचे मयं याचके पस्सेय्याम तेसं वत्थानि ददेय्याम। ३. तुम्हे स्वाक्खाते[1] धम्मविनये[2] पब्बजिता खमा च भवेय्याथ सोरता[3] च। ४. सचे सो

---

१. **स्वाक्खात**=भलीभाँति देशित। २. **धम्मविनय**=बुद्ध-शासन। ३. **सोरत**=समदुःखी

दारको अञ्ञेहि दारकेहि सद्धिं उय्यानं गच्छेय्य तत्थ फलानि लभेय्य। ५. सो उरगो वम्मिकम्हा न गच्छेय्य जन्तूनं न डसेय्य। ६. तच्छका चे दारु लभेय्युं मञ्चानि करेय्युं। . मनुस्सा आगन्त्वा सुखं[1] वसेय्युंइति सेट्ठिना धम्मशाला कारापिता।

८. न भजे[2] पापके मित्ते, न भजे पुरिसाधमे।
भजेथ मित्ते कल्याणे, भजेथ पुरिसुत्तमे॥

(ख) पालि में अनुवाद कीजिए—

१. यदि मैं नगर में जाऊँगा, तो लड़के को एक कपड़ा लाऊँगा। २. मैं चाहता हूँ कि आप लोगों को उपदेश दें। ३. यदि तुम वन में रहोगे, तो फल पाओगे। ४. यदि पुत्र घर में रहेगा, तो विद्वान् न बनेगा। ५. यदि तुम राजा के लड़के हो, तो तुम भी राजा हो जाओ। ६. दुनिया में लोगों से गलती हो जाती है। ७. यदि तुम जन्तुओं की हिंसा करोगे, तो नरक में पैदा होओगे। ८. वे प्राणघात से, चोरी से तथा मदिरा पीने से दूर होवें। ९. यदि तुम बनारस जाओगे, तो गंगा देखना। १०. शरीर के लिए धन त्यागे, धन के लिए शरीर त्यागे।

---

१. सुखं=सुख पूर्वक। २. भज=संगति करना।

पाठ—२७

सन्धि

सन्धि तीन प्रकार की हैं— (१) स्वर सन्धि, (२) व्यंजन सन्धि, तथा (३) निग्गहीत सन्धि।

(क) स्वर-सन्धि

दो स्वरों के पास-पास आने के कारण जो सन्धि होती है, उसे स्वर-सन्धि कहते हैं।

१. स्वर से परे यदि तद्भिन्न स्वर हो, तो कहीं-कहीं पूर्व स्वर का लोप हो जाता है।[१]

उदाहरण—

मे + अत्थि=मत्थि (मे + अत्थि=म् + अत्थि=मत्थि)। महा + इच्छो=महिच्छो

नोहि + एतं=नोहेतं

भिक्खुनी + ओवादो=भिक्खुनोवादो

समेतु + आयस्मा=समेतायस्म।

अभिभू + आयतनं=अभिभायतनं

२. स्वर से परे तद्भिन्न स्वर के आने से, कभी-कभी पर स्वर का लोप होता है।[२]

उदाहरण—

यस्स + इदानि=यस्सदानि

छाया + इव=छायाव

ते + अपि=तेपि

चत्तारो + इमे=चत्तारोमे

वसलो + इति=वसलोति

---

१. सरो लोपो सरे। २. परो क्वचि।

३. स्वर से परे यदि स्वर हो, तो कभी-कभी दोनों में से किसी स्वर का लोप नहीं होता है।[२]

उदाहरण—

लता + इव=तलाइव

आकासे + इव=आकासेइव

वन्दे + अहं=वन्देअहं

विकल्प से—लताव तथा लतेव भी।

आकासेव, वन्देहं

४. लुप्त हुए स्वर से परे 'इ' का कभी-कभी 'ए' तथा 'उ' का 'ओ' हो जाता है।[४]

उदाहरण—

तस्स + इदं=तस्स् + इदं=तस्स + एद=तस्सेदं

वात + ईरितं=वात् + ईरितं=वातेरितं

वाम + ऊरू=वाम् + ऊरू=वामोरू

अति + इव=अत् + इव=अतेव

वि + उदकं=व् + उदकं=वोदकं

५. 'इ' तथा 'उ' से परे यदि स्वर हो, तो कभी-कभी उनके क्रमशः 'य' तथा 'व' हो जाते हैं।[३]

उदाहरण—

वि + आकतो=व्याकतो

इति + अस्स=इत्यस्स

अधि + इणमुत्तो=अध्यिणमुत्तो

६. 'ए' तथा 'ओ' से परे यदि स्वर हो, तो कभी-कभी उनके क्रमशः 'य' तथा 'व' हो जाते हैं।[६]

---

१. न द्वेवा। २. युवण्णान मे ओ लुत्ता। ३. यवा सरे। ४. ए ओनं।

उदाहरण—

ते + अज्ज=त्यज्ज

सो + अहं=स्वाहं

मे + अयं=म्यायं

पब्बते + अहं=पब्बत्याहं

७. 'गो' शब्द से परे कोई स्वर आवे, तो 'गो' शब्द का 'गव' आदेश हो जाता है।[१]

उदाहरण—

गो + अस्सं=गव + अस्सं=गव + अस्सं=गवास्सं

निम्नलिखित सन्धि निपात हैं:—

तथा + एव=तथरिव

यथा + एव=यथरिव

२७—(अ) अभ्यास

(क) सन्धि कीजिए:—

१. अज्ज + उपोसथो। २. यस्स + इन्द्रियानि। ३. महा+ओघो। ४. उदधि+ऊमियो। ५. अग्गि+आहितो। ६. चत्तारो+इमे। ७. चक्खु+इन्द्रियानि। ८. सञ्ञा+इति। ९. अकतञ्ञू+असि। १०. सो+अस्स। ११. बहु+आबाधो। १२. सु+आगतं। ११. अहं खो+अज्ज। १४. पातु+अकासि। १५. वि+आकतो। १६. वुत्ति+अस्स।

(ख) सन्धि विच्छेद कीजिए:—

१. भिक्खुनोवादो। २. मनसिच्छति। ३. एसावुसो। ४. अभिभायतनं। ५. असंत्यतथा। ६. लोकग्गो। ७. तीनिमानि। ८. मातुपट्ठानं। ९. मोग्गल्लानेसि। १०. पानोव। ११. आकासेव। १२.

---

१. गोस्सा वङ्

कथाव । १३. पात्वाकासि । १४. अन्वद्धमासं । १५. क्वत्थो । १६. य्वायं । १७. पटिसंथारवुत्यस्स । १८. साधावुसो ।

(ख) व्यंजन-सन्धि

१. परे व्यञ्जन हो, तो बहुधा पूर्वस्थित ह्रस्व तथा दीर्घ स्वर का क्रमशः दीर्घ तथा ह्रस्व हो जाता है[1] ।

उदाहरण—

ह्रस्वः—माला+भारी=मालभारी

सम्मा+एव=सम्मदेव ('द' आगम)

दीर्घः—तत्र+अयं=तत्रायं

मुनि+चरे=मुनीचरे

२. स्वर से परे व्यञ्जन हो, तो उस व्यञ्जन का कभी-कभी द्वित्व हो जाता है[2] ।

उदाहरण—

प+गहो=पग्गहो

दु+कतं=दुक्कतं, दुक्कटं.

३. यदि किसी वर्ग के दो चतुर्थ या द्वितीय वर्ण संयुक्त हों, तो उनके पहले का क्रमशः इसी वर्ग का तृतीय या प्रथम वर्ण हो जाता है[3] ।

उदाहरण --

नि+घोसो=('सरम्हा द्वे' सूत्र से -- निघ्घोसो) निग्घोसो

अ+खन्ति=अरखन्ति=अक्खन्ति

सेत+छत्तं=सेतछछत्तं=सेतच्छत्तं

४. यदि 'इति' शब्द के बाद 'एव' शब्द हो, तो विकल्प से 'इति' का 'इत्व' आदेश हो जाता है[4] ।

---

१. व्यञ्जने दीघ रस्सा । २. सरम्हा द्वे । ३. चतुत्थ दुतिये स्वेसं ततिय पठमा । ४. वितिस्सेवे वा ।

उदाहरण—

इति+एव=इत्येव । विकल्प से—इच्चेव

५. 'ए' तथा 'ओ' के बाद यदि कोई भी वर्ण हो, तो 'ए' तथा 'ओ' का कहीं-कहीं 'अ' हो जाता है[1] ।

उदाहरण—

सो+सीलवा=स सीलवा

एसो+धम्मो=एस धम्मो

याचके+आगते=याचकमागते

२७—(आ)अभ्यास

(क) सन्धि कीजिए

१. सम्म+धम्मो । २. खन्ति+परमं । ३. जायति+सोको । ४. मधुव+मञ्ञति । ५. जायति+भयं । ६. नि+ठानं । ७. यस+येरो । ८. अ+फुटं । ९. अकरम्हसे+ते । १०. एसो+अत्थो । ११. अग्गो+अक्खायति । १२. सम्मा+पधाना ।

(ख) सन्धि विच्छेद कीजिए—

१. अनूपघातो । २. दूरक्खं । ३. यदिवसावके । ४. यथिदं । ५. यथाक्कमं । ६. आयब्बया । ७. बोधित्तयं । ८. आयुक्खयो । ९. रूपक्खन्धो । १०. निब्भयं । ११. बोधिच्छाया । १२. जम्बुच्छाया । १३. सगच्छं । १४. सपञ्ञवा । १५. एसमग्गो ।

(ग) निग्गहीत-सन्धि

निग्गहीत अर्थात् अनुस्वार के साथ स्वर या व्यञ्जन की सन्धि को निग्गहीत सन्धि कहते हैं ।

१. कहीं-कहीं निग्गहीत का आगम होता है[2] ।

---

१. एओ न मवग्गे । २. निग्गहीतं ।

उदाहरण—

चक्खु+उदपादि=चक्खुं उदपादि

त+खणे=तंखणे

अव+सिरो=अवंसिरो

२. कहीं-कहीं निग्गहीत का लोप हो जाता है[२]।

उदाहरण—

सं+रत्तो=स+रत्तो (व्यञ्जने दीघ रस्सा) सारत्तो

सं+रागो=सारागो

सं+रम्भो=सारम्भो

३. निग्गहीत से परे आनेवाले स्वर का कहीं-कहीं लोप हो जाता है[३]

उदाहरण—

त्वं+असि=त्वंसि

वीजं+इव=वीजंव

इदं+अपि=इदंपि

४. निग्गहीत से परे कोई वर्गीय वर्ण हो, तो विकल्प से उस निग्गहीत का उसी वग का अन्तिम वर्ण हो जाता है[४]।

उदाहरण—

तं+करोति=तङ्करोति

तं+चरेति=तञ्चरेति

तं+ठानं=तण्ठानं

५. यदि बाद में 'य', 'एव' तथा 'हि' शब्द हो, तो पूर्वस्थित निग्गहीत का कहीं-कहीं 'ञ्ज' हो जाता है[५]।

---

२. लोपो। ३. परसरस्स। ४. वग्गे वग्गन्तो। ५. येवहि सुञ्ञो।

उदाहरण—

यं+यं एव=यञ्ञदेव

तं+एव=तञ्ञेव

तं+हि=तञ्हि

६. 'य' परे हो, तो पूर्वस्थित 'स' शब्द के निग्गहीत का 'ञ' हो जाता है[1]।

उदाहरण—

सं + यमो=सञ्ञमो

७. स्वर परे हो, तो कहीं-कहीं पूर्वस्थित निग्गहीत का 'म', 'य' तथा 'द' आदेश हो जाता है[2]।

उदाहरण—

तं + अहं=तमहं

तं + इदं=तयिद

तं + अलं=तदलं

२७—(इ) अभ्यास

(क) सन्धि कीजिए—

१. त + सभावो। २. पुरिस + जाति। ३. याव + चिध। ४. अनु + थूलानि। ५. त + सम्पयुत्ता। ६. बुद्धानं + सासनं। ७. एवं + अहं।। ८. अभिनन्दु + इति। ९. किं + इति। १०. तं + धनं। ११. तं + पाति। १२. यं + आहु।

(ख) सन्धि विच्छेद कीजिए—

१. यावञ्चिध। २. कथाहं। ३. गन्तुकामो। ४. किन्दानि। ५. अलन्दानि। ६. उत्तरिम्पि। ७. दातुम्पि। ८. चक्कंव। ९. तङ्खणं। १० रणञ्जहो। ११. सण्ठितो। १२. धनमेव। १३. किमेतं। १४. निन्दितुमरहति। १५. यदनिच्चं। १६. एतदेव।

---

१. ये संस्स। २. मयदा सरे।

पाठ— ८

संख्यावाचक शब्द

संख्या-वाचक शब्द बहुधा विशेषण की भाँति प्रयुक्त होते हैं; अतः उनमें वही लिङ्ग, विभक्ति तथा वचन होते हैं जो उनके विशेष्य में हैं।

१=एक
२=द्वि
३=ति
४=चतु
५=पञ्च
६=छ
७=सत्त
८=अट्ठ
९=नव
१०=दस
११=एकादस
१२=द्वादस, बारस
१३=तेलस, तेरस
१४=चुद्दस, चतुद्दस
१५=पण्णरस, पञ्चदस
१६=सोलस
१७=सत्तरस, सत्तदस
१८=अट्ठारस, अट्ठादस
१९=एकूनवीसति
२०=वीसति
२१=एकवीसति
२२=द्वेवीसति, द्वावीसति
२३=तेवीसति
२४=चतुवीसति
२५=पञ्चवीसति
२६=छब्बीसति
२७=सत्तवीसति
२८=अट्ठवीसति
२९=एकूनतिंसति
३०=तिंसति
३१=एकतिंसति
३२=द्वत्तिंसति, बत्तिंसति
३३=तेत्तिंसति
३४=चतुतिंसति
३५=पञ्चतिंसति
३६=छत्तिंसति
३७=सत्ततिंसति
३८=अट्ठतिंसति

३९=एकूनचत्तालीसति
४०=चत्तालीसति
४२=द्वेचत्तालीसति, द्विचत्तालीसति
४९=एकून पञ्ञासति
५०=पञ्ञासति, पण्णासति
५२= द्वेपञ्ञासति / द्वेपण्णासति / द्विपञ्ञासति / द्विपण्णासति
५९=एकूनसट्ठि
६०=सट्ठि
६२=द्वेसट्ठि, द्वासट्ठि, द्विसट्ठि
६९=एकूनसत्तति
७०=सत्तति
७२=द्वेसत्तति, द्विसत्तति, द्वासत्तति
७९=एकूनासीति
८०=असीति
८१=एकासीति
८२=द्वेअसीति, द्वियासीति द्वासीति,
८९=एकूननवुति
९०=नवुति
९२=द्वेनवुति, द्विनवुति, द्वानवुति
९९=एकूनसतं
१००=सतं
९००=नवसतं
१०००=सहस्सं
१०,०००=दससहस्सं, नहुतं
१००,०००=सतसहस्सं, लक्खं
१०,००,०००=दस लक्खं
१००,००,०००=कोटि
१०,००,००,०००=दसकोटि
१००,००,००,०००=सतकोटि

'एक' शब्द

संख्या, अतुल्य, असहाय तथा कोई-कोई इतने अर्थों में **'एक'** शब्द प्रयुक्त होता है। संख्या के अर्थ में **'एक'** शब्द एक वचन ही में होता है।

उदाहरण—

१. **संख्या**—एको बालको। (एक बालक)।
२. **अतुल्य**—बुद्धो एको'व लोके। (लोक में बुद्ध अतुल्य हैं)।
३. **असहाय**—अहं एको'व अरञ्ञे विहरामि। (मैं जंगल में अकेला विहार करता हूँ)।

४. अन्य—एके एवं वदन्ति। (कोई कोई ऐसा कहते हैं)। तीनों लिङ्गों में 'एक' शब्द के रूप सब्ब शब्द के समान हैं।

पुल्लिङ्ग

	एकवचन	बहुवचन
१. पठमा—	एको	एके
२. दुतिया—	एकं	एके
३. ततिया—	एकेन	एकेभि, एकेहि
४. चतुत्थी—	एकस्स	एकेसं, एकेसानं
५. पंचमी—	एकम्हा, एकस्मा	एकेभि, एकेहि
६. छट्ठी—	एकस्स	एकेसं, एकेसानं
७. सत्तमी—	एकम्हि, एकस्मिं	एकेसु

नपुंसक लिङ्ग

	एकवचन	बहुवचन
१. पठमा—	एकं	एके, एकानि
२. दुतिया—	एकं	एके, एकानि

शेष पुल्लिङ्ग के समान हैं।

स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	बहुवचन
१. पठमा—	एका	एका, एकायो
२. दुतिया—	एकं	एका, एकायो
३. ततिया—	एकाय	एकाभि, एकाहि
४. चतुत्थी—	एकस्सा, एकाय	एकासं, एकासानं
५. पंचमी—	एकाय	एकाभि, एकाहि
६. छट्ठी—	एकस्सा, एकाय	एकासं, एकासानं
७. सत्तमी—	एकस्सं, एकायं	एकासु

२='द्वि' से लेकर १८='अट्ठारस' तक शब्द केवल बहुवचन में ही प्रयुक्त होते हैं।

'द्वि'—शब्द

तीनों लिङ्गों में द्वि—शब्द के रूप समान ही होते हैं।

	बहुवचन
१. पठमा—	दुवे, द्वे
२. दुतिया—	दुवे, द्वे
३. ततिया—	द्वीभि, द्वीहि
४. चतुत्थी—	द्विन्नं, दुविन्नं
५. पंचमी—	द्वीभि, द्वीहि
६. छट्ठी —	द्विन्नं दुविन्नं
७. सत्तमी—	द्वीसु

'उभ' शब्द

'उभ' (=दो) शब्द भी हमेशा बहुवचन रहता है, और तीनों लिङ्गों में इसके रूप भी समान ही होते हैं।

	बहुवचन
१. पठमा—	उभो
२. दुतिया—	उभो
३. ततिया—	उभोभि, उभोहि, उभेभि, उभेहि
४. चतुत्थी—	उभिन्नं
५. पंचमी—	उभोभि, उभोहि, उभेभि, उभेहि
६. छट्ठी—	उभिन्नं
७. सत्तमी—	उभोसु, उभेसु

'ति'— शब्द

'ति' (=तीन) शब्द भी हमेशा बहुवचन रहता है। तीनों लिङ्गों में इसके रूप अलग अलग होते हैं।

	पुल्लिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
१. पठमा—	तयो	तीणि	तिस्सो
२. दुतिया—	तयो	तीणि	तिस्सो
३. ततिया—	तीभि, तीहि	शेष पुल्लिङ्ग के समान हैं	तीभि, तीहि
४. चतुत्थी—	तिण्णं, तिण्णन्नं		तिस्सन्नं
५. पंचमी—	तीभि, तीहि		तीभि, तीहि
६. छट्ठी—	तिण्णं, तिण्णन्नं		तिस्सन्नं
७. सत्तमी—	तीसु		तीसु

'चतु'-शब्द

'चतु' (=चार) शब्द भी हमेशा बहुवचन रहता है। तीनों लिङ्गों में इसके रूप अलग अलग होते हैं।

	पुल्लिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
१. पठमा—	चत्तारो, चतुरो	चत्तारि	चतस्सो
२. दुतिया—	चत्तारो, चतुरो	चत्तारि	चतस्सो
३. ततिया—	चतूभि, चतूहि	शेष पुल्लिङ्गिक के समान हैं।	चतूभि, चतूहि
४. चतुत्थी—	चतुन्नं		चतस्सन्नं
५. पंचमी—	चतूभि, चतूहि		चतूभि, चतूहि
६. छट्ठी—	चतुन्नं		चतस्सन्नं
७. सत्तमी—	चतुसु		चतुसु

'पञ्च' शब्द

'पञ्च' शब्द के रूप तीनों लिङ्गों में समान होते हैं।

	बहुवचन
१. पठमा—	पञ्च
२. दुतिया—	पञ्च

३. ततिया—	पञ्चभि, पञ्चहि
४. चतुत्थी—	पञ्चनं
५. पंचमी—	पञ्चभि, पञ्चहि
६. छट्ठी—	पञ्चन्नं
७. सत्तमी—	पञ्चसु

६='छ' से लेकर १८ 'अट्ठारस' तक सभी शब्दों के रूप इसी तरह होंगे।

१९=एकूनवीसति (=उन्नीस) से लेकर ९८=अट्ठनवुति (=अट्ठानवे) तक, सभी शब्द सदा स्त्रीलिङ्गिक-एकवचन होते हैं, तथा उनके रूप रत्ति शब्द के समान होते हैं। जैसेः—

'एकूनवीसति' शब्द

	एकवचन
१. पठमा—	एकूनवीसति
२. दुतिया—	एकूनवीसति
३. ततिया—	एकूनवीर [illegible]
४. चतुत्थी—	एकूनवीसतिय।
५. पंचमी—	एकूनवीसतिया
६. छट्ठी—	एकूनवीसतिया
७. सत्तमी—	एकूनवीसतियं

'तिंस-चत्तालीसा-पञ्ञासा' इन तीनों शब्दों के रूप **'लता'** शब्द के समान होते हैं।

९९=एकूनसतं (=निन्नानवे) से लेकर लक्ख तक नपुंसक लिङ्गिक हैं।

'कोटि' शब्द स्त्रीलिङ्गिक एकवचन होता है।

'कति' शब्द (=कितना)

'कति' शब्द सदा बहुवचन होता है। तीनों लिङ्गों में इसके रूप समान होते हैं।

	बहुवचन
१. पठमा—	कति
२. दुतिया—	कति
३. ततिया—	कतीभि, कतीहि
४. चतुत्थी—	कतीनं, कतिन्नं
५. पंचमी—	कतीभि, कतीहि
६. छट्ठी—	कतीनं, कतिन्नं
७. सत्तमी—	कतीसु

२८—अभ्यास

(क) हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

१. मयं एकाय सालाय सत्तदिवसे वसिम्ह। २. दासो द्वीहि हत्थेहि चत्तारो नालिकेरे आनेसि। ३. मयं तीणि वस्सानि कलिकता नगरे वसिस्साम। ४. चतस्सो इत्थियो अट्ठ अम्बे खादिंसु। ५. मयं इतो छहि वस्सेहि सावत्थियं गमिस्साम। ६. पञ्च दासा दस पनसे आनेत्वा विक्किणिंसु। ७. मयं नवहि दिवसेहि गयानगरं गमिस्साम। ८. दासी दारकस्स चत्तारि फलानि अदासि। ९. वीसति पुरिसा खेत्तं कसन्ति। १०. अट्ठवीसति गोणा खेत्ते तिणं खादन्ति। ११. तिस्सन्नं इत्थीनं भत्तारो पब्बतं आरुहिंसु। १२. पिता तीणि वत्थानि किणित्वा तिण्णं पुत्तानं अदासि। १३. सावत्थियं मनुस्सानं सत्तकोटियो वसिंसु।

(ख) पालि में अनुवाद कीजिए—

१. हमलोग आठ साल बनारस में रहे थे। २. वे सात दिन में प्रयाग गये। ३. माता ने दस आम लाकर पाँच पुत्रों को दिये। ४. तीन आदमी पहाड़ पर चढ़कर पेड़ काटते हैं। ५. दास ने पचीस

कटहल बनिये को बेच दिये। ६. पिता ने चार वस्त्र लाकर चार पुत्रों को दिये। ७. हमलोगों के पेड़ों में पैंतीस कटहल हैं। ८. हमलोग यहां से पन्द्रह दिन में घर जायेंगे। ९. साठ हाथी बन में रहते हैं। १०. बीस आदमी हल जोतते हैं। ११. चार स्त्रियाँ जलाशय में जा नहाकर पीछे जुदा हो चार बनों में जा लकड़ी ले आईं। १२. शेर ने चार हाथियों को मारा। १३. तरुणी ने चार कमल लाकर चार आदमियों को दिये।

(ग) निम्नलिखित वाक्यों के रिक्त स्थानों को संख्याओं से पूरा कीजिए—

१. .....गावियो खेत्ते आहिण्डन्ति।

२. मयं गामं गच्छन्ता अटवियं .....मिगे पस्सिम्ह।

३. दस पुरिसा .....अम्बे खादिंसु।

४. इमस्मिं गामे .....गेहा सन्ति।

५. तस्मिं गामे .....मनुस्सा वसन्ति।

६. मयं इतो .....दिवसेहि नगरं गमिस्साम।

७. अम्हाकं मातरो .....मासेहि गामं आगमिस्सन्ति।

८. कुमारी .....पदुमानि आहरित्वा ...दारकानं अदासि।

९. .....दासा .....नालिकेरे किणिंसु।

१०. मातरो .....फलानि आनेत्वा .....धीतरानं अदंसु।

११. भगवा .....वस्सानि सावत्थियं वसि।

१२. .....पक्खिनो रुक्खस्स साखासु निसीदिंसु।

१३. मय्हं .....भातरो सन्ति।

१४. मयं मग्गे गच्छन्ता .....अस्से च .....रथे च .....इत्थियो च .....गोणे च पस्सिम्ह।

१५. तस्सा इत्थिया .....पुत्ता .....धीतरो ...भातरो च सन्ति।

———

पाठ -- २९

पूर्णार्थक शब्द

पुल्लिङ्ग	नपुंसक लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
१—पठमो=पहला	पठमं=पहला	पठमा=पहली
२—दुतियो	दुतियं	दुतिया
३—ततियो	ततियं	ततिया
४—चतुत्थो	चतुत्थं	चतुत्थी, चतुत्था
५—पञ्चमो	पञ्चमं	पञ्चमी
६—छट्ठो, छट्ठमो	छट्ठं, छट्ठमं	छट्ठी, छट्ठमी, छट्ठा

इसके आगे के संख्यावाचक शब्दों के साथ 'म' लगाकर उसका पूर्णार्थ बना लेते हैं। जैसे—

७—सत्तमो	सत्तमं	सत्तमा, सत्तमी

२९—अभ्यास

(क) हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

१. गच्छन्तेसु दससु पुरिसेसु अट्ठमो वाणिजो होति। २. द्विन्नं धनवन्तानं पठमो याचकानं दानं अदासि। ३. चतस्सन्नं इत्थीनं ततिया भत्ता मरि। ४. मय्हं पिता सत्ततिमे वस्से मरि। ५. मयं इतो पञ्चमे दिवसे चतुहि पुरिसेहि सद्धिं नगरं गमिस्साम। ६. भगवा असीतिमे वस्से परिनिब्बायि। ७. पाठसालाय असीतिया सिस्सेसु पञ्चवीसतिमो हीयो कालमकासि। ८. अम्हाकं पिता इतो पञ्चन्नं वस्सानं उपरि पयागनगरं अगमासि। ९. द्वीसु पाठसालासु तिसतं सिस्सा उग्गण्हन्ति। १० तुय्हं माता इतो पञ्चमे मासे कालं करिस्सति।

(ख) पालि में अनुवाद कीजिए—

१. दस बनियों में से पाँचवें ने माणिक्य खरीदा। २. आज से तीसरे दिन चार धनवान् भिखारियों को दान देंगे। ३. आठ औरतों में से सातवीं औरत लाल कपड़ा पहनती है। ४. तीनों पाठशालाओं में आठ-सौ विद्यार्थी रहते हैं। ५. हम लोग साल के तीसरे महीने में प्रयाग गये थे। ६. उसका दसवाँ पुत्र पच्चीस दिन के बाद घर आयेगा। ७. महीने के पहले दिन में हम लोग बनारस जायेंगे।

---

१. दस आदमियों में से। २. दोनों धनवानों में से।

पाठ—३०

(क) उपसर्ग

उपसर्ग बीस हैं—**प, परा, नि, नी, उ, दु, सं, वि, अव, अनु, परि, अभि, अधि, पति, सु, आ, अति, अपि, अप, उप।** धातुओं के आदि में उपसर्ग लगते हैं। उपसर्ग के लगने पर, क्रिया के अर्थ में कभी कुछ विशेषता आ जाती है, कभी कुछ भिन्नता आ जाती है और कभी अर्थ बिल्कुल बदल जाता है।

जैसे—

जहति=छोड़ता है।	**प + जहति**=एक दम छोड़ता है
गच्छति=जाता है।	**उप + गच्छति**=पास जाता है
गच्छति=जाता है।	**आ + गच्छति**=आता है।

उपसर्गों के कुछ उदाहरण—

उपसर्ग	धातु	क्रिया
१. **प**	छिन्द=काटना	**पच्छिन्दति**=काट डालता है
२. **परा**	जि=जीतना	**पराजयति**=हरा देता है
३. **नि**	सर=निकलना	**निस्सरति**=बाहर निकलता है
४. **नी**	हर=हरना	**नीहरति**=बाहर ले जाता है
५. **उ**	ठा=खड़ा होना	**उट्ठहति**=उठता है
६. **दु**	कर=करना	**दुक्कर**=दुष्कर
७. **सं**	वद=बोलना	**संवदति**=संवाद करता है
८. **वि**	चर=चलना	**विचरति**=इधर उधर घूमता है

९. अव	मन=जानना	अवमञ्ञति=तिरस्कार करता है
१०. अनु	बन्ध=बाँधना	अनुबन्धति=पीछा करता है
११. परि	भास=कहना	परिभासति=निन्दा करता है
१२. अभि	नन्द=प्रसन्न होना	अभिनन्दति=प्रसन्न होता है
१३. अधि	वस=रहना	अधिवासेति=स्वीकार करता है
१४. पति	कर=करना	पटिकरोति=प्रतिकार करता है
१५. सु	गन्ध	सुगन्ध
१६. आ	दिस=बताना	आदिसति=आज्ञा देता है
१७. अति	धाव=दौड़ना	अतिधावति=अधिक दौड़ता है
१८. अपि	लप=बात करना	अपिलपेति=डींग हाँकता है
१९. अप	वद=बोलना	अपवदति=निन्दा करता है
२०. उप	कर=करना	उपकरोति=उपकार करता है

(ख) आत्मनेपद क्रिया

पालि में क्रिया के रूप दो प्रकार के हैं आत्मनेपद और परस्मैपद। आत्मनेपद का प्रयोग पालि में बहुत कम पाया जाता है। प्रयोग में दोनों में कोई अन्तर नहीं है।

पहले वर्तमान, अनागत, अज्जतनी, पञ्चमी तथा सत्तमी विभक्तियों के परस्मैपदी रूप दिये गये हैं। यहाँ आत्मनेपदी क्रिया रूप दिये जाते हैं—

वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
१. पठम पुरिस –	**भवते**	**भवन्ते**
२. मज्झिम पुरिस –	**भवसे**	**भवव्हे**
३. उत्तम पुरिस –	**भवे**	**भवाम्हे**

अनागत

	एकवचन	बहुवचन
१. पठम पुरिस –	भविस्सते	भविस्सन्ते
२. मज्झिम पुरिस –	भविस्ससे	भविस्सव्हे
३. उत्तम पुरिस –	भविस्सं	भविस्साम्हे

अज्जतनी

	एकवचन	बहुवचन
१. पठम पुरिस—	अभवा, भवा	अभवू
२. मज्झिम पुरिस—	अभविसे	अभविव्हं
३. उत्तम पुरिस—	अभव	अभविम्हे

पञ्चमी

	एकवचन	बहुवचन
१. पठम पुरिस—	भवतं	भवन्तं
२. मज्झिम पुरिस—	भवस्सु	भवव्हो
३. उत्तम पुरिस—	भवे	भवामसे

सत्तमी

	एकवचन	बहुवचन
१. पठम पुरिस—	भवेथ	भवेरं
२. मज्झिम पुरिस—	भवेथो	भवेय्यव्हो
३. उत्तम पुरिस—	भवेय्यं	भवेय्याम्हे

क्रिया के रूपों की तालिका

पच-धातु

	परस्मैपद		आत्मनेपद	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
वर्तमान	१. प्र०—पचति	पचन्ति	पचते	पचन्ते
	२. म०—पचसि	पचथ	पचसे	पचव्हे
	३. उ०—पचामि	पचाम	पचे	पचाम्हे
अनागत	१. प्र०—पचिस्सति	पचिस्सन्ति	पचिस्सते	पचिस्सन्ते
	२. म०—पचिस्ससि	पचिस्सथ	पचिस्ससे	पचिस्सव्हे
	३. उ०—पचिस्सामि	पचिस्साम	पचिस्सं	पचिस्साम्हे
अज्जतनी	१.प्र०—अपचि,पचि,अपची,पची अपचिंसु, पचिंसु		अपचा, पच्	अपच,पचू
	२.म०—अपचो, पचो	अपचत्थ, पचत्थ	अपचिसे, पचिसे	अपचिव्हं, पचिव्हं
	३.उ०—अपचिं, पचिं	अपचम्हा, पचम्हा	अपच, पच	अपचिम्हे, पचिम्हे
पञ्चमी	१. प्र०—पचतु	पचन्तु	पचतं	पचन्तं
	२. म०—पच, पचाहि	पचथ	पचस्सु	पचव्हो
	३. उ०—पचामि	पचाम	पचे	पचामसे
भी	१. प्र०—पचे, पचेय्य	पचे, पचेय्युं	पचेथ	पचेरं
	२. म०—पचे, पचेय्यासि	पचेय्याथो, पचेय्याथ	पचेथो	पचेय्यव्हो
	३. उ०—पचे, पचेय्यामि	पचेम, पचेय्याम्	पचेय्यं	पचेय्याम्हे

(ग) कुछ द्रष्टव्य शब्द

शब्द		अर्थ	शब्द	अर्थ
पुब्बस्सं	(इ०)	पूर्व दिशा	कुसुम	(न०) फूल
अपरस्सं	(इ०)	अपर दिशा	सुबाल	(पु०)अच्छा लड़का
अत्थ	(पु०)	अस्त होना	पातो	(नि०) सबेरे
नभ	(न०)	आसमान	तम	(पु०) अन्धकार
मज्झण्ह	(न०)	दोपहर	आवुत	(पु०) ढंका हुआ
पभा	(इ०)	रश्मि	पच्चक्ख देवता	(इ०) प्रत्यक्ष देवता
लोहितवण्ण	(पु०)	लालरंग	दीघ	(न०) लम्बा
बालातप	(पु०)	बालसूर्य किरण	लोम	(पु०) रोम
संसग्ग	(पु०)	मिलन	भण्ड	(न०) सामान
चणक	(पु०)	चना		

(घ) कुछ क्रिया पद

क्रिया	अर्थ	क्रिया	अर्थ
दयते	निकलता है।	वड्ढीयते	बढ़ता है
अयते	जाता है।	पकासयते	प्रकाश करता है।
भमति	घूमता है।	वत्तते	है
आरोहति	चढ़ता है।	तिट्ठते	खड़ा है
उच्चते	कहता है।	जीवते	जीता है
जायते	पैदा होता है।	जागरते	जागता है।
विकसति	खिलता है।	कीलते	खेलता है
पबुज्झति	उठता है।	खीयते	क्षीण होता है
सयते	सोता है।		

३०—अभ्यास

(क) हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

१. सुरियो पुब्बस्सं दिसायं उदयते। सो अपरस्सं दिसायं अत्थं अयते। सोयं नभे भमति। यदा सो नभस्स मज्झं आरोहति तदा मज्झण्हो। सुरियस्स पभा आतपो इति उच्चते।

२. सुरियस्सुदयम्हा पुब्बे पुब्बस्सं दिसायं लोहितवण्णो आलोको जायते। पच्छा सो अरुणालोको खीयते। बालातपस्स संसग्गेन कुसुमानि विकसन्ति। सुबाला पातोव पबुज्झित्वा पाठे पठन्ति। तेसं बुद्धि बड्ढते।

३. सुरियस्स आलोको वत्थूनि पकासयते। यदि सुरियो न भविस्सति, लोको तमेनावुतो भविस्तति। रुक्खलतादयो जन्तवो च न वत्तिस्सन्ते। मयं अपि न जीविस्साम।

४. सुरियालोकेन रुक्खा वड्ढीयन्ते, फलानि पच्चन्ते, सुरियो पक्चक्खदेवता।

(क) पालि में अनुवाद कीजिये—

१. यहाँ एक घोड़ा है। घोड़े के पैर लम्बे हैं। उसकी गर्दन में सुन्दर बाल है।

२. घोड़ा बैल की तरह घास, चना आदि खाता है। वह बैल की तरह गाड़ी खींचता है। पीठपर सामान ले जाता है।

३. नगर में एक बनिया रहता है। वह व्यापार से जीता है। कभी कभी सारी रात जागता है।

४. लड़का सबेरे पढ़ता है। वह शाम को खेलता है। रात में सोता है।

———

पाठ—३१

गण-विचार

धातु के साथ विभक्ति लगने के समय उसमें कुछ परिवर्तन हो जाता है। यह परिवर्तन आठ प्रकार से होता है। जैसे—

(१) भू+ति = **भवति**
(२) दिव+ति = **दिव्यति**
(३) सु+ति = **सुणोति**
(४) तुद+ति = **तुदति**
(५) रुध+ति = **रुन्धति**
(६) तन+ति = **तनोति**
(७) की+ति = **किणाति**
(८) चुर+ति = **चोरेति**

धातुओं का परिवर्तन 'भू' धातु के समान होता है, उन्हें एक गण में रखकर उसका क्रम स्वादि गणीय धातु कहते हैं। इसी तरह दिवादि, स्वादि, तुदादि आदि आठ गण हैं।

हरेक धातु गण के एक या अनेक प्रत्यय होते हैं जो कि धातु और क्रिया के प्रत्यय के बीच में जोड़े जाते हैं।

आठ गण और उनके प्रत्यय

	धातु गण	विकरण
१.	भवादि—	अ
२.	दिवादि—	य
३.	स्वादि—	णो, णु, उणा
४.	तुदादि—	अ
५.	रुधादि—	०, अ

६.	तनादि—	ओ, यिर
७.	क्यादि—	णा, ना
८.	चुरादि—	ए, अय

आठों गणों के कुछ विशेष उदाहरण—

१. भ्वादि गण

धातु	क्रिया	अर्थ
पच	(पच्+ति=पच्+अ+ति=**पचति**	पकाता है
जि	(जि+ति=जे+ति=जे+अ+ति=**जयति**	जीतता है
भू	(भू+ति=भो+ति=भो+अ+ति=**भवति**	होता है
हस्	**हसति**	हँसता है
पठ्	**पठति**	पढ़ता है
रक्ख्	**रक्खति**	रक्षा करता है
वद्	**वदति**	बोलता है
नम्	**नमति**	नमस्कार करता है
गम्	('गच्छ' आदेश) **गच्छति**	जाता है
दिस्	('पस्स' आदेश) **पस्सति**	देखता है
ठा	('तिट्ठ' आदेश) **तिट्ठति**	खड़ा रहता है
सर्	**सरति**	स्मरण करता है
याच्	**याचति**	माँगता है

२. दिवादि गण

धातु	क्रिया	अर्थ
दिव्	(दिव्+ति=दिब्+य+ति=दिब+य+ति =**दिब्बति**	खेलता है
कुध्	(कुध्+ति=कुध्+य+ति=**कुध्यति**	

		=कुभ्भति	
		=कुज्झति)	गुस्सा होता है
नस्		नस्सति	नष्ट होता है
युध्		युज्झति	लड़ाई करता है
रुच्		रुच्चति	अच्छा लगता है
			रुचता है

३. स्वादि गण

धातु		क्रिया	अर्थ
सु		सुणोति	सुनता है
,,		सुणाति	,,
वु	(आ+व्+उणा)	आवुणाति	आवर्ण करता है
प+आप	('उ' आगम)	पापुणोति	प्राप्त करता है
सक्	('कु' आगम)	सक्कुणोति	सकता है

४. तुदादि गण

धातु	क्रिया	अर्थ
तुद्	तुदति	पीड़ा करता है
फुस्	फुसति	छूता है
मुस्	मुसति	चोरी करता है
लिख्	लिखति	लिखता है

५. रुधादि गण

धातु	क्रिया	अर्थ
रुध्	रुन्धति	रोकता है
भुज्	भुञ्जति	खाता है
कत्	कन्तति	काटता है
हिस्	हिंसति	हिंसा करता है

६. तनादि गण

धातु	क्रिया	अर्थ
तन्	तनोति	फैलता है
कर्	करोति	करता है
,,	कयिरति	,,
सक्	सक्कोति	सकता है

७. क्यादि गण

धातु	क्रिया	अर्थ
कि	किणाति	खरीदता है
वि+कि	विक्किणाति	बेचता है
वु	वुणाति	ढकता है
सक	सक्कोति	सकता है
सु	सुणाति	सुनता है

८. चुरादि गण

धातु	क्रिया	अर्थ
चुर्	चीरेति, चोरयति	चुराता है
चिन्त	चिन्तेति, चिन्तयति	विचार करता है
कथ्	कथेति, कथयति	कहता है
पूज्	पूजेति, पूजयति	पूजा करता है

३१—अभ्यास

(क) नीचे दिये जाने वाले धातुओं के वर्तमान काल में प्रथम पुरुष एक वचन और बहुवचन लिखिए।

अट (भू०)=घूमना
भर (भू०)=पालना
बध (रु०)=बाँधना
गा (दि०)=गाना

भिद (रु०)=भेदन करना
गिल (तु०)=निगलना
विद (तु०)=जानना
खी (सु०)=क्षय होना
प+हि (सु०)=भेजना
घा (दि०)=सूँघना
लु (कि०)=काटना
धु (कि०)=काँपना
मन (त०)=जानना
अप (त०)=पहुँचाना

(ख) नीचे दी हुई प्रत्येक क्रिया का गण लिखिए—

सोचति=शोक करता है
सिंचति=सींचता है
नहायति=नहाता है
विसति=घुसता है
थुनाति=प्रशंसा करता है
गण्हाति=लेता है
पुनाति=पवित्र करता है।
जानाति=जानता है।
पापुणाति=पाता है।
आवुणाति=ढँकता है
वनोति=माँगता है
गणेति=गणयति=गिनता है
मोदति=संतुष्ट होता है
मुंचति=छोड़ता है
झायति=ध्यान करता है
सुपति=सोता है
मनोति=जानता है।
पूजेति, पूजयति=पूजा करता है।

पाठ—३२

कर्मकारक क्रिया

जब कर्त्ता कारक में क्रिया से कर्त्ता उक्त होता है तब कर्त्ता 'पठमा' विभक्ति लेता है और कर्म दुतिया विभक्ति।

पहले जितने वाक्य दिये गये हैं वे सब कर्त्ता कारक में ही हैं।

कर्म कारक में क्रिया से कर्म उक्त होता है। इसलिए वहाँ कर्म 'पठमा' विभक्ति लेता है और कर्त्ता ततिया विभक्ति।

उदाहरण—

'दासेन ओदनो पच्चति।'

'दास द्वारा भात पकाया जाता है।'

यहाँ 'दासेन' कर्त्ता है, वह अनुक्त होने के कारण ततिया विभक्ति लेता है। 'ओदनो' कर्म है, वह उक्त होने के कारण 'पठमा' विभक्ति लेता है। 'पच्चति' क्रिया कर्म कारक प्रथम पुरुष एक बचन है। जब कर्म एक बचन होता है तब यह क्रिया भी एक बचन होती है। जब कर्म बहुबचन होता है तब क्रिया भी बहु-बचन होती है। कर्त्ता, चाहे एक बचन में हो या बहुवचन में, क्रिया नहीं बदलती है।

'दासेहि ओदनो पच्चति' भी कह सकते हैं।

वर्तमान काल में कर्मकारक में पच धातु के रूपः—

		एकवचन		बहुवचन	
१.	प० पु०—	(सो ओदनो)	**पच्चति**	(ते ओदना)	**पच्चन्ति**
२.	म० ,,—	(त्वं ओदनो)	**पच्चसि**	(तुम्हे ओदना)	**पच्चथ**
३.	उ० ,,—	(अहं ओदनो)	**पच्चामि**	(मयं ओदना)	**पच्चाम**

यहाँ 'सो ओदनो' आदि कर्मपद हैं। उक्त छः क्रिया पदों के साथ दास द्वारा. दासों द्वारा, तुमसे, मुझसे, हमसे, तुम लोगों से, रसोइयादारों से तथा अन्य किसी भी ततिया विभक्ति का पद कर्त्ता के रूप में प्रयोगकर सकते हैं। यहाँपर क्रिया कर्त्ता का अनुकरण न करके कर्म का एक वचन बहुवचन और पुरुष लेती है।

बहुत से धातुओं के क्रियारूपों के प्रयोग कर्म कारक में यकार के साथ होते हैं।

	एकवचन		बहुवचन	
१,	(चोरेन) (सो)	**पहरीयति**	(चोरेन) (ते)	**पहरीयन्ति**
२.	(चोरेन) (त्वं)	**पहरीयसि**	(चोरेन) (तुम्हे)	पहरायथ
३.	(चोरेन) (अहं)	**पहरीयामि**	(चोरेन) (मयं)	**पहरीयाम***

कर्म कारक क्रिया के कुछ उदाहरण—

क्रिया	अर्थ	क्रिया	अर्थ
करीयति	किया जाता है	**आकड्ढीयति**	खींचा जाता है
देसीयति	उपदेश दिया जातहै	**गण्हीयति**	लिया जाता हे
आहरीयति	लाया जाता है	**बन्धीयति**	बाँधा जाता है
हरीयति	लेजाया जाता है	**कसीय**	(हल) जोताया जाता है

पच्चति आदि स्थलों में भी यकार के प्रयोग से 'पचीयति पचीयन्ति' आदि रूप बन जाते हैं।

---

* अर्थ

	एकवचन		बहुवचन	
१.	(चोर द्वारा वह)	मारा जाता है	(चोर द्वारा वे)	मारे जाते हैं
२.	(चोर द्वारा तू)	मारा जाता है	(चोर द्वारा तुम)	मारे जाते हो
६.	(चोर द्वारा मैं)	मारा जाता हूँ	(चोर द्वारा हम)	मारे जाते हैं

३२—अभ्यास

(क) हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

१. बुद्धेन धम्मो देसीयति। २. वड्ढकीहि गेहो करीयति। ३. वड्ढकिना तस्मिं गामे मनुस्सानं गेहा करीयन्ति। ४. दासेन गोणो आहरीयति। ५. दासियादारूनि आहरीयन्ति। ६. दासेहि हत्थी वापिं हरीयति। ७. हत्थीहि रुक्खा आकड्ढीयति। ८. अस्सेहि रथो आकड्ढीयति। ९. रथा अस्सेहि आकड्ढीयन्ति। १० त्वं चोरेन आकड्ढीयसि। ११ तुम्हे चोरेहिं पहरीयथ। १२. हत्थिनो मनुस्सेहि बन्धीयति। १३. तुम्हे अरीहि बन्धीयिस्सथ। १४. मयं तुम्हेहि आकड्ढीयाम। १५. नारीहि ओदना पच्चयन्ति।

(ख) पालि में अनुवाद कीजिए—

१. बढ़इयों द्वारा घर बनाये जाते हैं। २. दासियों द्वारा जंगल से लकड़ी लायी जाती है। ४. दासों द्वारा हाथियाँ शहर में लाये जाते हैं। ५. हमारे बैल खेत में बाँधे गये हैं। ६. घोड़ा द्वारा गाड़ी खींची जाती है। ७. हाथी द्वारा पेड़ खीचे जाते हैं। ८. दुश्मन द्वारा हम लोग बाँधे जाते हैं। ९. मेरे द्वारा चोर बाँधे गये हैं। १०. हाथी द्वारा पेड़ लाये गये हैं। ११ दुश्मन द्वारा बढ़ई मारा गया है। १२. घोड़े रस्सी से बाँधे जाते हैं। १३. राजा द्वारा चोर को दण्ड दिया जाता है। १४. आदमी द्वारा भात खाया जाता है।

(ग) निम्नलिखित वाक्यों को कर्म कारक बनाइए—

१. वड्ढकी गेहानि करोति। २. अस्सो रथं आकड्ढति। ३. दासा अस्से आहरिंसु। ४. हत्थी रुक्खं गामं हरति। ५. चोरो तुम्हे पहरि। ६. मनुस्सो हत्थिं बन्धति। ७. दासो अस्स आकड्ढति। ८. नारी ओदनं पचिस्सति। ९. कस्सको खेत्तं कसति। १०. चोरा अम्हाकं गोणे बन्धति।

———

पाठ—३३

कर्मकारक कृदन्त

'गत-आगत' आदि कर्तृकारक अतीत कालिक कृदन्त पदों का वर्णन पहले आया है। यहाँ कर्मकारक अतीत कालिक कृदन्त दिये जाते हैं। कृदन्त संज्ञा विशेष ही हैं। इनके रूप तीनों लिङ्गों तथा सभी विभक्तियों में बनते हैं।

भिन्न=	फूटा हुआ	**दट्ठ=**	डँसा हुआ
कत=	किया हुआ	**पूजित=**	पूजा किया हुआ
वुत्त=	कहा हुआ	**वन्दित=**	नमस्कार किया हुआ
पक्क=	पका हुआ	**देसित=**	उपदेश दिया हुआ

३३—अभ्यास

(क) हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

१. एको पुरिसो अहिना दट्ठो कालकतो होति। २. मयं बुद्धेन देसितं धम्मं सुणिम्ह। ३. भगवा देवेहि च मनुस्सेहि च वन्दितो। ४. मयं दासिया पक्कं आहारं भुञ्जाम। ५. पुत्ता मातूहि वुत्तानि वचनानि अनुस्सरन्ति। ६. दासिया घटो भिन्नो (होति) ७. भिन्ना घटा भूमियं सन्ति। ८. वड्ढकिना कतानि गेहानि अरीहि भिन्नानि होन्ति।

(ख) पालि में अनुवाद कीजिए—

१. साँप द्वारा डँसी हुई पुत्री (गत) कल मर गई। २. घरवासी दासी ने घड़ा फोड़ा। ३. आज सुबह हमलोगों द्वारा खाया हुआ भात दासी द्वारा पकाया गया था। ४. मैं उसके द्वारा कही हुई बात याद करता हूँ। ५. मेरे द्वारा बनाई गई कुर्सी चोर ले गये हैं। ६. विहार में गये हुए हमलोगों द्वारा भिक्षु नमस्कार किये गये हैं। ७. हमलोगों द्वारा नमस्कार किये हुए भिक्षु ने उपदेश दिये।

———

पाठ—३४

पञ्चमी विभक्ति के अर्थ में 'तो' प्रत्यय

'पुरिसम्हा' (=पुरुष से) इत्यादि स्थानों में पञ्चमी विभक्ति के अर्थ में 'तो' प्रत्यय होता है ।

पुरिसतो	यतो	नगरतो	अतो
मातितो	ततो	रुक्खतो	कुतो
पितितो	इतो	चोरतो	मञ्ञतो
गेहतो	गामतो	अग्गितो	आदितो

ये "तो"—प्रत्यान्त शब्द लिङ्ग रहित हैं ।

'यतो-ततो-इतो-अतो-कुतो' ये शब्द क्रमशः सर्वनाम से परे 'तो' प्रत्यय से सिद्ध पद हैं ।

३४—अभ्यास

(क) हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

१. मयूरो रुक्खतो ओतरित्वा रवि । २. गोणो गामतो निक्खमित्वा अटविं गतो । ३. नगरतो निक्खन्ता चोरा पब्बतं अगमंसु । ४. पुत्ता मातितो धनं लभिस्सन्ति । ५. यतो मयं वत्थानि किणिम्ह । ततो तुम्हे पि किणाथ । ६. अहं आदितो नगरं गच्छन्तो एकं चेतियं पस्सिं । ७. मिगा अग्गितो भायित्वा पलायिंसु । ८. अम्हाकं मातरो च धीतरो च चोरतो भायन्ति । ९. अटवितो निक्खन्ता व्यग्घा मग्गे अट्ठंसु । १०. तुम्हे कुतो आगता ?

(ख) पालि में अनुवाद कीजिए—

१. दास लोग पेड़ों से फल तोड़ने के लिए गये हैं। २. पुत्री ने माँ से सफेद कपड़ा लेकर पहन लिया है। ३. इस घर में रहे हुए लोग गाँव से बाहर चले गये हैं। ४. शहर से आये हुए बनियों से हमलोगों ने सामान लिये हैं। ५. जहाँ से हमलोगों ने कमल फूल लिये हैं, वहाँ से तुमलोग भी ले आओ। ६. मोर ने साँप को बीच से पकड़ा। ७. आग से डरे हुए जानवर जंगल से बहार चले गये हैं। ८. लड़के ने लड़की से एक माला माँगी। ९. इस रस्सी से कुत्ते को बाँध दो। १०. तुम यहाँ से जाते हो ?

———

पाठ—३५

प्रेरणार्थक क्रिया

प्रेरणार्थक क्रिया वह है जिसमें कोई कर्त्ता किसी दूसरे से काम कराता है। इस हालत में अकर्मक क्रिया सकर्मक हो जाती है और सकर्मक क्रिया में या तो एक कर्म और बढ़ जाता है या कोई शब्द करणकारक में बढ़ जाता है। करणकारक वाले शब्द को प्रयोज्य कर्त्ता कह सकते हैं।

'**करोति**' (=करता है) यह शुद्ध क्रिया पद है। इसकी प्रेरणार्थक क्रिया चार प्रकार की होती हैं, **जैसे—'कारेति—कारयति—कारापेति—कारापयति**'। इन चारों ही का अर्थ है "कराता है"। 'पकवाता है' इस अर्थ में भी चार पद हैं, **जैसे—'पाचेति—पाचयति—पाचापेति—पाचापयति।**' एकवचन, बहुवचन, पठम, मज्झिम तथा उत्तम पुरुषों में रूपमाला बन जाती है।

३५—अभ्यास

(क) हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

१. घरणी दासिं भत्तं पाचापेति। २. सेट्ठि वड्ढकीहि विहारा कारापेसि। ३. माता पुत्तं मञ्चे सयापेस्सति। ४. गुणवा पुत्ते दानं दापेन्ति। ५. सारथी अस्सं रथे योजापेति। ६. पुरिसा कम्मकारे कम्मानि कारापेसुं। ७. कुलवा अत्तनो दासे सीलानि गण्हापेति। ८. भिक्खु सिस्से धम्मं वाचेस्सति। ९, घरणीयो आगन्तुके भत्तं भोजापेसुं। १०. दारको अक्कोसित्वा कञ्ञाय कोधं उप्पादेसि। ११. पापकारिनो दासेहि मिगे मारापेन्ति। १२. गहपति दासिं दारूनि गण्हापेसि।

(ख) पालि में अनुवाद कीजिए—

१. रसोइदार दास से भात पकवाता है। २. धनवान् लोग अपने दासों से दान दिलवाते हैं। ३. गुणवान् लोग अपने पुत्रों से शील ग्रहण कराते हैं। ४. सेठानी दासी से अतिथियों को भोजन करवाती है। ५. सेठ मजदूरों से एक घर बनवाता है। ६. तुम लड़के बुलाओ। ७. अध्यापक लोग छात्रों से उपदेश करवाते हैं। ८. सेठ लोग मजदूरों से काम करवाते हैं। ९. पापी पुत्रों से चिड़िया मरवाता है। १०. अधिपति दासी से लकड़ी तोड़वाता है। ११. राम मोहन से काम करवाता है। १२. कोचवान एक आदमी से घोड़ागाड़ी जोतवाया है।

———

पाठ—३६

समास

जहाँ विभक्तियों का लोप करके दो या अधिक पदों का एक पद कर लिया जाता है, उसे समास कहते हैं।

समासान्त शब्द के पदों को अलग अलग करने का नाम विग्रह है। जैसे—'**बुद्धरूप**' एक शब्द है। यह '**बुद्ध**' और '**रूप**' इन दो शब्दों से बना है। इन दोनों के बीच में कोई विभक्ति नहीं है। '**बुद्धस्स रूपं=बुद्धरूपं**' (बुद्ध का रूप = बुद्धरूप) यह पूरा वाक्य विग्रह है, परन्तु '**स्स**' के छोड़ देने से '**बुद्धरूप**' यह संक्षेप रूप रह गया।

समास के छः भेद होते हैं—

१. कर्मधारय (एकाधिकरण)
२. तत्पुरुष (अमादि)
३. द्वन्द्व
४. बहुव्रीहि (अञ्ञत्थ)
५. द्विगु
६. अव्ययीभाव

(क) कर्मधारय, तत्पुरुष तथा द्वन्द्व

(१) **कर्मधारय**—विशेषण और विशेष्य पदों का जो समास होता है, उसे कर्मधारय समास कहते हैं।

यदि कर्मधारय के दोनों पद स्त्रीलिंगान्त रहते हैं, तो पूर्व स्त्रीलिंगपद को पुंवद्भाव होता हैं। अर्थात् वह पुल्लिङ्ग रूप धारण करता है। जैसे—**खत्तिया कुमारी='खत्तियकुमारी'**। यहाँ '**कुमारी**' यह विशेष्य पद स्त्रीलिंग है और '**खत्तिय**' शब्द त्रिलिंग है। इससिए वह '**कुमारी**' शब्द का विशेषण होकर स्त्रीलिङ्ग होनेपर भी समास में पुल्लिङ्ग रूप लेकर '**खत्तिय कुमारी**' बना है।

उदाहरण

इस समास के भेद	विग्रह वाक्य	समास पद	अर्थ
१—विशेषण पूर्वपद–	नीलञ्च तं उप्पलं	= **नीलुप्पलं**	नील कमल
२—विशेषणोत्तर पद–	बुद्धघोसो च च सो आचरियो च	= **बुद्धघोसाचरियो**	आचार्य बुद्धघोष
३—विशेषणोभयपद–	अन्धो च सो बधिरो च	= **अन्धबधिरो**	अन्धबहिरा (व्यक्ति)
४—उपमानोत्तर पद–	रंसि विय रंसि, सद्धम्मो च सो रंसिच	= **सद्धम्मरंसि**	सद्धर्म-रश्मि
५—संभावना पूर्वपद–	धम्मो इति बुद्धि	= **धम्मबुद्धि**	धर्मबुद्धि
६—अवधारण पूर्वपद–	गुणो एव धनं	= **गुणधनं**	गुण धन
७—'न' निपात पूर्वपद–	न मित्तो	= **अमित्तो**	अमित्र
	न कत्वा	= **अकत्वा**	न करके
८—'कु' पूर्वपद–	कुच्छितो पुरिसो	=**कु-पुरिसो, का-पुरिसो**	निन्दित आदमी
९—'प' आदिपूर्वपद–	पधानं वचनं	=**पावचनं**	पालि साहित्य

(२) तत्पुरुष—पूर्वपद द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी षष्ठी तथा सप्तमी—इनमें से कोई विभक्तियुक्त हो तो उसे तत्पुरुष समास कहते हैं। पूर्वपद जिस विभक्ति में है उसी के अनुसार समास द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी या सप्तमी तत्पुरुष के नाम से जाना जाता है।

उदाहरण

इस समास के भेद	विग्रह-वाक्य	समासपद	अर्थ
१. दुतिया —	गामं गतो	गामगतो	गाँव गया हुआ
२. ततिया —	मनुस्सेन कतं	मनुस्सकतं	मनुष्य द्वारा किया हुआ
करण —	असिना छिन्नो	असिच्छिन्नो	खड्ग से कटा हुआ
३. चतुत्थी —	संघस्स देय्यं	संघदेय्यं	संघ को देने योग्य
४. पञ्चमी—	चोरेहि भयं	चोरभयं	चोर से भय
५. छट्ठी —	रुक्खस्स साखा	रुक्खसाखा	वृक्ष की शाखा
६. सत्तमी —	वनेचरतीति	वनचरो	बन में चरनेवाला

(३) द्वन्द्व—दो या कई पदों के बीच 'च' का लोप करके जो समास बनाया जाता है उसे द्वन्द्व समास कहते हैं। द्वन्द्व समास दो प्रकार के हैं—

१. इतरेतर द्वन्द्व

२. समाहार द्वन्द्व

(१) जब समास में आई हुई दोनों संज्ञाएँ अपना प्रधानत्व और व्यक्तित्व रखती हैं तब उसे इतरेतर द्वन्द्व कहते हैं।

उदाहरण—

देवा च मनुस्सा च=**देवमनुस्सा**
माता च पिता च=**मातापितरो**

(२) जब समास में ऐसी संज्ञाएँ आवें जो 'च' से जुड़ी हुई होने पर अपना अर्थ बतलाती हैं और साथ ही साथ एक समाहार (समूह) का भी बोध कराती हैं, तब वह समाहार द्वन्द्व कहलाता है। यह समास को सदा नपुंसकलिङ्ग एकवचन में ही रहते हैं।

उदाहरण—

मुखं च नासिका च=**मुखनासिकं**
कासि च कोसला च=**कासिकोसलं**

३६ अभ्यास

(क) निम्नलिखित शब्दों के समास बतलाइए—

महापुरिसो। रत्तलता। तरुणब्राह्मणी। पुराणविहारो। धम्मपाल-चरियो। सारिपुत्तत्थेरा सीतुण्हं। कताकतं। मुनिसीहो। मुखचन्दो। असुभसञ्ञा। अत्तदिट्ठि। सद्धाधनं। चक्खुन्द्रियं। अलाभो। अमनुस्सो कुपुत्ता। कुदासा। सुगन्धो।

अरञ्ञगतो। दुक्खप्पत्तो। कुम्भकारो। बुद्धभासितो। राजहतो। सीलसम्पन्नो। संघभत्तं। राजभयं। देवराज। धम्मरुचि कूपमण्डूको।

सारिपुत्तमोग्गल्लाना। चन्दसुरिया। अग्गिधूमं। चक्खुसोतं। कुसलाकुसलं। हंसबका।

(ख) समास कीजिए—

१. ब्राह्मणी च सा दासिका च। २. महाकस्सपो च सो थेरो च ३. नागो विय नागो, बुद्धो च सो नागो च। ४. धम्मो इति सम्मतो। ५. पञ्ञा एव रतनं। न अरियो। ६. न संकिलिट्ठा। ७. पधानं वचनं।

१. सरणंगतो। २. विञ्ञूहि गरहितो। ३. आगन्तुकस्स भत्तं। ४. अग्गितो भयं। ५. फलस्स रसो।

१. सुरा च असुरा च। २. गीतं च वादितं च। ३. दासिच दासो च। ४. अंगा च मगधा च।

(ख) बहुब्रीहि, द्विगु तथा अव्ययीभाव

(४) बहुब्रीहि—जिन पदों का समास होता है, उन पदों का अर्थ बोध न होकर यदि किसी दूसरी वस्तु का अर्थ बोध हो तो उसे बहुब्रीहि समास कहते हैं।

यदि दो स्त्रीलिङ्ग पदों का बहुब्रीहि समास हो तो पूर्वपद बहुधा पुल्लिङ्ग हो जाता है अर्थात् आकार ईकारादि स्त्रीलिंग के चिह्न नहीं रहते।

बहुब्रीहि समास से जो पद बनता है वह बहुधा विशेषण होता है। इसलिए विशेष्य के लिङ्ग विभक्ति और वचन इसके भी होते हैं।

उदाहरण

(१) **कम्म**—आरुल्हो वानरो यं सो=आरुल्हवानरो। **अन्यपद**—रुक्खो (पेड़)

ऐसा पेड़ जहाँ बन्दर चढ़ चुका हो।

(२) **कत्तु**—जितानि इन्द्रियानि येन सो=जितिन्द्रियो। **अन्यपद**—मुनि

जिसने इन्द्रियों को वश में कर लिया हो।

(३) **करण**—छिन्नो रुक्खो येन सो=छिन्नरुक्खो। **अन्यपद**—फरसु (कुल्हाड़ी)

जिससे पेड़ काटा गया हो।

(४) **सम्पदान**—दिन्नं भोजनं यस्स सो = दिन्नभोजनो।
अन्यपद—भिक्खु (भिक्षु)

जिसको भोजन दिया गया हो।

(५) **अपादान**—अपगता सिस्सा यायं सा=अपगतसिस्सा।
अन्यपद—(पाठशाला)

ऐसी पाठशाला जिसमें से शिष्य निकल गये हों।

(६) **सम्बन्ध**—महन्तानि धनानि येसं ते=महद्धना।
अन्यपद—सेट्ठिनो (सेठ लोग)

जिनके पास बहुत धन हो।

(७) **आधार**—बहवो तापसा यस्मिं सो=बहुतापसो।
अन्यपद—अस्समो (आश्रम)

ऐसा आश्रम जिसमें बहुत तापस हों।

(५) **द्विगु**—जिस (कर्मधार) समास में पूर्वपद संख्यावाचक शब्द हो उसे द्विगु कहते हैं!

द्विगु समास के दो भेद हैं—

(१) समाहार द्विगु—जिससे एक ही समास में अनेक वस्तुओं का बोध हो तो उसे समाहार द्विगु कहते हैं। समाहार द्विगु में सामान्यतः एकवचन और नपुंसक लिंग होता है।

उदाहरण—

१. तिन्नं लोकानं समाहारो–तिलोकं। (तीन लोकों का समूह।)

२. तिलक्खणं (त्रिलक्षण)
३. चतुसच्चं (चार सत्य)

४. पञ्चसिक्खापदं (पाँच शिक्षापद)
५. छलायतनं (षडायतन)
६. सत्ताहं (सप्ताह)
७. अट्ठसील (आठशील)

(२) **असमाहार द्विगु**—जिससे समूह का बोध न होकर अलग वस्तुओं या व्यक्तियों का बोध होता है उसे असमाहार द्विगु कहते हैं।

उदाहरण—

१. तयो भवा=तिभवा (तीन जन्म)
२. एकपुग्गलो (असहाय व्यक्ति)
३. चतुद्दिसा (चार दिशायें)
४. सकटसतानि (सैकड़ों बैलगाड़ियाँ)

(६) **अव्ययीभाव**—जब किसी अव्यय के साथ शब्द का समास होता है, उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। अव्ययीभाव समास में बहुधा दो पद रहते हैं—इनमें से प्रथम बहुधा अव्यय रहता है और दूसरा संज्ञा शब्द। दोनों के मिलने से समास बन जाता है। किसी अव्ययीभाव शब्द के रूप नहीं चलते। अन्तिम शब्द का नपुंसक लिङ्ग एक वचन में जो रूप होता है वही रूप अव्ययीभाव समास का हो जाता है, और वही नित्य रहता है।

'**विभक्ति, समीप, अभाग, पश्चात्भाग, योग्य, वीप्सा,** (भिन्न-भिन्न वस्तु एक में मिला कर कहने की इच्छा) **पटिपाटि, परिच्छेद, अन्तरभाग, बाहिर, उर्ध्वभाग, पर्वभाग, सकल भाग** और **अनतिक्रम**—इन तेरह अर्थों में अव्यय के साथ निम्नलिखित समास होते हैं।

अव्यय	उसका अर्थ	विग्रह	समास	अर्थ
अधि	विभक्ति	इत्थीसु अधिकिच्च कथा	अधित्थि	स्त्रियों के विषय में
उप	समीप	नगरस्स समीपं	उपनगरं	शहर के पास
नि	अभाव	मकसानं अभावो	निम्मकसं	मक्खि रहित
अनु	पच्छाभाग	रथस्स पच्छा	अनुरथं	गाड़ी के पीछे
,,	योग्ग	रूपस्स योग्गं	अनुरूपं	रूप के योग्य
,,	वीच्छा	अद्धमासं अद्धमासं	अन्वद्धमास	प्रति अर्ध मास
यथा	पटिपाटि	वुड्ढानं पटिपाटि	यथावुड्ढं	वृद्ध पटिपाटि
याव	परिच्छेद	जीवस्स परिच्छेद	यावजीवं	जीवन भर
अन्तो	अन्तोभाग	नगरस्स अन्तो	अन्तोनगर	नगर के भीतर
बहि	बाहि	नगरस्स बहि	बहिनगरं	नगर के बाहर
उपरि	उद्धभाग	पासादस्स उपरि	उपरिपासादं	प्राशाद के ऊपर
पुरे	पुब्बभाग	भत्तस्सपुरे	पुरेभत्तं	खाने के पहले
सह	सकलभाग	सह मक्खिकाय	समक्खिकं	मक्खियों के साथ
यथा	अनतिक्कम्म	सत्तिमन तिक्कम्म	यथासत्ति	यथाशक्ति

३६—(आ) अभ्यास

निम्नलिखित शब्दों के समास बतलाए—

बहुधनो। लम्बकण्णो। वजिरपाणि। मत्तबहुमातङ्ग। सपुत्तो। पतितपण्णो।

द्विरत्तं। तिदण्डं। नवलोकुत्तरं। सतयोजनं। एकपुत्तो चतुद्दिसा।

अभिक्खं। उपकुम्भं। नित्तिणं। अनुरथं। अनुगगा। उपरिसिखरं। पटिसोतं। मज्झेगगं हेट्ठापासादं। अन्तोपासादं।

(ख) समास कीजिए—

१. अभिरुल्हा वाणिजा यस्सा। २. विजिता मारा येन सो। ३. दिन्नो सुंको यस्स सो। ४. निग्गता जना यस्सा सो। ५. छिन्ना हत्था यस्स सो। ६. सम्पन्नानि सस्सानि यस्मिं सो।

१. तीणि मलामि समाहटानि। २. तिण्णं मलानं समाहारो वा। ३. पञ्चगावो समाहटा। ४. एकच सो धम्मो च। ५. तयोभवा।

१. रथस्स पच्छा। २. सोतस्स पटिलोमं। ३. अत्तानं अधिकिच्चं पवत्तं। ४. गंगाय समीपे वत्ततीति। ५. मञ्चस्स हेट्ठा। ६. भत्तस्स पच्छा।

---

१. सुंक=कर।

पाठ—३७

कुछ द्रष्टव्य संख्या और क्रिया

शब्द		अर्थ	शब्द		अर्थ
अज्झयन	(न०)	अध्ययन	कुत्र	(नि०)	कहाँ
अधोतसत्थो		अधीनशास्त्र	चारुभावं		सुन्दरता
अस्सम	(पु०)	आश्रम	झान	(न०)	ध्यान
अस्सा		इससे	धनव्वय		धन का व्यय
अधिच्छ	(पु०)	निर्लोभी	पञ्जलिक	(पु०)	अञ्जलीबद्ध
कठल	(न०)	कंकड़	परिपतित	(न)	गिरा हुआ
कङ्कणद्वयं		दो कंरानं	पाणम्हा		प्राण से
मुञ्चित	(पु०)	मुक्त	रतनालङ्कत	(न०)	रत्नसज्जित
सिला	(इ०)	पत्थर	बहवो		बहुत-

क्रिया	धातु	अर्थ	क्रिया	धातु	अर्थ
अज्झरोय	अधि + इ	अध्ययनकिया	पातयि	पात	गिरा दिया
ओरुय्ह	अव + रूह	उतरकर	कारापेत्वा	कर	कराके
पक्खिपि	प + खिप	फेंका	विनेति	वि + ती	शिक्षित करता है।
पच्चागमि	पति + गमु	वापस गया	करोति	कर	करता है।

अभ्यास

(क) हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

अयं अस्समो अतिरमणीया; इमस्मिं एको इसि झानं करोति। इमस्स सन्ति के वहवो सिस्सा अज्झयनं करोन्ति। सो सिस्से विनेति अप्पिच्छो[१] यं इसि; नास्स धने आसा वत्तते। महग्घानि रतनानि अपि कठलानि विय पस्सति। अतो सिस्सेहि दीयमानं गरु दक्खिणं अपि न पटिगण्हाति।

एकदा एको राजकुमारो अस्मा सत्थमज्झायि । अधीतसत्थो सो गरु दक्खिणाय तोसयितुं इच्छन्तो महता धनव्वयेन रतना—लङ्कतं कङ्कणद्वयं कारापेत्वा इसिनो समीपमगमि ।

इसि सायं गङ्गातीरे सिलायं निसीदि । राजकुमारो तमुपसंकमित्वा कङ्कणद्वयं तस्स दत्वा पञ्जलिको अट्ठासि । इसि तेसं द्विन्नं कङ्कणानं चारुभावमवलोकयन्तो विय तमपस्सि । अथ तेसं द्विन्नमेकं इत्थम्हा परिपतितं विय गङ्गायं पातयि । राजकुमारो पाणम्हा मुच्चितो विय अहोसि ।

राजकुमारो नदिं ओरुय्ह तं गण्हिस्सामीति चिन्तेत्वा इसिं तमपुच्छि । 'कुत्र तं पतितं, इति । इसिपि व्याकुलो विय हुत्वा 'अत्र तं पतितं, इति दस्सयन्तो दुतियं कङ्कणं नदियं पक्खिपि । राजकुमारो लज्जितो पच्चागमि ।

२—समासपदों को दिखाकर उनके नाम लिखिए ।

३—सन्धिपदों को दिखाकर उनके विच्छेद कीजिए ।

६ - कृदन्त पद, निपात, पूर्ण क्रिया तथा पूर्व-क्रियाओं को अलग-अलग दिखलाइए ।

———

पाठ—३८

विभक्तियों के भेद

१. पठमा विभक्ति

(१) कर्तृवाच्य के कर्ता में तथा (२) केवल अर्थ प्रकट करने में पठमा विभक्ति होती है। जैसे—

अस्सो धावति=घोड़ा दौड़ता है।

राजा। भिक्खा। कुलानि।

आलपन—संबोधन के अर्थ में आलपन विभक्ति होती है। 'आलपन' में भी 'पठमा' विभक्ति होती है। जैसे—

हे भाता! रे धुत्ता! जे काली! अरे दास!

२. दुतिया विभक्ति

नीचे दिये जानेवाले अर्थों में दुतिया विभक्ति होती है।

कर्तृवाच्य के कर्म में—सूदो ओदनं पचति।

क्रिया, गुण तथा द्रव्य के लगातार होने से समय तथा दूरी वाचक शब्दों में—

समय में—ब्राह्मणो मासं पठति=ब्राह्मण महीना भर (लगातार) पढ़ता है।

दूरी में—वाणिजो कोसं गच्छति=बनिया कोसभर जाता है।

'धि' (='धिक्कार), **'अन्तरा'** (=बीच), **'पति'** (=प्रति), तथा **'विना'** शब्दों के योग में—जैसे—

'धि'—धि अलसं सिस्सं=आलसी शिष्य को धिक्कार है।

'अन्तरा'—अन्तरा च राजगहं अन्तरा च नालन्दं=राजगृह और नालन्दा के बीच।

'पति'—लोका पसन्ना बुद्धं पति=लोग बुद्ध के प्रति बड़ी श्रद्धा रखते हैं।

'विना'—न सिज्झति धम्मो विरियं विना=बिना वीर्य के धर्म सफल नहीं होता।

३. तितिया विभक्ति

भाववाच्य तथा कर्म-वाच्य के कर्त्ता में, करण कारक में तथा क्रिया विशेषण में—

भाववाच्य में—पुरिसेन गम्मति=पुरुष के द्वारा चला जाता है।

कर्म-वाच्य के कर्त्ता में—बालकेन चन्दो दिस्सति=बालक के द्वारा चाँद देखा जाता है।

करण कारक में—दण्डेन सप्पं पहरति=लाठी से साँप मारता है।

क्रिया विशेष्य में—गोत्तेन गोतमो=गोत्र से गौतम हैं।

साथ होने के अर्थ में—पुत्तेहि सह आगच्छति पिता। पुत्तेहि सद्धिं आगच्छति पिता। पुत्तेहि समं आगच्छति पिता= पुत्रों के साथ पिता आता है।

'किं' योग में—किं ते जटाहि=तुम्हारी जटाओं से क्या है?

'तुल्य' के अर्थ में—आचरियेन सदिसो सिस्सो=आचार्य के सदृश ही शिस्य है।

लक्षण के अर्थ में—अक्खिना काणो=आँख से काना।

हेतु के अर्थ में—धम्मेन यसो वड्ढति=धर्म से यश बढ़ता है। विना योग में—जलेन विना रुक्खो सुक्खति=जल के विना पेड़ सूखता है।

४. चतुत्थो विभक्ति

सम्प्रदान में—याचकस्स भिक्खं ददाति=भिखमंगे को भीख देता है।

तादर्थ ('उसके लिए') में—लोकहिताय बुद्धो धम्मं देसेति =लोक के हित के लिए बुद्ध धर्म का उपदेश करते हैं।

'तुं' प्रत्यय के अर्थ में—लोकानुकम्पाय धम्मं देसेति=लोक पर दया करके धर्म का उपदेश देता है।

५. पञ्चमी विभक्ति

अवधि के अर्थ में—गामस्मा गच्छति=गाँव से जाता है।

ऋण के हेतु में—सतस्मा बद्धो=सौ रुपये ऋण से बँधा है।

'पति' शब्द के योग में—बुद्धस्मा पति सारिपुत्तो=सारिपुत्र बुद्ध के प्रतिनिधि हैं। घतं तेलस्मा पति ददाति=तेल लेकर घी देता है।

'विना' के योग में—जलस्मा विना रुक्खो सुक्खति= जल के विना पेड़ सूखता है।

'अञ्ञत्र' के योग में—तथागतस्मा अञ्ञत्र को अञ्ञो लोकनायको=तथागत को छोड़, दूसरा कौन लोग-गुरु है?

६. छट्ठी विभक्ति

सम्बन्ध में—रञ्ञो पुत्तो=राजा का पुत्र।

कृदन्त शब्दों के साथ में—साधु सम्मतो बहुजनस्स= बहुत लोगों का मान्य।

जाति, गुण तथा क्रिया से, जहाँ बहुतों में से एक का धारण किया जाय, वहाँ छट्ठी विभक्ति होती है और सत्तमी भी।

'जाति'—नरानं, नरेसु वा खत्तियो सेट्ठो=मनुष्यों में क्षत्रिय श्रेष्ठ हैं।

गुण—कण्हा गावीनं, गावीसु वा सम्पन्नखीरतमा=काली गौवों में अधिक दूध देनेवाली होती हैं।

क्रिया—पथिकानं, पथिकेसु वा धावं सीघतमो=पथिकों में दौड़नेवाला शीघ्र है

तृतीया के अर्थ में—पुप्फस्स बुद्धं पूजेति=फूल से बुद्ध की पूजा करता है।

हेत्वर्थ में— उदरस्स हेतु, उदरस्स कारणा=पेट के हेतु।

७. सत्तमी विभक्ति

क्रिया के आधार में—पब्बते तिट्ठति=पहाड़ पर रहता है।

निमित्त के अर्थ में—दन्तेसु कुञ्जर हञ्ञति=दांतों के निमित्त से हाथी को मारता है।

कालार्थ में—पुब्बण्हसमये गतो=पूर्वाह्न में गया।

जहाँ एक काम के होनेपर दूसरे काम का होना जाना जाता है, वहाँ—

आचरिये आगते सिस्सा उट्ठहन्ति=आचार्य के आनेपर शिष्य खड़े हो जाते हैं।

अधिक होने के अर्थ में, 'उप' शब्द के योग में—उपखारियं दोणो=खारि (एक पुराना तौल का माप) से अधिक दोण है।

स्वामी होने के अर्थ में, 'अधि' शब्द के योग में—अधि पञ्चालेसु ब्रह्मदत्तो=पाञ्चाल देश पर ब्रह्मदत्त का आधिपत्य है।

सम्प्रदान के स्थान में—संघे देति=संघ को देता है।

३८—अभ्यास

(क) हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

१. सरदं रमणीया नदी। २. योजनं दीघो पब्बतो। ३. कोसं कुटिला नदी। ४. धम्मं विना नत्थि पिता च माता। ५. सुमेधो नाम नामेन। ६. द्विदोणेन धञ्ञं किणाति। ७. मातरा समो धीता।

८. सो इध अन्नेन वसति। ९. ब्राह्मणानं भोजनं ददाति। १०. सूदो पाकाय भोजनघरं गच्छति। ११. चोरस्मा भायति। १२. उपज्झाया सिक्खं गण्हाति। १३. उच्छुतो सिगाले रक्खन्ति खेत्ते। १४. उपज्झाया निलीयति सिस्सो। १५. मनुस्सानं खत्तियो सूरतरो। १६. ब्राह्मणेसु देवदत्तो पण्डितो। १७. कुम्भे ओदनं पचति। १८. अजिनम्हि मिगं हञ्ञति। १९. संघेसु भोजियमानेसु गतो। २०. उपनिक्खे कहापणं। २१. अधि ब्रह्मदत्ते पञ्चाला। २२. अधि देवेसु बुद्धो।

(ख) पालि में अनुवाद कीजिए—

१. बालक महीना भर (लगातार) पढ़ता है। २. गाँव दिन भर सूना रहता है। ३. कोस भर पहाड़ ही पहाड़ है। ४. पर्वत की ओर आग जलती है। ५. पैर से लंगड़ा ६. श्रमण को चीवर देता है। ७. चोर से बचाता है। २. दानों में धर्मदान श्रेष्ठ है। ९. आकाश में पक्षी विचरते हैं। १०. तिल में तेल है।

सरल-पालि-शिक्षा

डा० धीरेन्द्र वर्मा पुस्तक-संग्रह

लेखकः

पण्डित भिक्षु सङ्घतिस्स

(पालि- अध्यापक, महाबोधि हायर सेकेण्डरी स्कूल,
सारनाथ, बनारस। भूतपूर्व उपप्रधान अध्यापक,
विक्रमशिला विद्यापीठ, लंका)

प्रकाशकः

महाबोधि सभा, सारनाथ,

बनारस